मोक्षमाळा.

बालावबोध शिक्षापाठ.

शुद्धि पत्रक.

१. बाहुबळनी वातमां बार वर्षने बदले बार मास जोइए.

२. सत्यताना आखा पाठमां नारदने स्थळे पर्वत अने पर्वतने स्थळे नारद एम जोइए.

३. एज पाठनी १७मी लीटीमां पिता शब्द छे तेने बदले पुत्र जोइए.

४. ७८मा पृष्ठनी पहेली लीटीमां राजकुमारने बदले गजसुकुमार जोइए.

५. ९१मा पाठमां "तुं जे वात कहे छे" एम छे तेने बदले "तमे जे वात कहोछो" एम जोइए.

आ दोष दर्शाववा जेवा होवाथी दर्शाव्यां जउं छउं ते शुद्ध करी लेशो, बीजा कोइ द्रष्टिदोष हशे ते हवे तो द्वितियावृत्तिमां सुधरी शकशे.

राज्यचंद्रप्रणित.

मोक्षमाळा.

अंतर्गत.

सिंधुबिंदुरूप.

बालावबोधशिक्षापाठ.

जेणे आत्माने जाण्यो तेणे सर्व जाण्युं.

(निर्ग्रंथप्रवचन.)

प्रथमावृत्ति १००० प्रत.

अमदावाद.

युनाइटेड प्रिंटींग ए. ज० एजन्सी कं० लिमिटेड
ना प्रेसमां रणछोडलाल गंगारामे छापी.

संवत १९४४—सने १८८८.

अर्पणपत्र.

पूण्य प्रभावक सुज्ञ धर्मानुरागी भाइ श्री

नेमचंदभाइ वरसनजी.

(मांगरोळ निवासी)

मुंबाइ.

आ पुस्तक प्रसिद्ध कराववामां आपनी पुरेपुरी आकांक्षा हती. तेम ए माटे आपे पुरतुं उत्तेजन पण आप्युंछे. जिनेश्वर भगवाननां प्रणित करेलां तत्वपर आपनो बहु अनुरागछे, धर्म अने धर्मस्नेहियोनी उन्नति जोवानी आपनी बहु अभिलाषा छे. उदारतानो आपनो गुण स्तुतिपात्रछे. आ ग्रंथ प्रसिद्धकर्त्ताने माटे आपे उपकारबुद्धि दर्शावी छे;तेमज मध्यस्थबुद्धिथी सत्य वस्तु ग्रहण करवानी इच्छा राखो छो. जैनज्ञानशाळा स्थापवा मुंबइखाते आपनुं प्रयोजन चालु छे. इ० इ० सुंदर कारणोथी प्रसिद्धकर्त्ताए आ ग्रंथ आपने बहु मानपूर्वक अर्पण कर्योछे.

शिक्षणपद्धति अने मुखमुद्रा.

आ एक स्याद्वादतत्वावबोध वृक्षनुं बीज छे. आ ग्रंथ तत्व पामवानी जिज्ञासा उत्पन्न करी शके; एवुं एमां कंइ अंशे पण दैवत रह्युं छे. ए सम्भावथी कहुं छउं.

पाठक अने वांचक वर्गने मुख्य भलामण ए छे के शिक्षापाठ पाठे करवा करतां जेम बने तेम मनन करवा; तेनां तात्पर्य अनुभववा. जेमनी समजणमां न आवता होय तेमणे ज्ञाता शिक्षक के मुनियोथी समजवा, अने ए योगवाइ न होय तो पांच सात वखत ते पाठो वांची जवा. एक पाठ वांची गया पछी अर्धघडी ते पर विचार करी अंतःकरणने पूछवुं के शुं तात्पर्य मळ्युं ? ते तात्पर्यमांथी हेय ज्ञेय अने उपादेय शुं छे? एम करवाथी आखो ग्रंथ समजी शकाशे. हृदय कोमळ थशे; विचार शक्ति खीलशे; अने जैन तत्वपर रुडी श्रद्धा थशे. आ ग्रंथ कंइ पठन करवारुप नथी; पण मनन करवारुप छे अर्थरुप केळवणी एमां योजी छे. ते योजना बालावबोध रुप छे. विवेचन अने प्रज्ञावबोध भाग भिन्न छे.आ एमांनो एक ककडो छे; छतां सामान्य तत्वरुप छे.

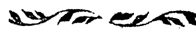
स्वभाषा संबंधी जेने सारुं ज्ञान छे; अने नवतत्व तेमज सामान्य प्रकरण ग्रंथो जे समजी शके छे; तेवाओने आ ग्रंथ विशेष बोधदायक थशे. आटली तो अवश्य भलामण छे के नाना बाळकने आ शिक्षापाठोनुं तात्पर्य समजणरुपे सविधि आपवुं.

ज्ञानशाळाना विद्यार्थियोने शिक्षापाठ मुखपाठे कराववा. ने वारंवार समजाववा, जे जे ग्रंथोनी ए माटे सहाय लेवी घटे ते लेवी. एक बे वार पुस्तक पूर्ण शीखी रह्या पछी अवळेथी चलाववुं.

आ पुस्तक भणी हुं धारुं छउं के सुज्ञवर्ग कटाक्ष द्रष्टिथी नहीं जोशे. बहु उंडा उतरता आ मोक्षमाळा मोक्षनां कारणरुप थइ पडशे ! मध्यस्थताथी एमां तत्वज्ञान अने शील बोधवानो उद्देश छे.

आ पुस्तक प्रसिद्ध करवानो मुख्य हेतु उछरता बाळयुवानो अविवेकी विद्या पामी आत्मसिद्धिथी भ्रष्ट थाय छे ते भ्रष्टता अटकाववानो पण छे.

मनमानतुं उत्तेजन नहीं होवाथी लोकोनी भावना केवी थशे ए विचार्या वगर आ साहस कर्युं छे पण हुं धारुं छउं के ते फळदायक थशे शाळामां पाठकोने भेट दाखल आपवा उमंगी थवा अने अवश्य जैनशाळामां उपयोग करवा मारी भलामण छे; तोज पारमार्थिक हेतु पार पडशे.



आश्रय पत्र.

आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां मोटामां मोटो आश्रय तो शेठ नेमचंद वरसनजीनो छे; परंतु एथी प्रथम अने प्रबळ आश्रय एक सुज्ञ बाइए पण आप्यो छे; तेथी तेओनो उपकार भूली जवो उचित नथी. ए बाइ ते मो-

रबीना मुलक मशहुर मरहुम मंत्रि कीरतचंद वखतचंदनां पत्नि अने राजकोट निवासी शा. ओधवजी खीमजीनां पुत्री छे. ए बाइना स्वर्गवासी पुत्र घेलाभाइ स्मरणार्थे एक उत्तम ग्रंथ प्रसिद्धमां मूकाववानो एमनो हेतु हशे;अने शोधविशोधथी ए संबंधी आ पुस्तक प्रसिद्ध कर्त्ताने कर्युं; ते साथे सहर्ष सारो आश्रय आप्यो. आवां शुभ काममां एओनो उत्तम प्रयास थाय ए बहु वखाणवा लायकछे. बाइ वर्गमां ए डहापण आ देशमां ओछुंज छे. मरहुम कीरतचंद वखतचंद १९२० मां परलोक प्राप्त थया. एओ जैन धर्मना उत्साही अने एक प्रकारना भाविक हता. एओए मोरबीनां प्रधानपदमां नामांकितता मेळवीछे. एमना स्वर्गवासथी बाइना मनमां शोक घोळाया करतो हतो अने ते ज्यां केवळ विसारे पड्यो नहोतो त्यां बीजो शोक उभो थयो; एटले के एमना प्रियपुत्र घेलाभाइनो स्वर्गवास थयो. एथी शोक केवो उत्पन्न थाय ते वात प्रत्यक्ष अनुभवनी छे. तोपण बाइए संसारनो अनित्यभाव, काळनी गहनगति अने भावि प्रबळ मानीने धीरज धरी. हृदयमां एक प्रकारनो पूण्यभाव उत्पन्न कर्यो. अने अनाथने उपकार कर्त्ता थाय एवुं सातहजार रुपिया खर्चि सदाव्रत्त बांध्युं. जेनी योजना सारी होवाथी बहु काळ सुधीं चालशे. जिनेश्वर भगवंत प्रणित मार्गनी वृद्धिने माटे ४५० रु० खर्चि महान् भगवति सूत्र अहींना स्थानकमां आपवा योजना करी. संवत्सरीना पारणानो खर्च सो.एक रु। नो प्रतिवर्षे थायछे. ते हमेशने माटे चालु रहे

एवी योजना पण एओए करीछे.पालणपुर इत्यादिक स्थळे जतां तेओए सारी उदारता करीछे. एम यथाशक्ति उत्तम काम तेओए कर्यां छे. ए द्रष्टिए जोतां तेओए पोता तरफनो उंच प्रकारनो धर्म एक बजाव्यो छे. प्रसिद्धकर्त्ता कृतज्ञभाव मानीने आश्रयपत्र पूर्ण करतां विज्ञप्ति करे छे के शक्तिमान पुरुषो शासनना प्रकाश करो. वखत नहीं चूको. जैन तत्व दर्शावे एवा ग्रंथो प्रसिद्ध करो. आवां उत्तम काममां आ बाइए पगलुं भर्युं छे तेथी तेमने शाबाशी घटेछे. विशेष लखवानुं प्रयोजनपण शुं ? मोरबी सुरत, अमदावाद, लीमडी, मुंबइ, भावनगर, मांडवी, राजकोट, जेतपुर. वांकानेर वगेरे स्थळेथी मळेला आश्रय माटे उपकार मानुं छउं.—

प्रसिद्धकर्त्ता.



कोइ स्थळे अक्षर, मात्रा के अनुस्वरादिकनो दोष थयो होय तो क्षमा याची ते शुद्ध करी लेवा भलामण करुं छउं. नीचेना शब्दोनी अवश्य शुद्धि करशो.

पृष्ट.	ओळ.	दोषित शब्द.	शुद्धि.
१२४	११	ग्रहस्थाश्रमे.	०
१२४	१३	सामान्य.	गृहस्थाश्रमे सामान्य.
१२५	१३	मांगीये	करवामांगीए

मोक्षमाळाना प्रसिद्ध कर्त्ता ववाणीआ वंदर ए शीरनामे लखवाथी आ पुस्तक मळशे.



मोक्षमाळा.

शिक्षापाठ १ वांचनारने भलामण.

वांचनार! हुं आजे तमारा हस्तकमळमां आवुं छउं, मने यत्ना पूर्वक वांचजो, मारां कहेलां तत्वने हृदयमां धारण करजो, हुं जेजे वात कहुं ते ते विवेकथी विचारजो; एम करशो तो तमे ज्ञान, ध्यान, नीति, विवेक, सद्गुण अने आत्मशांति पामी शकशो.

तमे जाणता हशो के केटलांक अज्ञान मनुष्यो नहीं वांचवा योग्य पुस्तको वांचीने पोतानो वखत खोइ देछे अने अवळे रस्ते चढी जाय छे. आ लोकमां अपकीर्त्ति पामे छे, तेमज परलोकमां नीच गतिए जाय छे.

तमे जे पुस्तको भण्या छो, अने हजु भणो छो ते पुस्तको मात्र संसारनां छे; परंतु आ पुस्तक तो भव परभव बन्नेमां तमारुं हित करशे. भगवाननां कहेलां वचनोनो एमां थोडो उपदेश कर्यो छे.

तमे कोइ प्रकारे आ पुस्तकनी अशातना करशो नहीं; तेने फाडशो नहीं, डाघ पाडशो नहीं के बीजी कोइ पण रीते बिगाडशो नहीं. विवेकथी सघळुं काम लेजो. विचक्षण पुरुषोए कह्युं छे के विवेक ए ज धर्म छे.

तमने एक ए पण भलामण ए छे के जेओने वांचतां नहीं आवडतुं होय अने तेनी इच्छा होय तो आ पुस्तक अनुक्रमे तेने वांची संभळाववुं.

तमे जे वातनी गम पामो नहीं ते डाह्या पुरुष पासेथी समजी लेजो. समजवामां आळस के मनमां शंका करशो नहीं.

तमारा आत्मानुं आथी हित थाय, तमने ज्ञान, शांति अने आनंद मळे; तमे परोपकारी, दयाळु, क्षमावान, विवेकी अने बुद्धिशाळी थाओ एवी शुभ याचना अर्हत भगवन् कने करी आ पाठ पूर्ण करूं छउं.



शिक्षापाठ २ सर्वमान्यधर्म.

चोपाइ.

धर्मतत्व जो पूछयुं मने,
तो संभळावुं स्नेहे तने;
जे सिद्धांत सकळनो सार,
सर्व मान्य सहुने हितकार. १

भाख्युं भाषणमां भगवान,
धर्म न बीजो दया समान;
अभयदान साथे संतोष,
द्यो प्राणीने, दळवा दोष. २

सत्य शीळने सघळां दान,
दया होइने रह्यां प्रमाण;
दया नहीं तो ए नहि एक,
विना सूर्य कीरण नहिं देख. ३

पुष्पपांखडी ज्यां दूभाय,
जिनवरनी त्यां नहि आज्ञाय;
सर्व जीवनुं इच्छो सूख,
महावीरनी शिक्षा मूख्य. ४

सर्व दर्शने ए उपदेश,
ए एकांते-नहीं विशेष;
सर्व प्रकारे जिननो बोध,
दया दया निर्मळ अविरोध! ५

ए भवतारक सुंदर राह,
धरिये-तरिये करि उत्साह;
धर्म सकळनुं ए शुभ मूळ,
ए वण धर्म सदा प्रतिकूळ. ६

तत्त्वरूपथी ए ओळखे,
ते जन पहोंचे शाश्वत सुखे;
शांतिनाथ भगवान प्रसिद्ध,
राज्यचंद्र करुणाए सिद्ध. ७



शिक्षापाठ ३, कर्मना चमत्कार.

हुं तमने केटलीक सामान्य विचित्रताओ कही जउं छउं; ए उपर विचार करशो तो तमने परभवनी श्रद्धा द्रढ थशे.

एक जीव सुंदर पलंगे पुष्पशय्यामां शयन करे छे, एकने फाटल गोदडी पण मळती नथी, एक भात भातनां भोजनोथी तृप्त रहे छे; एकने काळी जारनां पण सांशा पडे छे. एक अगणित लक्ष्मीना उपभोग ले छे; एक फुटी बदाम माटे थइने घेर घेर भटके छे; एक मधुरां वचनथी मनुष्यनां मन हरे छे, एक अवाचक जेवो थइने रहे छे. एक सुंदर वस्त्रालंकारथी विभूषित थइ फरे छे, एकने खरा शियाळामां फाटेलुं कपडुं पण ओढवाने मळतुं नथी. एक रोगी छे; एक प्रबळ छे. एक बुद्धिशाळी छे, एक जडभरत छे. एक मनोहर नयनवाळो छे, एक अंध छे. एक लूलो छे, एक पांगळो छे. एक कीर्तिमान छे एक अपयश भोगवे छे. एक लाखो अनुचरो पर हुकम चलावे छे, एक तेटलानाज टुंबा सहन करे छे. एकने जोइने आनंद उपजे छे, एकने जोतां वमन थाय छे. एक संपूर्ण इंद्रियो वाळो छे, एक अपूर्ण छे. एकने दिन दुनियांनुं लेश भान नथी, एकनां दुःखनो किनारो पण नथी.

एक गर्भाधानथी हरायो, एक जन्म्यो के मुओ, एक मुएलो अवतर्यो. एक सो वर्षनो वृद्ध थइने मरे छे.

कोइनां मुख, भाषा अने स्थिति सरखां नथी. मूर्ख राज्यगादी पर खमा खमाथी वधावाय छे, समर्थ विद्वानो धक्का खाय छे!

आम आखा जगत्‌नी विचित्रता भिन्न भिन्न प्रकारे तमे जुओ छो; ए उपरथी तमने कंइ विचार आवे छे? में कह्युं छे छतां विचार आवतो होय तो कहो ते शा वडे थाय छे?

पोतानां बांधेलां शुभाशुभ कर्मवडे. कर्म वडे आखो संसार भमवो पडे छे. परभव नहीं माननार पोते ए विचार शा वडे करे छे? ए विचारे तो आपणी आ वात ए पण मान्य राखे.



शिक्षापाठ ४, मानवदेह.

तमे सांभळ्युं तो हशे के विद्वानो मानवदेहने बीजा सघळा देह करतां उत्तम कहे छे; पण उत्तम कहेवानुं कारण तमारा जाणवामां नहीं होय माटे ल्यो हुं कहुं.

आ संसार बहु दुःखथी भरेलो छे एमांथी ज्ञानीयो तरीने पार पामवा प्रयोजन करे छे. मोक्षने साधी तेओ अनंत सुखमां विराजमान थाय छे. ए मोक्ष बीजा कोइ देहथी मळनार नथी. देव, तिर्यंच के नर्क ए एके गतिथी मोक्ष नथी, मात्र मानवदेहथी मोक्ष छे.

त्यारे तमे पूछशो के सघळां मानवियोनो मोक्ष केम

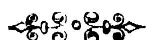
थतो नथी ? एनो उत्तर पण हुं कही दउं. जेओ मानवपणुं संमजे छे, तेओ संसार शोकने तरी जायछे. मानवपणुं विद्वानो एने कहेछे के जेनामां विवेकबुद्धि उदय पामी होय. ते वडे सत्यासत्यनो निर्णय समजीने परम तत्व, उत्तम आचार अने सत धर्मनुं सेवन करीने तेओ अनुपम मोक्षने पामे छे. मनुष्यनां शरीरना देखाव उपरथी विद्वानो तेने मनुष्य कहेता नथी; परंतु तेना विवेकने लइने कहे छे. बे हाथ, बे पग, बे आंख, बे कान, एक मुख, बे होठ अने एक नाक ए जेने होय तेने मनुष्य कहेवुं एम आपणे समजवुं नहीं; जो एम समजीए तो पछी वांदराने पण मनुष्य गणवो जोइए, एणे पण ए प्रमाणे सघळुं प्राप्त कर्युं छे. विशेषमां एक पूंछडुं पण छे; त्यारे शुं एने महा मनुष्य कहेवो ? नहीं—मानवपणुं समजे तेज मानव केहवाय.

ज्ञानीओ कहेछे के ए भव बहु दुर्लभ छे; अति पून्यना प्रभावथी ए देह सांपडे छे; माटे एथी उतावळ आत्मसार्थक करी लेवुं. अयमंतकुमार, गजसुकुमार जेवा नानां बाळको पण मानवपणाने समजवाथी मोक्षने पाम्या. मनुष्यमां जे शक्ति वधारे छे ते शक्तिवडे करीने मदोन्मत्त हाथी जेवां प्राणीने पण वश करी लेछे; एज शक्तिवडे जो तेओ पोतानां मनरुपी हाथीने वश करी ले तो केटलुं कल्याण थाय !

कोइ पण अन्य देहमां सद् विवेकनो उदय थतो नथी

अने मोक्षना राजमार्गमां प्रवेश थइ शकतो नथी. एथी आपणने मळेलो ए बहु दुर्लभ मानवदेह सफळ करी लेवो अवश्यनो छे. केटलाक मूर्खो दुराचारमां, अज्ञानमां, विषयमां, अने अनेक प्रकारना मदमां मळेलो मानवदेह वृथा गुमावे छे. अमूल्य कौस्तुभ हारी बेसेछे. ए नामना मानव गणाय, बाकीतो वानररूपजछे.

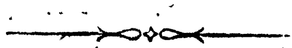
मोतनी पळ निश्चय आपणे जाणी शकता नथी,माटे जेम बने तेम धर्ममां त्वराथी सावधान थवुं.



शिक्षापाठ ५ अनाथी मुनि भाग. १

अनेक प्रकारनी रीद्धिवाळो मगधदेशनो श्रेणिक नामे राजा अश्वक्रिडाने माटे मंडिकूक्ष ए नामनां वनमां नीकळी पड्यो, वननी विचित्रता मनोहारिणी हती. नाना प्रकारनां वृक्षो त्यां आवी रह्यां हतां, नाना प्रकारनी कोमळ वेलीओ घटाटोप थइ रही हती; नाना प्रकारनां पंखीओ आनंदथी तेनुं सेवन करतां हतां; नाना प्रकारनां पक्षियोनां मधुरां गायन त्यां संभळातां हतां; नाना प्रकारनां फूलथी ते वन छवाइ रह्युं हतुं; नाना प्रकारनां जळनां झरण त्यां वहेतां हतां; टुंकामां ए वन नंदनवन जेवुं लागतुं हतुं.ते वनमां एक झाड तळे महा समाधिवंतपण सुकुमार अने सुखोचित मुनिने ते श्रेणिके बेठलो दीठो. एनु रूप जोइने ते राजा अत्यंत आनंद पाम्यो. उपमारहित रूपथी विस्मय थइने मनमां तेनी प्रशंसा करवा लाग्यो.

आ मुनिनो केवो अद्भुत वर्णछे! एनुं केवुं मनोहर रूप छे! एनी केवी अद्भूत सौम्यता छे! आ केवी विस्मयकारक क्षमानो धरनार छे! आना अंगथी वैराग्यनो केवो उत्तम प्रकाश छे! आनी केवी निर्लोभता जणाय छे! आ संयति केवुं निर्भय नम्रपणुं धरावे छे! ए भोगथी केवो विरक्त छे! एम चिंतवतो चिंतवतो—मुदित थतो थतो—स्तुति करतो करतो— धिमेथी चालतो चालतो प्रदक्षिणा देइने ते मुनिने वंदन करीने अति समीप नहीं तेम अति दूर नहीं एम ते श्रेणिक बेठो, पछी बे हाथनी अंजळी करीने विनयथी तेणे ते मुनिने पूछयुं के हे आर्य! तमे प्रशंसा करवा योग्य एवा तरुण छो, भोगविलासने माटे तमारी वय अनुकूळ छे. संसारमां नाना प्रकारनां सुख रह्यांछे; ऋतु ऋतुना कामभोग, जळ संबंधीना विलास तेमज मनोहारिणी स्त्रिओनां मुखवचननुं मधुरुं श्रवण छतां ए सघळानो त्याग करीने मुनित्वमां तमे महा उद्यम करोछो एनुं शुं कारण? ते मने अनुग्रहथी कहो. राजानां आवां वचन सांभळीने मुनिए कह्युं हे राजा हुं अनाथ हतो. मने अपूर्व वस्तुनो प्राप्त करावनार, तथा योगक्षेमनो करनार, मारापर अनुकंपा आणनार, करुणाथी करीने परम सुखनो देनार एवो मारो कोइ मित्र थयो नहीं. ए कारण मारां अनाथीपणानुं हतुं.



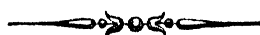
शिक्षापाठ ६. अनाथी मुनि भाग २.

श्रेणिक मुनिनां भाषणथी स्मित हसीने बोल्यो; तमारे महा रीद्धिवंतने नाथ केम न होय ? जो कोइ नाथ नथी तो हुं थउं छउं. हे भयंताण ! तमे भोग भोगवो. हे संयति ! मित्र, ज्ञातिए करीने दुर्लभ छे एवो तमारो मनुष्यभव सुलभ करो ! अनाथीए कह्युं, अरे श्रेणिक— राजा ! पण तुं पोते अनाथ छो तो मारो नाथ शुं थइश ? निर्धन ते धनाढ्य क्यांथी बनावे ? अबुध ते बुद्धिदान क्यांथी आपे ? अज्ञ ते विद्वता क्यांथी दे ? वंध्याते संतान क्यांथी आपे ? ज्यारे तुं पोते अनाथ छे; त्यारे मारो नाथ क्यांथी थइश ? मुनिनां वचनथी राजा अति आकुळ अने अति विस्मय थयो. कोइ काळे जे वचननुं श्रवण थयुं नथी ते वचननुं यति मुखथी श्रवण थयुं एथी ते शंकित थयो; अने बोल्यो हुं अनेक प्रकारना अश्वनो भोगी छउं अनेकप्रकारना मदोन्मत्त हाथीओनो धणी छउं; अनेक प्रकारनी सैन्या मने आधिन छे, नगर, ग्राम अंतःपुर अने चतुष्पादनी मारे कंइ न्यूनता नथी; मनुष्य संबंधी सघळा प्रकारना भोग हुं पाम्यो छउं; अनुचरो मारी आज्ञाने रुडी रीते आराधे छे; पांचे प्रकारनी संपत्ति मारे घेरछे; अनेक मनवांछित वस्तुओ मारी समीपे रहेछे. आवो हुं महान् छतां अनाथ केम होउं ? रखे हे भगवन् ! तमे मृषा बोलता हो. मुनिए कह्युं राजा ! मारु कहेवुं तुं न्यायपूर्वक समज्यो नथी. हवे हुं जेम अनाथ थयो; अने जेम

में संसार त्याग्यो तेम तने कहुं छउं; ते एकाग्र अने सावधान चित्तथी सांभळ; सांभळीने पछी तारी शंकानो सत्यासत्य निर्णय करजे.

कोसंबी नामे अति जीर्ण अने विविध प्रकारनी भव्यताथी भरेली एक सुंदर नगरी छे; त्यां रीद्धिथी परिपूर्ण धनसंचय नामनो मारो पिता रहेतो हतो, हे महाराजा! योवन वयना प्रथम भागमां मारी आंखो अति वेदनाथी घेराइ; आखे शरीरे अग्नि बळवा मंडी. शस्त्रथी पण अतिशय तिक्ष्ण ते रोग वैरीनी पेठे मारापर कोपायमान थयो मारुं मस्तक ते आंखनी असह्यवेदनाथी दुःखवा लाग्युं. वज्रना प्रहार सरीखी, बीजाने पण रौद्रभय उपजावनारी एवी ते दारुण वेदनाथी हुं, अत्यंत शोकमां हतो. संख्याबंध वैद्य शास्त्रनिपूण वैद्यराज मारी ते वेदनानो नाश करवाने माटे आव्या, अनेक औषध उपचार कर्या पण ते वृथा गया. ए महा निपूण गणाता वैद्यराजो मने ते दरदथी मुक्त करी शक्या नहीं; एज हे राजा! मारुं अनाथपणुं हतुं. मारी आंखनी वेदना टाळवाने माटे मारा पिताए सर्व धन आपवा मांडयुं; पण तेथी करीने मारी ते वेदना टळी नहीं हे राजा! एज मारुं अनाथपणुं हतुं. मारी माता पुत्रने शोके करीने अति दुःखार्त्त थइ; परंतु ते पण मने दरदथी मूकावी शकी नहीं, एज हे राजा! मारुं अनाथपणुं हतुं. एक पेटथी जन्मेला मारा ज्येष्ठ अने कनिष्ट भाइओ पोताथी बनतो परिश्रम करी चूक्या पण मारी ते वेदना टळी नही हे राजा! एज मारुं अनाथ

पणुं हतुं. एक पेटथी जन्मेली मारी ज्येष्टा अने कनिष्ठा भगिनीओथी मारुं ते दुःख टळ्युं नहीं, हे महाराजा ! ए ज मारुं अनाथपणुं हतुं. मारी स्त्रि जे पतिव्रत्ता, मारापर अनुरक्त अने प्रेमवंती हती ते आंसु भरी मारुं हैयुं पलाळती हती, तेणे अन्न,पाणी अने नानाप्रकारनां अंघोलण, चुवादिक सुगंधि पदार्थ,तेमज अनेक प्रकारनां फूल चंदनादिकनां जाणिता अजाणिता विलेपन कर्यां छतां हुं ते विलेपनथी मारो रोग समावी न शक्यो. क्षण पण अळगी रहेती नहोती; एवी ते स्त्रि पण मारा रोगने टाळी न शकी एज हे महाराजा! मारुं अनाथपणुं हतुं. एम कोइना प्रेमथी, कोइनां औषधथी, कोइना विलापथी के कोइना परिश्रमथी ए रोग उपशम्यो नहीं. ए वेळा पुनः पुनः में असह्य वेदना भोगवी; पछी हुं प्रपंची संसारथी खेद पाम्यो. एकवार जो आ महा विडंबनामय वेदनाथी मुक्त थउं तो खंती, दंती अने निरारंभी प्रवज्र्याने धारण करुं एम चिंतवीने शयन करी गयो. ज्यारे रात्रि अतिक्रमी गइ, त्यारे हे महाराजा ! मारी ते वेदना क्षय थइ गइ; अने हुं निरोगी थयो. मात,तात स्वजन बंधवादिकने पूछीने प्रभाते में महा क्षमावंत—इंद्रिने निग्रह करवीवाळुं, आरंभोपाधिथी रहीत एवुं अणगारत्व धारण कर्युं.



शिक्षापाठ ७ अनाथी मुनि भाग ३

हे श्रेणिक राजा! त्यारे पछी हुं आत्मा परात्मानो नाथ थयो. हवे हुं सर्व प्रकारना जीवनो नाथ छउं. तुं जे शंका पाम्यो हतो ते हवे टळी गइ हशे. एम आखुं जगत्—चक्रवर्त्ति पर्यंत अशरण अने अनाथ छे. ज्यां उपाधि छे त्यां अनाथता छे; माटे हुं कहुछउं ते कथन तुं मनन करी जजे. निश्चय मानजे के आपणो आत्माज दुःखनी भरेली वेतरणीनो करनार छे; आपणो आत्माज क्रुर साल्मली वृक्षनां दुःखनो उपजावनार छे. आपणो आत्माज वंछित वस्तुरूपी दूधनी देवावाळी कामधेनु गायनां सुखनो उपजावनार छे: आपणो आत्माज नंदनवननी पेठे आनंदकारी छे; आपणो आत्माज कर्मनो करनार छे; आपणो आत्माज ते कर्मनो टाळनार छे. आपणो आत्माज दुःखोपार्जन करनार छे. आपणो आत्माज मित्र ने आपणो आत्माज वैरी छे. आपणो आत्मा कनिष्ट आचारे स्थित अने आपणो आत्माज निर्मळ आचारे स्थित रहे छे. एम आत्मप्रकाशक बोध श्रेणिकने ते अनाथी मुनिए आप्यो. श्रेणिकराजा बहु संतोष पाम्यो. बे हाथनी अंजली करीने ते एम बोल्यो के हे भगवन्! तमे मने भली रीते उपदेश्यो; तमे जेम हतुं तेम अनाथपणुं कही बताव्युं. महर्षि! तमे सनाथ, तमे सबंधव अने तमे सधर्म छो. तमे सर्व अनाथना नाथ छो. हे पवित्र संयाति! हुं तमने क्षमावुंछुं. तमारी ज्ञानी शिक्षाथी लाभ पाम्यो छुं. ध-

ध्यानमां विघ्न करवावाळुं भोग भोगववा संबंधीनुं में तमने हे महा भाग्यवंत ! जे आमंत्रण दीधुं ते संबंधीनो मारो अपराध मस्तक नमावीने क्षमावुंछुं. एवा प्रकारथी स्तुति उच्चारीने राजपुरुष केशरी श्रेणिक विनयथी प्रदिक्षणा करी स्वस्थानके गयो.

महा तपोधन, महा मुनि, महा प्रज्ञावंत, महायशवंत महा निग्रंथ अने महा श्रुत अनाथी मुनिए मगध देशना श्रेणिक राजाने पोतानां वितक चरित्रथी जे बोध आप्यो छे, ते खरे ! अशरणभावना सिद्ध करे छे. महा मुनि अनाथीए भोगवेली वेदना जेवी के एथी अति विशेष वेदना अनंत आत्माओने भोगवता जोइए छीए. ए केवुं विचारवा लायक छे! संसारमां अशरणता अने अनंत अनाथता छवाइ रही छे,तेनो त्याग उत्तम तत्वज्ञान अने परम शीलने सेववाथीज थाय छे. एज मुक्तिनां कारण रूप छे. जेम संसारमां रह्या अनाथी अनाथ हता; तेम प्रत्येक आत्मा तत्वज्ञाननी प्राप्ति विना सदैव अनाथज छे ! सनाथ थवा सत्‌देव, सत्‌धर्म अने सत्‌गुरुने जाणवा अवश्यनां छे.

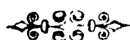
शिक्षापाठ ८ सत्‌देवतत्व.

त्रण तत्व आपणे अवश्य जाणवां जोइए. ज्यां सुधी ते तत्व संबंधी अज्ञानता होय छे त्यां सुधी आत्महित न-

थी. ए त्रण तत्व. ते सत्देव, सत्धर्म, सत्गुरु छे.--आपाठमां सत्देवस्वरूप विषे कंइक कहुं छउं.

जेओने कैवल्यज्ञान अने कैवल्यदर्शन प्राप्त थाय छे. कर्मना समुदाय महोग्रतपोपध्यानवडे विशोधन करीने जेओ बाळी नांखे छे. जेओए चंद्र अने शंखथी उज्वळ एवुं शुक्ल ध्यान प्राप्त कर्युं छे. चक्रवर्त्ति--राधाधिराज के राजपुत्र छतां जेओ संसारने एकांत अनंत शोकनुं कारण मानीने तेनो त्याग करेछे. केवळ दया, शांति, क्षमा, निरागीत्व अने आत्मसमृद्धिथी त्रिविध तापनो लय करे छे. संसारमां मुख्यना भोगवतां ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहिनी अने अंतराय ए चार कर्म भस्मिभूत करी जेओ स्वस्वरूपथी विहार करे छे. सर्व कर्मनां मूळने जेओ बाळी नांखे छे. केवळ मोहिनी जनित कर्मनो त्याग करी निद्रा जेवी तिव्र वस्तु एकांत टाळी जेओ पातळां पडेलां कर्म रह्या सुधी उत्तम शीलनुं सेवन करे छे. विराग्यताथी कर्मग्रीष्मथी अकळाता पामर प्राणीओने परम शांति मळवा जेओ शुद्ध बोध बीजनो मेघधारा वाणीथी उपदेश करे छे. कोइ पण समये किंचित् मात्र पण संसारी वैभवविलासनो स्वप्नांश पण जेने रह्यो नथी. कर्म दळ क्षय कर्या प्रथम श्रीमुखवाणीथी जेओ छद्मस्थता गणी उपदेश करता नथी. पांच प्रकारनी अंतराय, हास्य, रति, अरति, भय, जुगुप्सा, शोक, मिथ्यात्व, अज्ञान, अप्रत्ख्यान, राग, द्वेष, निद्रा अने काम ए अढार दूषणथी

रहित, सत्चिदानंद स्वरुपथी विराजमान, अने महा उद्योतकर बार गुण जेओमां प्रगटे छे. जन्म, मरण अने अनंत संसार जेनो गयो छे. ते सत्देव निर्ग्रंथ आगममां कह्या छे. ए दोष रहित शुद्ध आत्म स्वरुपने पामेला होवाथी पूजनिय परमेश्वर कहेवाय छे. अढार दोषमांनो एक पण दोष होय त्यां सत्देवनुं स्वरुप नथी. आ परम तत्व उत्तम सूत्रोथी विशेष जाणवुं अवश्यनुं छे.



शिक्षापाठ ९ सत्धर्मतत्व.

अनादि काळथी कर्मजाळनां बंधनथी आ आत्मा संसारमां रझळ्या करेछे. समय मात्र पण तेने खरुं सुख नथी. अधोगतिने ए सेव्या करेछे; अने अधोगतिमां पडतां आत्माने धरी राखनार जे वस्तु तेनुं नाम धर्म कहेवाय छे. ए धर्मतत्वना सर्वज्ञ भगवाने भिन्न भिन्न भेद कह्याछे. तेमांनां मुख्य बे छे १ व्यवहारधर्म २ निश्चयधर्म.

व्यवहारधर्ममां दया मुख्य छे. चार महाव्रत्तो तेपण दयानी रक्षा वास्ते छे. दयाना आठ भेदछे. १ द्रव्यदया २ भावदया ३ स्वदया ४ परदया ५ स्वरुपदया ६ अनुबंधदया ७ व्यवहारदया, ८ निश्चयदया.

१ प्रथम द्रव्यदया—कोइ पण काम करवुं तेमां यत्नापूर्वक जीवरक्षा करीने करवुं ते द्रव्यदया.

२ बीजी भावदया—बीजा जीवने दुर्गति जतो देखीने अनुकंपाबुद्धथी उपदेश आपवो ते भावदया.

३ त्रीजी स्वदया—आ आत्मा अनादिकाळथी मिथ्यात्वथी गृह्रायोछे, तत्व पामतो नथी, जिनाज्ञा पाळी शकतो नथी. एम चिंतवी धर्ममां प्रवेश करवो ते स्वदया.

४ चोथी परदया--छकाय जीवनी रक्षा करवी ते परदया.

५ स्वरूप दया--सूक्ष्म विवेकथी स्वरूप विचारणा ते स्वरुप दया.

६ छट्ठी अनुबंधदया—गुरु के शिक्षक शिष्यने कडवां कथनथी उपदेश आपे ए देखवामां तो अयोग्य लागेछे; परंतु परिणाम करूणानुं कारणछे—एनुं नाम अनुबंधदया.

७ सातमी व्यवहारदया—उपयोग पूर्वक अने विधि पूर्वक जे दया पाळवी तेनुं नाम व्यवहारदया.

८ आठमी निश्चयदया—शुद्ध साध्य उपयोगमां एकता भाव, अने अभेद उपयोग ते निश्चयदया.

ए आठ प्रकारनी दयावडे करीने व्यवहारधर्म भगवाने कह्यो छे. एमां सर्व जीवनुं सुख, संतोष, अभयदान ए सघळुं विचार पूर्वक जोतां आवी जायछे.

बीजो निश्चयधर्म—पोतानां स्वरूपनी भ्रमना टाळवी आत्माने आत्मभावे ओळखवो. आ संसार ते मारो नथी ए वगेरे निश्चयधर्मनुं स्वरुपछे.

जेमां कोइ प्राणीनुं दुःख, अहित के असंतोष रह्योछे त्यां दया नथी; अने दया नथी त्यां धर्म नथी. अर्हत भगवाननां कहेलां धर्मतत्वथी सर्व प्राणी अभय थायछे.

शिक्षापाठ १० सत्‌गुरुतत्व.

पिता—पुत्र! तुं जे शाळामां अभ्यास करवा जायछे ते शाळानो शिक्षक कोणछे?

पुत्र—पिताजी, एक विद्वान अने समजु ब्राह्मणछे.

पिता—तेनी वाणी, चालचलगत वगेरे केवुंछे?

पुत्र—एनां वचन बहु मधुरां छे. ए कोईने अविवेकथी बोलावता नथी अने बहु गंभिर छे, बोलेछे त्यारे जाणे मुखमाथी फुल झरेछे. कोईनुं अपमान करता नथी; अने अमने समजणथी शिक्षा आपे छे.

पिता—तुं त्यां शा कारणे जाय छे ते मने कहे जोईए.

पुत्र—आप एम केम कहोछो पिताजी? संसारमां विचक्षण थवाने माटे युक्तियो समजुं, व्यवहारनी नीति शीखुं एटला माटे थइने आप मने त्यां मोकलोछो.

पिता—तारा ए शिक्षक दुराचरणी के एवा होत तो?

पुत्र—तो तो बहु माठुं थात; अमने अविवेक अने कुवचन बोलतां आवडत; व्यवहार नीति तो पछी शीखवे पण कोण!

पिता—जो पुत्र, ए उपरथी हुं हवे तने एक उत्तम शिक्षा कहुं. जेम संसारमां पडवा माटे व्यवहारनीति शीखवानुं प्रयोजन छे. तेम धर्मतत्व अने धर्मनीतिमां प्रवेश करवानुं परभवने माटे प्रयोजन छे. जेम ते व्यवहारनीति सदाचारी शिक्षकथी उत्तम मळी शके छे; तेम परभव श्रेयस्कर धर्मनीति उत्तम गुरुथी मळी शकेछे. व्यवहारनीति

ना शिक्षक अने धर्मनीतिना शिक्षकमां बहु भेद छे. एक बीलोरीनो कडको तेम व्यवहार शिक्षक अने अमूल्य कौस्तुभ जेम आत्मधर्म शिक्षक छे.

पुत्र—शीरछत्र! आपनुं कहेवुं व्याजबी छे. धर्मना संपूर्ण अवश्य छे. आपे वारंवार संसारनां अनंत दुःख संबंधी मने कह्युं छे; एथी पार पामवा धर्मज सहायभूत छे; त्यारे धर्म केवा गुरुथी पामिये तो श्रेयस्कर नीवडे ते मने कृपा करीने कहो.

शिक्षापाठ ११ सद्गुरुतत्व भाग २.

पिता—पुत्र! गुरु त्रण प्रकारना कहेवाय छे. १ काष्टस्वरुप. २ कागळस्वरुप. ३ पथ्थरस्वरुप काष्टस्वरुप गुरु सर्वोत्तमछे; कारण ससाररूपी समुद्रने काष्टस्वरुपी गुरुज तरेछे—अने तारी शकेछे. २ कागळस्वरुप गुरु ए मध्यम छे. ते संसारसमूद्रने पोते तरी शके नहीं; परंतु कंइ पून्य उपार्जन करी शके. ए बीजाने तारी शके नहीं. ३ पथ्थरस्वरुप ते पोते बुडे अने परने पण बुडाडे. काष्टस्वरुप गुरु मात्र जिनेश्वर भगवंतना सासनमां छे. बाकी बे प्रकारना जे गुरु रह्या ते कर्मावरणने वृद्धि करनार छे. आपणे बधा उत्तम वस्तुने चाहिए छीए; अने उत्तमथी उत्तम मळी शके छे. गुरु जो उत्तम होय तो ते भवसमुद्रमां नाविकरुप थइ सर्द्धमनावमां बेसारी पार पमाडे.

तत्वज्ञानना भेद, स्वस्वरुपभेद, लोकालोकविचार, संसारस्वरुप ए सघळुं उत्तम गुरु विना मळी शके नहीं; त्यारे तने प्रश्न करवानी इच्छा थशे के एवा गुरुनां लक्षण कयां कयां ते हुं कहुंछुं. जिनेश्वर भगवाननी भाखेली आज्ञा तेने यथातथ्य पाळे, जाणे, अने बीजाने बोधे, कंचन कामिनिथी सर्व भावथी त्यागी होय, विशुद्ध अहारजळ लेता होय, बाविश प्रकारना परिसह सहन करता होय, क्षांत, दांत, निरारंभि अने जितेंद्रिय होय, सिद्धांतिक ज्ञानमां निमग्न होय, धर्म माटे थइने मात्र शरीरनो निर्वाह करता होय, निर्ग्रंथ पंथ पाळतां कायर न होय, सळी मात्र पण अदत्त लेता न होय, सर्व प्रकारना अहार रात्रिये त्याग्यां होय, समभावि होय, अने निरागताथी सत्योपदेशक होय टुंकामां तेओने काष्ट स्वरुप सत् गुरु जाणवा. पुत्र ! गुरुना आचार, ज्ञान ए सम्बंधी आगममां बहु विवेक पूर्वक वर्णन कर्युं छे. जेम तुं आगळ विचार करतां शीखतो जइश, तेम पछी हुं तने ए विशेष तत्वो बोधतो जइश.

पुत्र—पिताजी, आपे मने टुंकामां पण बहु उपयोगी अने कल्याणमय कह्युं; हुं निरंतर ते मनन करतो रहीश.

शिक्षापाठ १२ उत्तम गृहस्थ.

संसारमां रह्या छतां पण उत्तम श्रावको गृहाश्रमथी आत्मसाधनने साधेछे; तेओनो गृहाश्रम पण वखणायछे.

ते उत्तम पुरुष, सामायक, क्षमापना चोविहार इ० यम नियमने सेवे छे.

पर पत्नि भणी मातु बहेननी दृष्टि राखे छे.

यथाशक्ति सत्पात्रे दान दे छे.

शांत, मधुरी अने कोमळ भाषा बोले छे.

सत्शास्त्रनुं मनन करे छे.

बने त्यां सुधी उपजीविकामां पण माया, कपट, इ० करतो नथी.

स्त्रि, पुत्र, मात, तात, मुनि अने गुरुए सघळांने यथायोग्य सन्मान आपे छे.

माबापने धर्मनो बोध आपे छे.

यत्नाथी घरनी स्वच्छता, रांधवुं, सींधवुं शयन इ० रखावे छे.

पोते विचक्षणताथी वर्त्ति स्त्रि, पुत्रने विनयि अने धर्मि करे छे.

सघळां कुटुंबमां संपनी वृद्धि करे छे

आवेला अतिथिनुं यथायोग्य सन्मान करे छे.

याचकने क्षुधातुर राखतो नथी,

सत्पुरुषोनो समागम अने तेओनो बोध धारण करे छे.

समर्याद, अने संतोष युक्त निरंतर वर्त्ते छे.

यथाशक्ति शास्त्रसंचय जेनां घरमां रह्यो छे, अल्प आरंभथी जे व्यवहार चलावे छे.

आवो गृहस्थावास उत्तम गतिनुं कारण ज्ञानीओ कहे छे.



शिक्षापाठ १३ जिनेश्वरनी भक्ति भाग १.

जिज्ञासु--विचक्षण सत्य! कोइ शंकरनी, कोइ ब्रह्मानी कोई विश्नुनी, कोई सूर्यनी, कोई अग्निनी, कोई भवानीनी, कोई पेगम्बरनी अने कोई इसुख्रास्तनी भक्ति करेछे. एओ भक्ति करीने शुं आशा राखता हशे.?

सत्य--प्रिय जिज्ञासु, ते भाविक मोक्ष मेळववानी परम आशाथी ए देवोने भजेछे.

जिज्ञासु--कहो त्यारे, एथी तेओ उत्तम गति पामे एम तमारुं मत छे.

सत्य--एओनी भक्तिवडे तेओ मोक्ष पामे एम हुं कही शकतो नथी. जेओने ते परमेश्वर कहेछे तेओ कंई मोक्षने पाम्या नथी; तो पछी उपाश्यकने ए मोक्ष क्यांथी आपे! शंकर वगेरे कर्मक्षय करी शक्या नथी अने दूषणसहीत छे. एथी ते पूजवा योग्य नथी.

जिज्ञासु--ए दूषणो कयां कयां ते कहो?

सत्य--अज्ञान, काम, हास्य, रति, अरति वगेरे मळीने अढार दूषणमांनुं एक दूषण होय तोपण ते अपूज्य छे. एक समर्थ पंडिते पण कह्युं छे के परमेश्वर छउं एम मिथ्या रीते मनावनारा पुरुषो पाते पोताने ठगेछे कारण, पडखामां स्त्रि होवाथी तेओ विषयी ठरेछे; शस्त्र धा-

रण करेलां होवाथी द्वेषी ठरेछे. जपमाळा धारण कर्याथी तेओनुं चित्त व्यग्र छे एम सूचवे छे. मारे शरणे आव हुं सर्व पाप हरी लेउं एम कहेनारा अभिमानी अने नास्तिक ठरेछे. आम छे तो पछी बीजाने तेओ केम तारी शके ? वळी केटलाक अवतार लेवारुपे परमेश्वर कहेवरावे छे तो त्यां अमुक कर्मनुं प्रयोजन ते पर सिद्ध थाय छे.

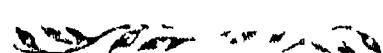
जिज्ञासु—भाइ, त्यारे पूज्य कोण ? अने भक्ति कोनी करवी के जेवडे आत्मा स्वशक्तिनो प्रकाश करे.

सत्य—शुद्ध सच्चिदानंदस्वरुप अनंत सिद्धनी,भक्तिथी तेमज सर्व दूषणरहित, कर्ममलहीन,मुक्त,निरागी,सकळभय रहित,सर्वज्ञ सर्वदर्शी जिनेश्वर भगवननी भक्तिथी आत्मशक्ति प्रकाश पामे छे.

जिज्ञासु--एओनी भक्ति करवाथी आपणने तेओ मोक्ष आपे छे एम मानवुं खरुं.

सत्य—भाइ जिज्ञासु—ते अनंतज्ञानी निरागी अने निर्विकार छे. एने स्तुति निंदानुं आपणने कंइ फळ आपवानुं प्रयोजन नथी आपणो आत्मा जे कर्मदळथी घेरायलोछे तेमज अज्ञानी अने मोहांध थएलो छे. ते टाळवा अनुपम पुरुषार्थनी अवश्य छे. सर्व कर्मदळ क्षय करी अनंत जीवन, अनंतवीर्य,अनंतज्ञान अने अनंत दर्शनथी स्वस्वरुपमय थया एवा जिनश्वरानुं स्वरुप—आत्मानी निश्चयनये रीद्धि होवाथी ए पुरुषार्थता आपे छे. विकारथी विरक्त करेछे. शांति अने निर्जरा आपेछे. तरवार हाथमां

लेवाथी जेम शौर्य अने भांगथी निशो उत्पन्न थाय छे. तेम ए गुण चिंतवनथी आत्मा स्वस्वरूपानंदनी श्रेणीए चढतो जायछे. दर्पण हाथमां लेतां जेम मुखाकृतिनुं भान थाय छे तेम सिद्ध के जिनेश्वरस्वरूपनां चिंतवनरूप दर्पणथी आत्मस्वरूपनुं भान थाय छे.



शिक्षापाठ १४ जिनेश्वरनी भक्तिभाग२.

जिज्ञासु—आर्य सत्य! सिद्धस्वरूप पामेला ते जिनेश्वरो तो सघळा पूज्य छे; त्यारे नामथी भक्ति करवानी कंइ जरूर छे?

सत्य—हा अवश्यछे. अनंत सिद्धस्वरूपने ध्याता जे शुद्ध स्वरूपना विचार थाय ते तो कार्य परंतु ए जे जंवडे ते स्वरूपने पाम्या ते कारण कयुं? ए विचारतां उग्रतप, महानवैराग्य, अनंतदया, महानध्यान ए सघळांनुं स्मरण थशे; एओनां अर्हंत तिर्थंकर पदमां जे नामथी तेओ विहार करता हता ते नामथी तेओना पवित्र आचार अने पवित्र चरित्रो अंतःकरणमां उदय पामशे. जे उदय परिणामे महा लाभदायक छे. जेम महावीरनुं पवित्र नाम स्मरण करवाथी तेओ कोण? क्यारे? केवा प्रकारे सिद्धि पाम्या ए चरित्रोनी स्मृति थशे.अने एथी आपणे वैराग्य, विवेक इत्यादिकनो उदय पामीए.

जिज्ञासु—पण लोगस्समां तो चोवीश जिनेश्वरनां नाम सूचवन कर्यांछे? एनो हेतु शुं छे ते मने समजावो.?

सत्य—आ काळमां आ क्षेत्रमां जे चोवीश जिनेश्वरो थया एमनां नामनुं स्मरण, चरित्रोनं स्मरण करवाथी शुद्ध तत्वनो लाभ थाय. ए एमनो हेतु छे. वैरागिनुं चरित्र वैराग्य बोधे छे. अनंत चोवीशीनां अनंत नाम सिद्ध स्वरूपमां समग्रे आवी जायछे. वर्त्तमानकाळना चोवीश तिर्थंकरनां नाम आ काळे लेवाथी काळनी स्थितिनं बहु सूक्ष्मज्ञान पण सांभरी आवेछे. जेम एओनां नाम आ काळमां लेवायछे. तेम चोवीशी चोवीशीनां नाम काळ फरतां अने चोवीशी फरतां लेवातां जायछे. एटले अमुक नाम लेवां एम कंइ निश्चय नथी. परंतु तेआना गुण अने पुरुषार्थ स्मृतिमाटे वर्त्तेनां चोवीशीनी स्मृति करवी एम तत्व रह्युं छे तेओना जन्म, विहार उपदेश ए सघळुं नाम निक्षेपे जाणी शकायछे. एवडे आपणो आत्मा प्रकाश पामेछे. सर्प जेम मोरलीना नादथी जागृत थायछे; तेम आत्मा पोतानी सत्य रिद्धि सांभळतां मोहनिद्राथी जागृत थायछे.

जिज्ञासु—मने तमे जिनेश्वरनी भक्ति संबंधी बहु उत्तम कारण कह्युं. आधुनिक केळवणीथी जिनेश्वरनी भक्ति कंइ फळदायक नथी एम मने आस्था थइ हती. ते नाश पामीछे. जिनेश्वर भगवाननी अवस्य भक्ति करवी जोइए ए हुं मान्य राखुं छउं.

सत्य—जिनेश्वर भगवाननी भक्तिथी अनुपम लाभ छे, एनां कारण महान छे; एना उपकारथी एनी भक्ति

अवश्य करवी जोइए, एओनां पुरुषार्थनुं स्मरण थाय एथी कल्याण थायछे; वगेरे वगेरे में मात्र सामान्य कारणो यथामति कह्यां छे; ते अन्य भाविकोने पण सुख-दायक थाओ !

शिक्षापाठ १५ भक्तिनो उपदेश.

तोटकछंद.

शुभ शीतळतामय छांय रही,
मनवांछित ज्यां फळपंक्ति कही;
जिन भक्ति ग्रहो तरु कल्प अहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो. १

निज आत्मस्वरूप मुदा प्रगटे,
मन ताप उताप तमाम मटे;
अति निर्जरता वण दाम ग्रहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो. २

समभावि सदा परिणाम थशे,
जडमंद अधोगति जन्म जशे;
शुभ मंगळ आ परिपूर्ण चहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो. ३

शुभ भाववडे मन शुद्ध करो,
नवकार महा पदने समरो;
नहि एह समान न अन्य कहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो. ४

करशो क्षय केवळ राग कथा,
धरशो शुभ तत्वस्वरूप यथा;
नृपचंद्र प्रपच अनंत दहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो. ५

शिक्षापाठ १६ खरी महत्ता.

केटलाक लक्ष्मीथी करीने महत्ता मळे छे एम माने छे; केटलाक महान कुटंबथी महत्ता मळे छे एम माने छे; केटलाक पुत्रवड करीने महत्ता मळे छे एम माने छे; केटलाक अधिकारथी महत्ता मळे छे एम माने छे. पण ए एमनुं मानवुं विवेकथी जोतां मिथ्या छे. एओ जेमां महत्ता ठरावे छे तेमां महत्ता नथी, पण लघुता छे, लक्ष्मीथी संसारमां खानपान मान, अनुचरोपर आज्ञा वैभव ए सघळुं मळे छे अने ए महत्ता छे. एम तमे मानता हशो, पण एटलेथी एने महत्ता मानवी जोइती नथी. लक्ष्मी अनेक पाप वडे करीने पेदा थाय छे. आव्या पछी अभिमान, बेभानता; अने मूढता आपे छे. कुटंबसमुदायनी महत्ता मेळववा माटे तेनु पालण पोषण करवुं पडेछे. ते वडे पाप अने दुःख सहन करवां पडे छे. आपणे उपाधिथी पाप करी एनुं उदर भरवुं पडे छे. पुत्रथी करीने कंइ शाश्वत नाम रहेतुं नथी; एने माटे थइने पण अनेक प्रकारनां पाप अने उपाधि वेठवी पडे छे; छतां एथी आपणुं मंगळ शुं थाय छे? अधिकारथी परतंत्रता के अ-

मलमद अने एथी जुलम, अनीति, लांच तेमज अन्याय करवा पडे छे.—के थाय छे; कहो त्यारे एमांथी महत्ता शानी थाय छे! मात्र पापजन्य कर्मनी पापी कमवडे करी आत्मानी नीच गति थाय छे; नीच गति छे त्यां महत्ता नथी पण लघुता छे.

आत्मानी महत्ता तो सत्यवचन, दया, क्षमा, परोपकार अने समतामां रही छे. लक्ष्मी इ० ए तो कर्ममहत्ता छे. एम छतां लक्ष्मीथी शाणा पुरुषो दान दे छे, उत्तम विद्याशाळाओ स्थापी परदुःखभंजन थाय छे. एक स्त्रिथी करीने तेमां मात्र दृष्टि रोकी परस्त्रि तरफ पुत्रिभावथी जुए छे. कुटुंब वडे करीने अमुक समुदायनुं हित काम करे छे. पुत्रवडे तेने संसारभार आपी पोते धर्ममार्गमां प्रवेश करे छे. अधिकारथी डहापण वडे आचरण करी राजा प्रजा बन्नेनुं हित करी—धर्मनीतिनो प्रकाश करे छे, एम करवाथी केटलीक खरी महत्ता पमाय छे. छतां ए महत्ता चोकस नथी. मरणभय माथे रह्यो छे. धारणा धरी रहे छे. योजेली योजना के विवेक वखते हृदयमांथी जतो रहे एवी संसारमोहिनी छे. एथी आपणे एम निस्संशय समजवुं के सत्यवचन, दया, क्षमा, ब्रह्मचर्य अने समता जेवी आत्ममहत्ता कोइ स्थळे नथी. शुद्ध पंचमहाव्रतधारी भिक्षुके जे रीद्धि अने महत्ता मेळवी छे ते ब्रह्मदत्त जेवा चक्रवर्त्तिए लक्ष्मी, कुटुंब, पुत्र के अधिकारथी मेळवी नथी एम मारुं मानवुं छे!



शिक्षापाठ १७ बाहुबळ.

बाहुबळ एटले पोतानी भूजानुं बळ एम अहीं अर्थ करवानो नथी. कारण बाहुबळ नामना महापुरुषनुं आ एक नानुं पण अद्‌भूत चरित्र छे.

ऋषभदेवजी भगवान् सर्व संग परित्याग करी भरत बाहुबळ नामना पोताना बे पुत्रोने राज्य सोंपी विहार करता हता. त्यारे भरतेश्वर चक्रवर्त्ति थयो. आयुधशाळामां चक्रनी उत्पत्ति थया पछी प्रत्येक राज्यपर पोतानी आम्नाय बेसारी, अने छखंडनी प्रभुता मेळवी. मात्र बाहुबळ जे भरतेश्वरनो मोटो भाइ हतो तेणे ए प्रभुता अंगीकार न करी. एथी परिणाममां भरतेश्वर अने बाहुबळने युद्ध मंडायुं. घणा वखत सुधी भरतेश्वर के बाहुबळ ए बन्नेमांथी एके हठ्या नहीं, त्यारे क्रोधावेशमां आवी जइ भरतेश्वरे बाहुबळ पर चक्र मूक्युं. एक वीर्यथी उत्पन्न थयेला भाइपर पण ते चक्र प्रभाव न करी शके, ए नियमथी फरीने पाछुं भरतेश्वरना हाथमां आव्युं. भरते चक्र मूकवाथी बाहुबळने बहु क्रोध आव्यो. तेणे महा बळवत्तर मुष्टी उपाडी. तत्काळ त्यां तेनी भावनानुं स्वरूप फर्युं. ते विचारी गयो के हुं आ बहु निंदनिय करुं छउं आनुं परिणाम केवुं दुःखदायक छे! भले भरतेश्वर राज्य भोगवो. मिथ्या परस्परनो नाश शा माटे करवो? आ मुष्टि मारवी योग्य नथी; तेम उगामी ते हवे पाछी वाळवी पण योग्य नथी. एम कही तेणे पंच

मुष्टि केश लुंचन कर्युं; अने सांथी मुनीत्वभावे चाली नीकळ्यो. भगवान आदीश्वर ज्यां अठाणु दिक्षित पुत्रोथी तेमज आर्य—आर्याथी विहार करता हता त्यां जवा इच्छा करी; पण मनमां मान आव्युं. त्यां हुं जइशतो माराथी नाना अठाणुं भाइने वंदन करवुं पडशे. तेथी त्यां तो जवु योग्य नथी. पछी वनमां ते एकाग्र ध्याने रह्यो. हळवे हळवे बार वर्ष थइ गया. महातपथी काया हाडकांनो माळो थइ गइ ते सुकां झाड जेवो देखावा लाग्यो; परंतु ज्यांसुधी माननो अंकुर तेनां अंतःकरणथी खस्यो नहोतो त्यांसुधी ते सिद्धि न पाम्यो. ब्राह्मी अने सुंदरीए आवीने तेने उपदेश कर्यो. आर्य वीर! हवे मदोन्मत्त हाथीपरथी उतरो एनाथी तो बहु शोष्युं. एओनां आ वचनोथी बाहुबळ विचारमां पड्यो. विचारतां विचारतां तेने भान थयुं के सत्यछे—हुं मानरूपी मदोन्मत्त हाथीपरथी हजु क्यां उतर्यो छउं? हवे एथी उतरवुं एज मंगळकारकछे; एम कहीने तेणे वंदन करवाने माटे पगलुं भर्युं के ते अनुपम दिव्य कैवल्य कमळाने पाम्यो.

वांचनार! जुओ मान ए केवी दुरित वस्तुछे!!

शिक्षापाठ १८ चारगति.

शातावेदनी, अशातावेदनी वेदतां शुभाशुभ कर्मनां

फळ भोगववा आ संसारवनमां जीव चारगतिमां भम्या करे छे; ए चारगति खचीत जाणवी जोइए.

१ नर्कगति—महारंभ, मदिरापान, मांस भक्षण, इ-त्यादिक तिव्र हिंसाना करनार जीवो अघोर नर्कमां पडे छे. त्यां लेश पण शाता, विश्राम के सुख नथी. महा अं-धकार व्याप्त छे. अंगछेदन, अग्निमां बळवु अने छरप-लानी धार जेवुं जळ पीवुं पडेछे. अनंत दुःखथी करीने त्यां प्राणीभूते सांकड, अशाता अने विलाविलाट सहन करवा पडेछे. जे दुःखने केवलज्ञानीओ पण कही शकता नथी. अहोहो !! ते दुःख अनंतिवार आ आत्माए भोगव्यांछे

२ तिर्यंचगति—छल, जूठ प्रपंच इत्यादिक करीने जीव सिंह, वाघ, हाथी. मृग, गाय, भेंस, बळद इत्यादिक शरीर धारण करेछे. ते तिर्यंचगतिमां भूख, तरश, ताप, वध, बंधन, ताडन, भार वहन करवा ईत्यादिकनां दुःखने सहन करे छे.

३ मनुष्यगति—खाद्य, अखाद्य, विवेकरहीत, लज्जा-हीन, माता पुत्री साथे काम गमन करवामां जेने पापापा-पनुं भान नथी. निरंतर मांसभक्षण, चोरी, परस्त्रिगमन वगेरे महा पातक कर्या करेछे. एतो जाणे अनार्यदेशनां अनार्य मनुष्य छे. आर्यदेशमां पण क्षत्रि, ब्राह्मण, वैश्य प्रमुख मतिहीन, दरिद्रि, अज्ञान अने रोगथी पीडितछे. मान, अपमान इत्यादिक अनेक प्रकारनां दुःख तेओ भोगवी रह्यां छे.

४ देवगति—परस्पर वेर, झेर, क्लेश, शोक, मत्सर, काम, मद, क्षुधा इत्यादिकथी देवताओ पण आयुष्य व्यतित करी रह्या छे. ए देवगति. चारगति सामान्यरुपे कही.

एक तरुण सुकुमारने रोमे रोमे लालचोळ सुया घोंचवाथी जे असह्य वेदना उपजेछे; ते करतां आठगुणी वेदना गर्भस्थानमां जीव ज्यारे रहेछे त्यारे पामेछे. मळ, मूळ, लोही, परु लगभग नवमहीना अहोरात्र मुर्छागत स्थितिमां वेदनी भोगवी भोगवीने जन्म पामे छे. जन्म समये गर्भस्थाननी वेदनाथी अनंत गुणी वेदना उत्पन्न थाय छे. त्यार पछी बाळावस्था पमाय छे. मळमूत्र धूळ अने नग्नावस्थामां अणसमजणथी रझळी रडीने ते बाळावस्था पूर्ण थायछे. अने यवावस्था आवेछे धन उपार्जन करवा माटे नाना प्रकारनां पापमां पडवुं पडेछे. ज्यांथी उत्पन्न थयोछे त्यां एटले विषय विकारमां वृत्ति जायछे. उन्माद, आळस, अभिमान, निंद्यदृष्टि संयोग वियोग एम घटमाळमां युवावय चाली जायछे. त्यां वृद्धावस्था आवे छे. शरीर कंपेछे, मुखे लाळ झरे छे. त्वचापर करोचली पडी जायछे. सुंघवुं सांभळवुं अने देखवुं ए शक्तियो केवळ मंद थइ जायछे. केश धवळ थइ खरवा मंडेछे, चालवांनी आय रहेती नथी. हाथमां लाकडी लइ लडथडीयां खातां चालवुं पडे छे. कां तो जीवन पर्यंत खाटले पड्यां रहेवुं पडे छे. श्वास, खांसी इत्यादिक रोग आवीने वळगे छे. अने थोडा काळमां काळ आवीने कोळीओ करी जाय

छे आ देहमांथी जीव चाली नीकळेछे. काया हती न-हती थइ जायछे. मरण समये केटली बधी वेदनाछे? च-तुर्गतिनां दुःखमां जे मनुष्यदेह श्रेष्ठ तेमां पण केटलां बधां दु.ख रह्यां छे! तेम छतां उपर जणाव्या प्रमाणे अ-नुक्रमे काळ आवेछे एम नथी. गमे ते वखते ते आवीने लइ जायछे. माटेज प्रमाद विना विचक्षण पुरुषो आत्म कल्याणने आराधेछे.



शिक्षापाठ १९ संसारने चार उपमा भाग १

संसारने महा तत्वज्ञानीओ एक समुद्रनी उपमा पण आपेछे. स्थळे स्थळे संसाररूपी समुद्र अनंत अने अपारछे अहो लोको! एनो पार पामवा पुरुषार्थनो उपयोग करो! उपयोग करो!! आम एमनां वचनछे. संसारने समुद्रनी उपमा छाजती पण छे. समुद्रमां जेम मोजांनी छोळो उ-छळ्या करेछे तेम संसारमां विषयरूपी अनेक मोजांओ उछळे छे. समुद्रना जळनो उपरथी जेम सपाट देखाव छे तेम संसारपण सरळ देखाव देछे.समुद्र जेम क्यांक बहु उंडो छे, अने क्यांक भमरीओ खवरावेछे तेम संसार काम विषय प्रपंचादिकमां बहु उंडोछे. ते मोहरूपी भमरीओ खवरावे छे. थोडुं जळ छतां समुद्रमां जेम उभा रहेवाथी कादवमां गुची जइए छीए तेम संसारना लेश प्रसंगमां ते तृष्णारूपी कादवमां घुंचवी देछे. समुद्र जेम नाना प्रकारना खराबा अने तोफानथी नाव के वहाणने जोखम पहोंचाडे छे.

तेम स्त्रियोरूपी खराबा अने कामरूपी तोफानथी संसार आत्माने जोखम पहोंचाडे छे. समुद्र जेम अगाध जळथी शीतळ देखातो छतां वडवानळ नामनी अग्निनो तेमां वास छे. तेम संसारमां मायारूपी अग्नि बळ्याज करेछे. समुद्र जेम चोमासामां वधारे जळ पामीने उंडो उतरेछे तेम पापरूपी जळ पामीने संसार उंडो उतरे छे, एटले मजबुत पाया करतो जाय छे.

२ संसारने बीजी उपमा अग्निनी छाजे छे. अग्निथी करीने जेम महातापनी उत्पत्ति छे. एम संसारथी पण त्रिविध तापनी उत्पत्ति छे. अग्निथी बळेलो जीव जेम महा विलाविलाट करे छे तेम संसारथी बळेलो जीव अनंत दुःखरुप नर्कथी असह्य विलाविलाट करेछे. अग्नि जेम सर्व वस्तुनो भक्ष करी जायछे, तेम संसारना मुखमां पडेलांनो ते भक्ष करी जायछे. अग्निमां जम जेम घी अने इंधन होमाय छे तेम तेम ते वृद्धि पामे छे तेम संसारमां तिव्र मोहिनी रूप घी अने विषयरुप इधन होमाय छे तेम तेम ते वृद्धि पामे छे.

३ संसारने त्रीजी उपमा अंधकारनी छाजे छे. अंधकारमां जेम सींदरी, सर्पनुं भान करावे छे तेम संसार सत्यने असत्यरुप बतावे छे, अंधकारमां जेम प्राणीओ आम तेम भटकी विपत्ति भोगवे छे तेम संसारमां बेभान थइने अनंत आत्माओ चतुर्गतिमां आम तेम भटके छे. अंधकारमां जेम काच अने हीरानुं ज्ञान थतुं नथी तेम

संसाररूपी अंधकारमां विवेक अविवेकनुं ज्ञान थतुं नथी. जेम अंधकारमां प्राणीओ छती आंखे अंध बनी जाय छे तेम छती शक्तिये संसारमां तेओ मोहांध बनी जाय छे. अंधकारमां जेम घुवड इत्यादिकनो उपद्रव वधे छे तेम संसारमां लोभ, मायादिकनो उपद्रव वधे छे. अनेक भेदे जोतां संसार ते अधकाररूपज जणाय छे.



शिक्षापाठ २० संसारने चार उपमा भाग २.

४ संसारने चोथी उपमा शकटचक्रनी एटले गाडांना पैडांनी छाजे छे. चालतां, शकटचक्र जेम फरतुं रहे छे तेम संसारमां प्रवेश करतां ते फरता रूपे रहे छे. शकट चक्र जेम धरी विना चाली शकतुं नथी तेम संसार मिथ्यात्वरूपी धरी विना चाली कशतो नथी. शकटचक्र जेम आरावडे करीने रह्युं छे. तेम संसार शंका प्रमादादिक आराथी टक्यो छे. अनेक प्रकारथी एम शकटचक्रनी उपमा पण संसारने लागी शके छे.

संसारने जेटली अधोपमा आपो एटली थोडी छे. ए चार उपमा आपणे जाणी हवे एमांथी तत्व लेवुं योग्यछे.

१ सागर जेम मजबुत नाव अने माहितगार नाविकथी तरीने पार पमाय छे; तेम सत् धर्मरूपी नाव अने सद् गुरुरूपी नाविकथी संसारसागर पार पामी शकाय

छे. सागरमां जेम डाह्या पुरुषोए निर्विघ्न रस्तो शोधी काढ्यो होय छे तेम जिनेश्वर भगवाने तत्वज्ञानरूप उत्तम राह बताव्यो छे. जे निर्विघ्न छे.

२ अग्नि जेम सर्वने भक्ष करी जाय छे, परंतु पाणीथी बुझाइ जाय छे तेम वैराग्यजळथी संसार अग्नि बुझन शकाय छे.

३ अंधकारमां जेम दीवो लइ जवाथी प्रकाश थइ, जोइ शकाय छे; तेम तत्वज्ञान रूपी निर्बुझ दीवो संसार रूपी अंधकारमां प्रकाश करी सत्य वस्तु बतावे छे.

४ शकटचक्र जेम बळदविना चाली शकतुं नथी; तेम संसारचक्र राग, द्वेषविना चाली शकतुं नथी.

एम ए संसारदरदनुं उपमावडे निवारणअनुपान साथे कह्युं. ते आत्महितार्थिए निरंतर मनन करवुं; अने बीजाने बोधवुं.



शिक्षापाठ २१ बार भावना.

वैराग्यनी, अने आत्महितैषि विषयोनी सुद्रढता थवा माटे बार भावना तत्वज्ञानीओ कहेछे.

१ शरीर, वैभव, लक्ष्मी कुटुंब परिवारादिक सर्व विनाशी छे; जीवनो मूळ धर्म अविनाशी छे. एम चिंतववुं ते पहेली अनित्यभावना.

२ संसारमां मरण समये जीवने शरण राखनार कोई नथी, मात्र एक शुभ धर्मनुंज शरण सत्यछे; एम चिंतववुं ते बीजी अशरणभावना.

३ आ आत्माए संसारसमुद्रमां पर्यटन करतां करतां सर्व भव कीधाछे. ए संसारी जंजीरथी हुं क्यारे छूटीश? ए संसार मारो नथी. हुं मोक्षमयि छुं; एम चिंतववुं ते त्रीजी संसारभावना.

४ आ मारो आत्मा एकलोछे; ते एकलो आव्योछे, एकलो जशे; पोतानां करेलां कर्म एकलो भोगवशे एम चिंतववुं ते चोथी एकत्वभावना.

५ आ संसारमां कोई कोइनुं नथी एम चिंतववुं ते पांचमी अन्यत्वभावना.

६ आ शरीर अपवित्र छे; मळमुत्रनी खाण छे, रोग जराने रहेवानुं धाम छे; ए शरीरथी हुं न्यारो छउं एम चिंतववुं ते छठ्ठी अशुचिभावना.

७ राग, द्वेष, अज्ञान, मिथ्यात्व इत्यादिक सर्व आश्रवछे एम चिंतववुं ते सातमी आश्रवभावना.

८ ज्ञान, ध्यानमां जीव प्रवर्त्तमान थइने नवां कर्म बांधे नहीं ए आठमी सम्वरभावना.

९ ज्ञानसहित क्रिया करवी ते निर्जरानुं कारण छे ते नवमी निर्जराभावना.

१० लोकस्वरूपनुं उत्पत्ति, स्थिति, विनाशस्वरूप विचारवुं ते दशमी लोकस्वरूपभावना.

११ संसारमां भमतां आत्माने सम्यक्ज्ञाननी प्रासादी प्राप्त थवी दुर्लभ छे; वा सम्यक्ज्ञान पाम्यो तो चारित्र सर्व विरति परिणामरूप धर्म पामवो दुर्लभ छे. ते अग्यारमी बोधदुर्लभभावना.

१२ धर्मना उपदेशक तथा शुद्ध शास्त्रना बोधक एवा गुरु अने एवुं श्रवण मळवुं दुर्लभ छे ते बारमी धर्म दुर्लभभावना.

आ बार भावनाओ मननपूर्वक निरंतर विचारवाथी सत्पुरुषो उत्तम पदने पाम्या छे—पामे छे—अने पामशे.

शिक्षापाठ २२ कामदेवश्रावक.

महावीर भगवंतना समयमां द्वादशव्रत्तने विमळ भावथी धारण करनार, विवेकी अने निग्रंथवचनानुरक्त कामदेव नामनो एक श्रावक तेओनो शिष्य हतो. सुधर्मा सभामां इंद्रे एक वेळा कामदेवनी धर्म अचळतानी प्रशंसा करी. एवामां त्यां एक तुच्छ बुद्धिवान देव बेठो हतो ते बोल्यो एतो समजायुं! नारी न मळे त्यांसुधी ब्रह्मचारी तेमज ज्यांसुधी परिसह पड्या नहोय त्यांसुधी बधाय सहनशील अने धर्मद्रढ. आ मारी वात हुं एने चळावी आपीने सत्य करी देखाडुं. धर्मद्रढ कामदेव ते वेळा कायोत्सर्गमां लीन हतो. देवताए हाथीनुं रुप वैक्रय कर्युं; अने पछी कामदेवने खुब गुंद्यो तोपण ते अचळ रह्यो, एटले मुशळ जेवुं अंग करीने काळावर्णनो सर्प थइने भयंकर फुंकार कर्या, तोय कामदेव कायोत्सर्गथी लेश चल्यो नहीं; पछी अट्टहास्य करता राक्षसनो देह धारण करीने अनेक प्रकारना परिसह कर्या, तोपण कामदेव कायोत्सर्गथी चल्यो नहीं. सिंह वगेरेनां अनेक भयंकर रुप कर्यां

तोपण कायोत्सर्गमां लेश हीनता कामदेवे आणी नहीं. एम रात्रिना चारपहोर देवताए कर्या कर्युं;पण ते पोतानी धारणामां फाव्यो नहीं. पछी तेणे उपयोगवडे करीने जोयुं तो मेरुना शिखरनी पेरे ते अडोळ रह्यां दीठो. कामदेवनी अद्भुत निश्चलता जाणी तेने विनयभावथी प्रणाम करी दोष क्षमावीने ते देवता स्वस्थानके गयो.

कामदेव श्रावकनी धर्मद्रढता आपणने शुं बोध करे छे ते कह्या वगर पण समजायुं हशे. एमांथी तत्वविचार ए लेवानो छे के निर्ग्रंथप्रवचनमां प्रवेश करीने द्रढ रहेवुं. कायोत्सर्ग इत्यादिक जे ध्यान धरवानां छे; ते जेम बने तेम एकाग्र चित्तथी अने द्रढताथी निर्दोष करवां. चळविचळ भावथी कायोत्सर्ग बहु दोषयुक्त थायछे. पाइने माटे धर्मशास्त्र काढनारा धर्ममां द्रढता क्यांथी राखे ! अने राखेतो केवी राखे ! ए विचारतां खेद थायछे.

शिक्षापाठ २३ सत्यता.

सामान्य कथनमां पण कहेवायछे के सत्य ए आ सृष्टिनुं धारण छे. अथवा सत्यने आधारे आ सृष्टि रहीछे. ए कथनमांथी एवी शिक्षा मळेछे के धर्म, नीति, राज, अने व्यवहार ए सत्यवडे प्रवर्त्तन करी रह्यां छे अने ए चार नहोय तो जगत्नुं रूप केवुं भयंकर होय ? ए माटे थइने सत्य ए सृष्टिनुं धारण छे एम कहेवुं ए कंइ अतिशयोक्ति जेवुं के नहीं मानवा जेवुं नथी.

वसुराजानुं एक शब्दनुं असत्य बोलवुं केटलुं दुःखदायक थयुं हतुं ते तत्वविचार करवा माटे अहीं हुं कहुं छउं.

वसुराजा, नारद अने पर्वत ए त्रणे एक गुरु पासेथी विद्या भण्या हता. नारद अध्यायकनो पुत्र हतो; अध्यायके काळ कर्यो. एथी नारद तेनी मा सहीत वसुराजाना दरबारमां आव्यो हतो. रात्रे तेनी मा पासे बेठी छे; अने नारद शास्त्राभ्यास करेछे. एमां एक वचन नारद एवुं बोल्यो के अजाहोतव्यं. त्यारे पर्वत बोल्यो अज ते शुं नारद? नारदे कह्यु अज ते बोकडो. पर्वत बोल्यो, आपणे त्रणे जण तारा पिता कने भणता हता. तारा पिताए तो अज ते त्रण वर्षनी व्रीही कहीछे; अने तुं अवळुं शा माटे कहेछे? एम परस्पर वचनविवाद वध्यो. त्यारे नारदे कह्युं आपणने वसुराजा कहे ते खरुं. ए वातनी पर्वते पण हा कही. त्यारपछी नारदनी मा रात्रे राजा पासे गई अने पूछयुं राजा? अज एटले शुं? वसुराजाए संबंधपूर्वक कह्युं अज एटले व्रीही. त्यारे नारदनी माए राजाने कह्युं मारा पिताथी बोकडो कहेवायो छे माटे तेनो पक्ष करवो पडशे; तमने पूछवा माटे तेओ आवशे. वसुराजा बोल्यो; हुं असत्य केम कहुं? माराथी ए बनी शके नहीं. नारदनी माए कह्युं, पण जो तमे मारा पुत्रनो पक्ष नहीं करो तो तमने हुं हत्या आपीश. राजा विचारमां पडी गयो के सत्यवडे करीने हुं मणिमय सिंहासनपर अद्धर बेसुं छउं. लोकसमुदायने न्याय आपु छउं. लोक पण एम जाणेछे के

राजा सत्य गुणे करीने सिंहासनपर अंतरिक्ष बेसेछे. हवे केम करवुं? जो नारदनो पक्ष न करुं तो ब्राह्मणी मरेछे; ए वळी मारा गुरुनी स्त्रि छे. न चालतां छेवटे राजाए ब्राह्मणीने कह्युं तमे भले जाओ; हुं नारदनो पक्ष करीश. आवो निश्चय करावीने नारदनी मा घेर आवी. प्रभाते नारद, पर्वत अने नारदनी मा विवाद करतां राजा पासे आव्यां. राजा अजाण थई पूछवा लाग्यो, शुं छे पर्वत? पर्वते कह्युं राजाधिराज! अज ते शुं? ते कहो. राजाए पर्वतने पूछयुं तमे शुं कहोछो? पर्वते कह्युं अज ते त्रणवर्षनी व्रीही. तमने क्यां नथी सांभरतुं? वसुराजा बोल्यो अज एटले बोकडो पण व्रीही नहीं. तेज वेळा देवताए सिंहासनथी उछाळी हेठो नाख्यो; वसु काळपरिणाम पाम्यो.

आ उपरथी आपणे सघळाए सत्य तेमज राजाए सत्य अने न्याय बन्ने ग्रहण करवारुप छे ए मुख्य बोध मळेछे.

जे पांच महाव्रत भगवाने प्रणित कर्यां छे; तेमांना प्रथम महाव्रतनी रक्षाने माटे बाकीनां चार व्रत वाडरुपे छे; अने तेमां पण पहेली वाड ते सत्य महाव्रत छे; ए सत्यना अनेक भेद सिद्धांतथी श्रुत करवा अवश्यना छे.

शिक्षापाठ २४ सत्संग.

सत्संग ए सर्व सुखनुं मूळ छे; सत्संग मळ्यो के तेना प्रभाववडे वांछित सिद्धि थइज पडी छे; गमे तेवा पवित्र

थवाने माटे सत्संग श्रेष्ठ साधन छे; सत्संगनी एक घडी जे लाभ दे छे ते कुसंगनां एक कोटयावधि वर्ष पण लाभ न दे‍इ शकतां; अधोगतिमय महा पापो करावे छे तेमज आत्माने मलिन करे छे सत्संगनो सामान्य अर्थ एटलो के उत्तमनो सहवास. ज्यां सारी हवा नथी आवती त्यां रोगनी वृद्धि थाय छे; तेम ज्यां सत्संग नथी त्यां आत्मरोग वधे छे; दुर्गंधथी कंटाळीने जेम नाके वस्त्र आडुं दइए छीए तेम कुसंगथी सहवास बंध करवानुं अवश्यनुं छे; संसार ए पण एक प्रकारनो संग छे; अने ते अनंत कुसंगरुप तेमज दुःखदायक होवाथी त्यागवा योग्य छे गमे ते जातनो सहवास होय परतु जेवडे आत्म सिद्धि नथी ते सत्संग नथी. आत्माने सत्य रंग चढावे ते सत्संग. मोक्षनो मार्ग बतावे ते मैत्रि. उत्तम शास्त्रमां निरंतर एकाग्र रहेवुं, ते पण सत्सग छे; सत्पुरुषोनो समागम ए पण सत्संग छे. मलीन वस्त्रने जेम साबु तथा जळ स्वच्छ करेछे; तेम आत्मानी मलीनताने शास्त्रबोध अने सत्पुरुषोनो समागम, टाळी शुद्धता आपेछे. जेनाथी हमेशनो परिचय रही राग, रंग, गान, तान, अने स्वादिष्ट भोजन सेवातां होय ते तमने गमे तेवो प्रिय होय तो पण निश्चय मानजो के ते सत्संग नथी, पण कुसंग छे. सत्संगथी प्राप्त थयेलुं एक वचन अमुल्य लाभ आपे छे. तत्वज्ञानीओए मुख्य बोध एवो कर्यो छे के सर्व संग परित्याग करी, अंतरमां रहेला सर्व विकारथी पण विरक्त

रही एकांतनुं सेवन करो. तेमां सत्संगनी स्तुति आवी जाय छे. केवळ एकांत ते तो ध्यानमां रहेवुं के योगाभ्यासमां रहेवुं ए छे, परंतु समस्वभाविनो समागम जेमांथी एकज प्रकारनी वर्त्तनतानो प्रवाह नीकळे छे, ते भावे एकज रूप होवाथी घणा माणसो छतां; अने परस्परनो सहवास छतां ते एकांतरूपज छे; अने तेवी एकांत मात्र संत समागममां रही छे. कदापि कोइ एम विचारशे के विषयीमंडळ मळे छे त्यां समभाव होवाथी एकांत कां न कहेवी ? तेनुं समाधान तत्काळ छे के तेओ एक स्वभावि होता नथी. परस्पर स्वार्थ बुद्धि अने मायानुं अनुसंधान होय छे; अने ज्यां ए बे कारणथी समागम छे ते एक स्वभावि के निर्दोष होता नथी. निर्दोष अने सम स्वभावि समागम तो परस्परथी शांत मुनीश्वरोनो छे; तेमज धर्मध्यानप्रसस्त अल्पारंभी पुरूषनो पण केटलेक अंशे छे. ज्यां स्वार्थ अने माया कपटज छे त्यां समस्वभावता नथी; अने ते सत्संग पण नथी. सत्संगथी जे सुख, आनंद मळे छे ते अति स्तुतिपात्र छे. ज्यां शास्त्रोनां सुंदर प्रश्नो थाय, ज्यां उत्तम ज्ञान ध्याननी सुकथा थाय;ज्यां सत्पुरुषोनां चरित्रपर विचार बंधाय, ज्यां तत्वज्ञानना तरंगनी लहरियो छूटे.ज्यां सरळ स्वभावथी सिद्धांत विचार चर्चाय, ज्यां मोक्षजन्य कथनपर पुष्कळ विवेचन थाय; एवो सत्संग ते महा दुर्लभ छे. कोइ एम कहो के सत्संग मंडळमां कोइ मायावि नहीं होय? तो तेनुं समाधान

आ छे. ज्यां माया अने स्वार्थ होय छे त्यां सत्संगज होतो नथी. राजहंसनी सभानो काग देखाव कदापि न कळाय तो अवश्य रागे कळाशे; मौन रह्यो तो मुखमुद्राए कळाशे. पण ते अंधकारमां जाय नही. तमज मायावियो सत्संगमां स्वार्थे जइने शुं करे ? त्यां पेट भर्यानी वात तो होय नही. बे घडी त्यां जइ ते विश्रांति लेतो होय तो भले के जेथी रंग लागे. अने रंग लागे नहीं तो बीजीवार तेनुं आगमन होय नहीं, पृथ्विपर तराय नहीं; तेम सत्संगथी बुडाय नहीं; आवी सत्संगमां चमत्कृति छे. निरंतर एवा निर्दोष समागममां माया लइने आवे पण कोण ? कोइज दुर्भागी; अने ते पण असंभवित छे.

सत्संग ए आत्मानुं परम हितस्वि औषध छे.

शिक्षापाठ २५ परिग्रहने संकोचवो.

जे प्राणीने परिग्रहनी मर्यादा नथी, ते प्राणी सुखी नथी; तेने जे मळ्युं ते ओछुंछे. कारण जेटलुं मळतुं जाय तेटलांथी विशेष प्राप्त करवा तेनी इच्छा थायछे. परिग्रहनी प्रबळतामां जे कंई मळ्युं होय तेनुं सुख तो भोगवातुं नथी; परंतु होय ते पण वखते जायछे. परिग्रहथी निरंतर चळविचळ अने पापभावना रहेछे; अकस्मात् योगथी एवी पापभावनामां आयुष्य पूर्ण थाय तो बहुधा अधोगतिनुं कारण थइ पडे. केवळ परिग्रह तो मुनीश्वरो त्यागी शके; पण गृहस्थो एनी अमुक मर्यादा करी शके. मर्यादा थवा-

थी उपरांत परिग्रहनी उत्पत्ति नथी; अने एथी करीने विशेष भावना पण बहुधा थती नथी; अने वळी जे मळ्युंछे तेमां संतोष राखवानी पृथा पडेछे;एथी सुखमां काळ जायछे. कोण जाणे लक्ष्मीयादिकमां केवी ए विचित्रता रहीछे के जेम जेम लाभ थतो जायछे; तेम तेम लोभनी वृद्धि थती जाय छे; धर्म संबंधी केटलुंक ज्ञान छतां, धर्मनी द्रढता छतां पण परिग्रहना पासमां पडेलो पुरुष कोइकज छूटी शके छे; वृत्ति एमांज लटकी रहेछे; परंतु ए वृत्ति कोइ काळे सुखदायक के आत्महितैषि थइ नथी. जेणे एनी टुंकी मर्यादा करी नहीं; ते बहोळां दुःखना भोगी थया छे.

छ खंड साधी आज्ञा मनावनार राजाधिराज, चक्रवर्त्ति कहेवाय छे. ए समर्थ चक्रवर्त्तिमां शंभुम् नामे एक चक्रवर्त्ति थइ गयो छे एणे छ खंड साधी लीधा एटले चक्रवर्त्ति पदथी ते मनायो; पण एटलेथी एनी मनोवांच्छा तृप्त न थइ;हजु ते तरस्यो.रह्यो एटले घातकी खंडना छ खंड साधवा एणे निश्चय कर्यो. बधा चक्रवर्त्ति छखंड साधेछे; अने हुं पण एटलाज साधु तेमां महत्ता शानी ? बारखंड साधवाथी चिरंकाळ हुं नामांकित थइश. समर्थ आज्ञा जीवनपर्यंत ए खंडोपर मनावी शकीश. एवा विचारथी समुद्रमां चर्मरत्न मूक्युं; ते उपर सर्व सैन्यादिकनो आधार रह्यो हतो; चर्मरत्नना एक हजार देवता सेवक कहेवायछे; तेमां प्रथम एके विचार्युं के

कोण जाणे? केटलांय वर्षें आमांथी छूटको थशे;माटे देवांगनाने तो मळी आवुं एम धारी ते चाल्यो गयो; पछी बीजो गयो; पछी त्रीजो गयो. अने एम करतां करतां हजारे चाल्या गया; सारे चर्मरत्न बुडयुं. अश्व, गज अने सर्व सैन्यसाहित शंभम् नामनो ते चक्रवर्त्ति बूडया; पापभावनामां ने पापभावनामां मरीने ते अनंत दुःखथी भरेली सातमी तमतम प्रभा नर्कने विषे जइने पड्यो. जुओ! छ खंडनुं आधिपत्य तो भोगववुं रह्युं; परंतु अकस्मात् अने भयंकर रीते परिग्रहनी प्रीतिथी ए चक्रवर्त्तिनुं मृत्यु थयुं तो पछी बीजा माटे तो कहेवुंज शुं? परिग्रह ए पापनुं मूळ छे; पापनो पिता छे; अन्य एकादशव्रतने महा दोष दे एवो एनो स्वभाव छे. ए माटे थइने आत्महितैषिए जेम बने तेम तेनो त्याग करी मर्यादा पूर्वक वर्त्तन करवुं.



शिक्षापाठ २६ तत्व समजवुं.

शास्त्रोनां शास्त्रो मुख पाठ होय एवा पुरुषो घणा मळी शके; परंतु जेणे थोडां वचनोपर प्रौढ अने विवेकपूर्वक विचार करी शास्त्र जेटलुं ज्ञान हृदयगत कर्युं होय तेवा मळवा दुर्लभछे. तत्वने पहोंची जवुं ए कंई नानी वात नथी. कूदीने दरियो ओळंगी जवोछे.

•अर्थ एटले लक्ष्मी, अर्थ एटले तत्व अने अर्थ एटले

शद्धनुं बीजुं नाम. आवा अर्थ शद्धना घणा अर्थ थायछे. पण अर्थ एटले तत्व ए विषयपर अहीं आगळ कहेवानुंछे. जेओ निग्रंथप्रवचनमां आवेलां पवित्र वचनो मुखपाठे करेछे, ते तेओनां उत्साहबळे सत्फळ उपार्जन करेछे; परंतु जो तेनो मर्म पाम्यां होय तो एथी ए सुख, आनंद, विवेक अने परिणामे महद्भतफळ पामेछे. अभणपुरुष सुंदर अक्षर अने ताणेला मिथ्या लीटा ए बेना भेदने जेटलुं जाणेछे तेटलुंज मुखपाठी अन्य ग्रंथ विचार अने निग्रंथप्रवचनने भेदरूप मानेछे. कारण तेणे अर्थपूर्वक निग्रंथ वचनामृतो धार्यां नथी; तेम ते पर यथार्थ तत्वविचार कर्यो नथी. यदी तत्वविचार करवामां समर्थ बुद्धिप्रभाव जोइए छीए; तोपण कंई विचार करी शके; पथ्थर पीगळे नही तोपण पाणीथी पलळे. तेमज जे वचनामृतो मुखपाठे कर्यां होय ते अर्थसहित होय तो बहु उपयोगी थई पडे; नहींतो पोपटवाळुं राम नाम. पोपटने कोई परिचये रामनाम कहेतां शीखडावे; परंतु पोपटनी बल्ला जाणे के राम ते दाडम के द्राक्ष. सामान्यार्थ समज्या वगर एवुं थायछे. कच्छी वैश्योनुं द्रष्टांत एक कहेवायछे ते कंईक हास्ययुक्तछे खरुं; परंतु एमांथी उत्तम शिक्षा मळी शके तेम छे; एटले अहीं कही जउं छउं. कच्छनां कोई गाममां श्रावकधर्म पाळता रायशी, देवशी अने खेतशी एम त्रण नाम धारी ओशवाळ रहेता हता. नियमित रीते तेओ संध्याकाळे, परोढिये प्रतिक्रमणुं करता हता. परोढिये रायशी, अने सं-

ध्याकाळे देवशी प्रतिक्रमणुं करावता हता. रात्रि संबंधी प्रतिक्रमणुं रायशी करावतो; अने संबंधे रायसी पडिक्कमणुंठायमि एम तेने बोलाववुं पडतुं; तेमज देवशीने देवशी पडिक्कमणुंठायमि एम संबंध होवाथी बोलाववुं पडतुं. योगानुयोगे घणाना आग्रहथी एक दीवस संध्याकाळे खेतशीने बोलाववा बेसार्यो. खेतशीए ज्यां देवसी पडिक्कमणुं ठायमि एम आव्युं त्यां खेतशी पडिक्कमणुं ठायामि ए वाक्यो लगावी दीधां. ए सांभळी बधा हास्यग्रस्तथया अने पूछ्युं आमकां? खेतशी बोल्यो वळी आम ते केम? त्यां उत्तर मल्यो के खेतशी पडिक्कमणुं ठायामि एम तमे केम बोलोछो? खेतशीए कह्युं. हुं गरीब छउं एटले मारुं नाम आव्युं त्यां पाधरी तकरार लइ बेठा पण रायशी अने देवशी माटे तो कोइ दीवस कोइ बोलता पण नथी. ए बन्ने केम रायशी पडिक्कमणु ठायमि अने देवशी पडिक्कमणुं ठायमि एम कहेछे. तो पछी हुं खेतशीपडिक्कमणुंठायामि एम कां न कहुं. एनी भद्रिकताए तो बधाने विनोद उपजाव्यो; पछी अर्थनी कारणसहित समजण पाडी एटले खेतशी पोतानां मुखपाठी प्रतिक्रमणाथी शरमायो.

आ तो एक सामान्य वात छे; परंतु अर्थनी खुबी न्यारी छे. तत्वज्ञ तेपर बहु विचार करी शके. बाकीतो गोळ गळ्योज लागे तेम निर्ग्रंथवचनामृतो पण सत्फळज आपे. अहो! पण मर्म पामवानी वातनी तो बलिहारीज छे!

शिक्षापाठ २७ यत्ना.

जेम विवेक ए धर्मनुं मूळतत्व छे; तेम यत्ना ए धर्मनुं उपतत्व छे. विवेकथी धर्म तत्व ग्रहण कराय छे; अने यत्नाथी ते तत्व शुद्ध राखी शकाय छे ते प्रमाणे प्रवर्त्तन करी शकाय छे पांच समिति रुप यत्ना तो बहु श्रेष्ट छे; परंतु गृहाश्रमीथी ते सर्व भावे पाळी शकाती नथी; छतां जेटला भावांशे पाळी शकाय तेटला भावांशे पण असावधानीथी पाळी शकता नथी. जिनेश्वर भगवंते बांधेली स्थूळ अने सूक्ष्म दया ज्यां बे दरकारी छे. त्यां बहु दोषथी पाळी शकाय छे. ए यत्नानी न्यूनताने लीधे छे. उतावळी अने वेगभरी चाल, पाणी गळी तेनो संखाळो राखवानी अपूर्ण विधि, काष्टादिक इंधननो वगर खंखेर्ये, जोये उपयोग; अनाजमां रहेला सूक्ष्म जंतुओनी अपूण तपास, पुंज्या प्रामाज्यां वगर रहेवां दीधेलां ठाम, अस्वच्छ राखेला ओरडा, आंगणामां पाणीनुं ढोळवुं, एठनुं राखी मूकवुं, पाटला वगर धखधखती थाळी नीचे मूकवी. एथी पोताने अस्वच्छता, अगवड, अनारोग्यता इत्यादिक फळ थायछे; अने महापापनां कारण पण थइ पडेछे ए माटे थइने कहेवानो बोध के चालवामां, बेसवामा, उठवामां, जमवामां अने बीजा हरेक प्रकारमां यत्नानो उपयोग करवो. एथी द्रव्ये अने भावे बन्ने प्रकारे लाभछे. चाल धीमी अने गंभिर राखवी घर स्वच्छ राखवां, पाणी विधि सहित गळाववुं, काष्टा-

दिक इंधन खंखेरीने नांखवां ए कंइ आपणने अगवड पडतुं काम नथी; तेम तेमां विशेष वखत जतो नथी. एवा नियमो दाखल करी दीधा पछी पाळवा मुश्केल नथी. एथी बिचारा असंख्यात निरपराधी जंतुओ बचे छे.

प्रत्येक काम यत्नापूर्वकज करवुं ए विवेकी श्रावकनुं कर्त्तव्य छे.

शिक्षापाठ २८ रात्रिभोजन.

अहिंसादिक पंचमहाव्रत जेवुं भगवाने रात्रिभोजन त्याग व्रत कह्युं छे. रात्रिमां जे चार प्रकारना अहारछे ते अभक्षरूप छे. जे जातिनो, अहारनो रंग होयछे ते जातिनां तमस्काय नामना जीव ते अहारमां उत्पन्न थायछे. रात्रिभोजनमां ए शिवाय पण अनेक दोष रह्या छे. रात्रे जमनारने रसोइने माटे अग्नि सळगाववी पडेछे; त्यारे समिपनी भींतपर रहेला निरपराधी सूक्ष्म जंतुओ नाश पामे छे. इंधनने माटे आणेलां काष्टादिकमां रहेला जंतुओ रात्रिये नहीं देखावाथी नाश पामेछे; तेमज सर्पनां झेरनो, करोळियानी लाळनो अने मच्छरादिक सूक्ष्म जंतुनो पण भय रहेछे; वखते ए, कुटुंबादिकने भयंकर रोगनुं कारण पण थइ पडे छे.

रात्रिभोजननो पुराणादिक मतमां पण सामान्य आचारने खातर त्याग कर्यो छे; छतां तेओमां परंपरानी रू-

दीथी करीने रात्रिभोजन पेसी गयुंछे.पण ए निषेधकतोछेज.

शरीरनी अंदर बे प्रकारनां कमळ छे..ते सूर्यनां अस्तथी संकोच पामी जायछे; एथी करीने रात्रिभोजनमां सूक्ष्म जीव भक्षणरुप अहित थायछे; जे महा रोगनुं कारणछे. एवो केटलेक स्थळे आयुर्वेदनो पण मतछे.

सत्पुरुषो तो दीवस बे घडी रहे त्यारे वाळु करे; अने बे घडी दीवस चढ्यां पहेलां गमे ते जातनो अहार करे नहीं. रात्रिभोजनने माटे विशेष विचार मुनिसमागमथी के शास्त्रथी जाणवो. ए संबंधी बहु सूक्ष्म भेदो जाणवा अवश्यनाछे.

चारे प्रकारना अहार रात्रिने विषे त्यागवाथी महद्फळछे. ए जिन वचनछे.

शिक्षापाठ २९ सर्वजीवनी रक्षा भाग १

दया जेवो एके धर्म नथी. दया एज धर्मनुं स्वरूपछे. ज्यां दया नथी त्यां धर्म नथी. जगतीतळमां एवा अनर्थकारक धर्म मतो पड्याछे के जेओ जीवने हणतां लेश पाप थतुं नथी बहु तो मनुष्य देहनी रक्षा करो. एम कहे छे, तेम ए धर्ममतवाळा झनुनी, मदांध अने दयानुं लेश स्वरुप पण जाणता नथी. एओ जो पोतानुं हृदयपट प्रकाशमां मूकीने विचारे तो अवश्य तेमने जणाशे के एक सूक्ष्ममां सूक्ष्म जंतुने हणवामां पण महा पापछे.जेवो मने मारो आत्मा प्रियछे तेवो तेने पण तेनो आत्मा प्रियछे. हुं मा-

रा लेश व्यसन खातर के लाभ खातर एवा असंख्याता जीवोने बेधडक हणुं छउं. ए मने केटलुं बधुं अनंत दुखनुं कारण थइ पडशे. तेओमां बुद्धिनुंबीज पण नहीं होवाथी एवो विचार करी शकता नथी. पापमां ने पापमां निशदिन मग्न छे. वेद. अने वैष्णवादि पंथोमां पण सूक्ष्म दया संबंधी कंइ विचार जोवामां आवतो नथी तोपण एओ केवळ दयाने नहीं समजनार करतां घणा उत्तमछे. बादर जीवोनी रक्षामां ए ठीक समज्याछे; परंतु ए सघळा करतां आपणे केवा भाग्यशाळी के ज्यां एक पुष्पपांखडी दूभाय त्यां पापछे; ए खरुंतत्व समज्या अने यज्ञ यागादिक हिंसाथी तो केवळ विरक्त रह्या छीए. बनता प्रयत्नथी जीव बचावीए छीए, छतां चाहिने जीव हणवानी आपणी लेश इच्छा नथी. अनंतकाय अभक्षथी बहु करी आपणे विरक्तज छीए. आ काळे ए सघळो पून्यप्रताप सिद्धार्थ भूपाळना पुत्र महावीरनां कहेलां परमतत्वबोधना योगबळथी वध्यो छे. मनुष्यो रीद्धि पामेछे, सुंदर स्त्रि पामेछे, आज्ञांकित पुत्र पामेछे, बहोळो कुटुंबपरिवार पामेछे; मानप्रतिष्ठा तेमज अधिकार पामेछे. अने ते पामवां कंई दुर्लभ नथी; परंतु खरुं धर्मतत्व के तेनी श्रद्धा के तेनो थोडो अंश पण पामवो महा दुर्लभ छे. ए रीद्धि इत्यादिक अविवेकथी पापनुं कारण थई अनंत दुःखमां लई जायछे; परंतु आ थोडी श्रद्धाभावना पण उत्तम पद्विए पहोंचाडेछे. आम दयानुं सत्परिणाम छे, आपणे धर्मतत्वयुक्त कूळमां जन्म पाम्या

छीए तो हवे जेम बने तेम विमळ दयामय वर्त्तनमां आववुं वारंवार लक्षमां राखवु के सर्व जीवनी रक्षा करवी. बीजाने पण एवोज युक्तिप्रयुक्तिथी बोध आपवो. सर्व जीवनी रक्षा करवा माटे एक बोधदायक उत्तम युक्ति बुद्धिशाळी अभयकुमारे करी हती ते आवता पाठमां हुं कहुं छउ; एमज तत्त्वबोधने माटे युक्तिकन्यायथी अनार्य जेवा धर्ममतवादीओने शिक्षा आपवानो वखत मळे तो आपणे केवा भाग्यशाळी !



शिक्षापाठ ३० सर्व जीवनी रक्षा भाग २

मगध देशनी राजगृही नगरीनो अधिराजा श्रेणिक एक वखते सभा भरीने बेठो हतो. प्रसंगोपात वातचितना प्रसंगमां मांसलुब्ध सामंतो हता ते बोल्या के हमणां मांसनी विशेष सस्ताई छे. आ वात अभयकुमारे सांभळी. ए उपरथी ए हिंसक सामंतोने बोध देवानो तेणे निश्चय कर्यो. सांजे सभा विसर्जन थई राजा अंतःपुरमां गया. त्यार पछी कर्त्तव्य माटे जेणे जेणे मांसनी वात उच्चारी हती तेने तेने घेर अभयकुमार गया. जेने घेर जाय त्यां सत्कार कर्या पछी तेओ पूछवा लाग्या के आप शा माटे परिश्रम लई अमारे घेर पधार्या ! अभयकुमारे कह्युं, महाराजा श्रेणिकने अकस्मात् महा रोग उत्पन्न थयो छे. वैद्य भेळा करवाथी तेणे कह्युं के कोमळ मनुष्यना काळजानुं सवा

टांकभार मांस होय तो आ रोग मटे. तमे राजाना प्रियमान्य छो माटे तमारे त्यां ए मांस लेवा आव्यो छउं. सामंते विचार्युं के काळजानुं मांस हुं मुवाविना, शी रीते आंपी शकुं? एथी अभयकुमारने पूछयुं महाराज, ए तो केम थई शके? एम कही पछी अभयकुमारने केटलुंक द्रव्य पोतानी वात राजा आगळ नहीं प्रसिद्ध करवा आप्युं ते ते अभयकुमार लेतो गयो. एम सघळा सामंतोने घेर अभयकुमार फरी आव्या. सघळा मांस न आपी शक्या, अने पोतानी वात छुपाववा द्रव्य आप्यु.पछी बीजे दीवसे ज्यारे सभा भेळी थइ त्यारे सघळा सामंतो पोताने आसने आवीने बेठा. राजा पण सिंहासनपर विराज्या हता. सामंतो आवी आवीने गई कालनुं कुशळ पूछवा लाग्या. राजा ए वातथी विस्मय थयो. अभयकुमार भणी जोयुं,एटले अभयकुमार बोल्या महाराज काले आपना सामंतो सभामां बोल्या हता के हमणां मांस सस्तुं मळेछे. तेथी हुं तेओने त्यां लेवा गयो हतो, त्यारे सघळाए मने बहु द्रव्य आप्युं; परंतु काळजानुं सवा पैसाभार मांस न आप्युं. त्यारे ए मांस सस्तु के मोघुं ? बधा सामंतो सांभळीने शरमथी नीचुं जोइ रह्या. कोइथी कंइ बोली शकायुं नहीं. पछी अभयकुमारे कह्युं आ कंइ में तमने दुःख आपवा कर्युं नथी, परंतु बोध आपवा कर्युं छे. आपणने आपणा शरीरनूं मांस आपवुं पडेतो अनंतभय थाय छे. कारण आपणा देहनी आपणने प्रियताछे, तेम

जे जीवनुं ते मांस हशे तेनो पण जीव तेने वहालो हशे. जेम आपणे अमूल्य वस्तुओ आपीने पण पोतानो देह बचावीए छीए तेम ते बिचारां पामर प्राणीओने पण होवुं जोइए. आपणे समजणवाळां, बोलतां चालतां प्राणी छइए. ते, बिचारां अवाचक अने अणसमजणवाळां प्राणीने मोतरूप दुःख आपीए ए केवुं पापनुं प्रबळ कारण छे. आपणे आ वचन निरंतर लक्षमां राखवुं के सर्व प्राणीने पोतानो जीव वहालो छे; अने सर्व जीवनी रक्षा करवी ए जेवो एके धर्म नथी. अभयकुमारनां भाषणथी श्रेणिक महाराजा संतोषाया. सघळा सामंतो पण बोध पाम्या. तेओए ते दीवसथी मांस खावानी प्रतिज्ञा करी, कारण एक तो ते अभक्ष छे; अने कोइ जीव हणाया विना ते आवतुं नथी ए मोटो अधर्म छे; माटे अभय प्रधाननुं कथन सांभळीने तेओए अभयदानमां लक्ष आप्युं. जे आत्मानां परम सुखनुं कारण छे.

शिक्षापाठ ३१ प्रत्याख्यान.

पच्चखाण नामनो शब्द वारंवार तमारा सांभळवामां आव्यो छे. एनो मूळ शब्द प्रत्याख्यान छे; अने ते 'अमुक वस्तु भणी चित्त न करवुं एवो जे नियम करवो तेने बदले वपराय छे. प्रत्याख्यान करवानो हेतु महा उत्तम अने सूक्ष्म छे. प्रत्याख्यान नहीं करवाथी गमे ते वस्तु

न खाओ के न भोगवो तोपण तेथी संवरपणुं नथी. कारण के तत्त्वरुपे करीने इच्छानुं रुंधन कर्युं नथी. रात्रे आपणे भोजन न करता होइए; परंतु तेनो जो प्रत्याख्यानरुपे नियम न कर्यो होय तो ते फळ न आपे; कारण आपणी इच्छा खुल्ली रही. जेम घरनुं बारणुं उघाडुं होय अने श्वानादिक जनावर के मनुष्य चाल्युं आवे तेम इच्छानां द्वार खुल्लां होय तो तेमा कर्म प्रवेश करे छे. एटले के ए भणी आपणा विचार छूटथी जाय छे; ते कर्मबंधननुं कारण छे, अने जो प्रत्याख्यान होय तो पछी ए भणी द्रष्टि करवानी इच्छा थती नथी. जेम आपणे जाणीए छीए के वांसानो मध्य भाग आपणाथी जोइ शकातो नथी, माटे ए भणी आपणे द्रष्टि पण करता नथी; तेम प्रत्याख्यान करवाथी आपणे अमुक वस्तु खवाय के भोगवाय तेम नथी एटले ए भणी आपणुं लक्ष स्वभाविक जतुं नथी, ए कर्म आववाने आडो कोट थइ पडे छे. प्रत्याख्यान कर्या पछी विस्मृति वगेरे कारणथी कोइ दोष आवी जाय तो तेनां प्रायश्चित निवारण पण महात्माओए कह्यां छे.

प्रत्याख्यानथी एक बीजो पण मोटो लाभछे; ते एके अमुक वस्तुओमांज आपणी लक्षता रहे छे, बाकी बधी वस्तुओनो त्याग थइ जायछे जे जे वस्तु त्याग करी छे ते ते संबंधी पछी विशेष विचार, ग्रहवुं, मूकवुं के एवी कंइ उपाधि रहेती नथी. एवडे मन बहु बहोळताने पामी

नियमरूपी सडकमां चाल्यु जाय छे. अश्व जो लगाममां आवी जायछे, तो पछी गमे तेवो प्रबल छतां तेने धारेले रस्ते लइ जवाय छे तेम मन ए नियमरूपी लगाममां आववाथी पछी गमे ते शुभ राहमां लइ जवाय छे; अने तेमां वारंवार पर्यटन कराववाथी ते एकाग्र, विचारशील अने विवेकी थायछे. मननो आनंद शरीरने पण निरोगी करे छे. वळी अभक्ष्य, अनंतकाय, परस्त्रियादिक नियम कर्याथी पण शरीर निरोगी रही शके छे. मादक पदार्थो मनने अवळे रस्ते दोरेछे प्रत्याख्यानथी मन त्यां जतं अटकेछे; एथी ते विमळ थाय छे.

प्रत्याख्यान ए केवी उत्तम नियम पाळवानी प्रतिज्ञा छे? ते आ उपरथी तमे समज्या हशो. विशेष सद्गुरु मुखथी अने शास्त्रावलोकनथी समजवा हुं बोध करुं छउं.

शिक्षापाठ ३२ विनयवडे तत्वनी सिद्धि छे.

राजगृही नगरीनां राज्यासनपर ज्यारे श्रेणिक राजा विराजमान हतो, त्यारे ते नगरीमां एक चंडाळ रहेतो हतो. एक वखते ए चंडाळनी स्त्रिने गर्भ रह्यो. त्यारे तेने केरी खावानी इच्छा उत्पन्न थई तेणे ते लावी आपवा चंडाळने कह्युं. चंडाळे कह्युं, आ केरीनो वखत नथी, एटले मारो उपाय नथी नहीं तो हुं गमे तेटले उंचे होय त्यांथी मारी विद्यानां बळवडे करीने लावी तारी इच्छा सिद्ध करुं. चंडाळणीए कह्युं, राजानी महाराणीना बागमां

एक अकाळिक केरी देनार आंबोछे. तेपर अत्यारे केरीओ लची रही हशे, माटे त्यां जइने ए केरी लावो. पोतानी स्त्रिनी इच्छा पुरी पाडवा चंडाळ ते बागे गयो. गुप्त रीते आंबा समीप जई मंत्र भणीने तेने नमाव्यो; ने केरी लीधी. बीजा मंत्रवडे करीने तेने हतो एम करी दीधो. पछी ते घेर आव्यो अने तेनी स्त्रिनी इच्छा माटे निरंतर ते चंडाळ विद्याबळे त्यांथी केरी लाववा लाग्यो. एक दीवसे फरतां फरतां माळीनी द्रष्टिं आंबा भणी गई. केरीओनी चोरी थयेली जोईने तेणे जइने श्रेणिकराजा आगळ नम्रतापूर्वक कह्युं. श्रेणिकनी आज्ञाथी अभयकुमार नामना बुद्धिशाळी प्रधाने युक्तिवडे ते चंडाळने शोधी काढ्यो. पोता आगळ तेडावी पूछयुं, एटलां बधां माणसो बागमां रहेछे छतां तुं केवी रीते चढीने ए केरी लई गयो के जे वात कळवामां न आवी? ते कहे. चंडाळे कह्युं, आप मारो अपराध क्षमा करजो. हुं साचुं बोली जउं छउं के मारी पासे एक विद्या छे तेना योगथी हुं ए केरीओ लइ शक्यो. अभय कुमारे कह्युं, माराथी क्षमा न थइ शके, परंतु महाराजा श्रेणिकने ए विद्या तुं आप तो तेओने एवी विद्या लेवानो अभिलाष होवाथी तारा उपकारना बदलामां हुं अपराध क्षमा करावी शकुं, चंडाळे एम करवानी हा कही. पछी अभयकुमारे चंडाळने श्रेणिकराजा ज्यां सिंहासनपर बेठो हतो त्यां लावीने सामो उभो राख्यो; अने सघळी वात राजाने कही

बनावी. ए वातनी राजाए हा कही चंडाळे पछी सामा उभा रही थरथरते पगे श्रेणिकने ते विद्यानो बोध आपवा मांड्यो; पण ते बोध लाग्यो नहीं. झडपथी उभो थइ अभयकुमार बोल्यो महाराजा! आपने जो ए विद्या अवश्य शीखवी होय तो सामा आवी उभा रहो; अने एने सिंहासन आपो. राजाए विद्या लेवा खातर एम कर्युं तो तत्काळ विद्या साध्य थइ.

आ वात मात्र बोध लेवाने माटे छे. एक चंडाळनो पण विनय कर्या वगर श्रेणिक जेवा राजाने विद्या सिद्ध न थइ, तो तेमांथी तत्व ए ग्रहण करवानुं छे के सद्विद्याने साध्य करवा विनय करवो. आत्मविद्या पामवा निर्ग्रंथ गुरुनो जो विनय करीए तो केवुं मंगळदायक थाय!

विनय ए उत्तम वशीकरण छे. उत्तराध्ययनमां भगवाने विनयने धर्मनुं मूळ कही वर्णव्यो छे. गुरुनो; मुनिनो, विद्वाननो, मातापितानो अने पोताथी वडानो विनय करवो ए आपणी उत्तमतानुं कारण छे.

शिक्षापाठ ३३ सुदर्शन शेठ,

प्राचिन काळमां शुद्ध एक पत्निव्रतने पाळनारा असंख्य पुरुषो थइ गया छे; एमांथी संकट सही नामांकित थयेलो सुदर्शन नामनो एक सत्पुरुष पण छे. ए धनाढ्य सुंदर मुख मुद्रावाळो कांतिमान अने मध्य वयमां हतो. जे नगरमां ते रहेतो हतो; ते नगरना राज्यदरबार

आगळशी कंइ काम प्रसंगने लीधे तेने नीकळवुं पडयुं. ए ज्यारे त्यांथी नीकळ्यो त्यारे राजानी अभया नामनी राणी पोताना आवासना गोखमां बेठी हती. त्यांथी सुदर्शन भणी तेनी द्रष्टि गइ तेनुं उत्तम रूप अने काया जोइने तेनुं मन ललचायुं. एक अनुचरी मोकलीने कपट भावथी निर्मळ कारण बतावीने सुदर्शनने उपर बोलाव्यो केटलाक प्रकारनी वार्तांचित कर्या पछी अभयाए सुदर्शनने भोग भोगव्या संबंधीनुं आमंत्रण कर्युं. सुदर्शने केटलोक उपदेश आप्यो तोपण तेनु मन शांत थयुं नही. छेवटे कंटाळीने सुदर्शने युक्तिथी कह्यु बहेन, हुं पुरुषत्वमां नथी! तोपण राणीए अनेक प्रकारना हावभाव कर्या. ए सघळी काम चेष्टाथी सुदर्शन चळ्यो नहीं; एथी कंटाळी जइने राणीए तेने जतो कर्यो.

एक वार ए नगरमां उजाणी हती; तेथी नगर बहार नगरजनो आनंदथी आम तेम भमतां हतां. धामधुम मची रही हती. सुदर्शन शेठना छ देव कुमार जेवा पुत्रो पण त्यां आव्या हता. अभया राणी कपिला नामनी दासी साथे ठाठमाठथी त्यां आवी हती. सुदर्शनना देवपूतळां जेवा छ पुत्रो तेना जोवामां आव्या, कपिलाने तेणे पूछयुं आवा रम्य पुत्रो कोना छे? कपिलाए सुदर्शन शेठनुं नाम आप्युं. ए नाम सांभळीने राणीनी छातीमां कटार भोंकाइ; तेने कारी घा वाग्यो. सघळी धामधुम वीती गया पछी माया कथन गोठवीने अभयाए अने तेनी

दासीए मळी राजाने कह्युं, तमे मानता हशो के मारा राज्यमां न्याय अने नीति वर्ते छे; दुर्जनोथी मारी प्रजा दुःखी नथी; परंतु ते सघळुं मिथ्या छे अंतःपुरमां पण दुर्जनो प्रवेश करे त्यां सुधी हजु अंधेर छे! तो पछी बीजा स्थळ माटे पूछवुं पण शुं? तमारा नगरना सुदर्शन नामना शेठे मारी कने भोगनुं आमंत्रण कर्युं. नहीं कहेवा योग्य कथनो मारे सांभळवां पड्यां. पण में तेनो तिरस्कार कर्यो एथी विशेष अंधारुं कयुं कहेवाय? राजा मूळे कानना काचा होयछे एतो जाणे सर्वमान्य छे तेमां वळी स्त्रिनां मायाविं मधुरां वचन शुं असर न करे? ताता तेलमां टाढां जळ जेवां वचनथी राजा क्रोधायमान थया. सुदर्शनने शूळीए चढावी देवानी तत्काळ तेणे आज्ञा करी दीधी. अने ते प्रमाणे सघळुं थई पण गयुं. मात्र शूळीए सुदर्शन बेसे एटली वार हती.

गमे तेम हो पण सृष्टिना दिव्य भंडारमां अजवाळुं छे, सुदर्शनने शूळीए बेसार्यो. के शूळी फीटीने तेनुं झळझळतुं सोनानुं सिंहासन थयुं; अने देव दुंदुभी थयां. सर्वत्र आनंद व्यापी गयो. सुदर्शननुं सत्यशीळ विश्वमंडळमां झळकी उठयुं.

शीयळ अने सुदर्शननी उत्तम द्रढता ए बन्ने आत्माने पवित्र श्रेणिए चढावेछे!



शिक्षापाठ ३४ ब्रह्मचर्य विषे सुभाषित.

दोहरा.

निरखीने नवयौवना, लेश न विषयनिदान;
गणे काष्टनी पूतळी, ते भगवानसमान. १
आ सघळा संसारनी, रमणी नायकरूप;
ए त्यागी, त्याग्युं बधुं, केवळ शोकस्वरूप. २
एक विषयने जीततां, जीत्यो सौ संसार;
नृपति जीततां जीतिये, दळ, पुरने अधिकार. ३
विषयरूप अंकूरथी, टळे ज्ञानने ध्यान;
लेश मदीरापानथी, छाके ज्यम अज्ञान. ४
जे नववाड विशुद्धथी, धरे शियळ सुखदाइ;
भव तेनो लव पछि रहे, तत्ववचन ए भाइ. ५
सुंदर शीयळसुरतरू, मन वाणीने देह;
जे नरनारी सेवशे, अनुपम फळ ले तेह. ६
पात्र विना वस्तु न रहे, पात्रे आत्मिकज्ञान;
पात्र थवा सेवो सदा, ब्रह्मचर्य मतिमान. ७

शिक्षापाठ ३५ नवकारमंत्र.

नमो अरिहंताणं,
नमो सिद्धाणं;
नमो आयरियाणं;

नमो उवाझायाणं;
नमो लोअे,
सव्व साहुणं.

आ पवित्र वाक्योने निग्रंथप्रवचनमां नवकारमंत्र के पंचपरमेष्टिमंत्र कहेछे.

अर्हंत भगवंतना बार गुण, सिद्ध भगवंतना आठ गुण; आचार्यना छत्रीश गुण उपाध्यायना पंचवीश गुण अने साधुना सत्तावीश गुण मळीने एकसो आठ गुण थया. अंगुठा विना बाकीनी चार आंगळीओनां बार टेरवां थाय छे; अने एथी ए गुणोनुं चिंतवन करवानी योजना होवाथी बारने नवे गुणतां १०८ थाय छे. एटले नवकार एम कहेवामां साथे एवुं सूचवन रह्युं जणायछे के हे भव्य! तारां ए आंगळीनां टेरवांथी (नवकार) मंत्र नववार गण.—कार एटले करनार एम पण थाय छे. बारने नवे गुणतां जेटला थाय एटला गुणनो भरेलो मंत्र एम नवकार मंत्र तरीके एनो अर्थ थइ शके छे. अने पंच परमेष्टि एटले आ सकळ जगत्‌मां पांच वस्तुओ परमोत्कृष्ट छे. ते कयि कयि? तो कही बतावी के अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु. एने नमस्कार करवानो जे मंत्र ते परमेष्टि; अने पांच परमेष्टने साथे. नमस्कार होवाथी पंचपरमेष्टिमंत्र एवो शब्द थयो. आ मंत्र अनादि सिद्ध मनाय छे; कारण पंचपरमेष्टि अनादि सिद्ध छे. एटले ऐ पांचे पात्रो आद्यरूप नथी. अने

तेना जपनार पण अनादि सिद्ध छे. एथी ए जाप पण अनादि सिद्ध ठरे छे.

प्र—ए पंचपरमेष्टिमंत्र परिपूर्ण जाणवाथी मनुष्य उत्तम गतिने पामे छे एम सत्पुरुषो कहे छे ए माटे तमारुं शुं मत छे ?

उ— ए कहेवुं न्यायपूवक छे. एम हुं मानुंछउं.

प्र—एने कयां कारणथी न्याय पूर्वक कही शकाय?

उ—हा.ए तमने हुं समजावुं;मननी निग्रहता अर्थे एक तो सर्वोत्तम जगतभूषणना सत्य गुणनुं ए चितवन छे. तत्वथी जोतां वळी अर्हतस्वरुप; सिद्धस्वरुप, आचार्यस्वरूप उपाध्यायस्वरुप अने साधुस्वरूप एनो विवेकथी विचार करवानुं पण ए सूचवनछे.कारण पूज्यवा योग्य एओ शाथी छे ? एम विचारतां एओनां स्वरुप, गुण इ० माटे विचार करवानी सत्पुरुषने तो खरी अगत्य छे. हवे कहो के ए मंत्र एथी केटलो कल्याणकारक थाय ?

प्रश्नकार—सत्पुरुषो मोक्षनुं कारण नवकारमंत्रने कहे छे.ए आ व्याख्यानथी हुं पण मान्य राखुं छउं.

अर्हंत भगवंत. सिद्ध भगवंत, आचार्यजी, उपाध्याय अने साधुजी एओनो अकेको प्रथमअक्षर लेतां असिआउसा एवुं महद्भुत वाक्य नीकळे छे. जेनुं ओं एवुं योगबिंदुनुं स्वरूप थाय छे; माटे आपणे ए मंत्रनो अवश्य करीने विमळ भावथी जाप करवो.

शिक्षापाठ ३६ अनुपूर्वि.

नर्कानुपूर्वि, देवानुपूर्वि ए अनुपूर्विओ विषेनो आ पाठ नथी; परंतु ए नामनां एक अवधानी लघु पुस्तक नां मंत्रस्मरणने माटे छे

१	२	३	४	५
२	१	३	४	५
१	३	२	४	५
३	२	१	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

पिता—आवी जातनां कोष्टकथी भरेलुं एक नानुं पुस्तक छे ते तें जोयुं छे ?

पुत्र—हा पिताजी.

पिता—एमां आडा अवळा अंक मूक्या छे, तेनुं कांइ पण कारण तारा समजवामां छे?

पुत्र—नहीं पिताजी.—मारा समजवामां नथी माटे आप ते कारण कहो.

पिता—पुत्र ! प्रत्यक्ष छे के मन ए बहु अव्यवस्थित चीज छे; अने तेने एकाग्र करवुं बहु बहु विकट छे. ते ज्यां सुधी एकाग्र थतुं नथी त्यां सुधी आत्ममलीनता ज-

ती नथी. पापना विचारो घटता नथी. ए एकाग्रता माटे बार प्रतिज्ञादिक अनेक महान साधनो भगवाने कह्यां छे. मननी एकाग्रताथी महा योगनी श्रेणिये चढवा माटे अने मन केटलाक प्रकारथी निर्मळ करवा माटे सत्पुरुषोए ए एक कोष्टकावली करीछे. पंच परमेष्टि मंत्रना पांच अंक एमां पहेला मूक्या छे; अने पछी लोमविलोमस्वरूपमां लक्षबंध एना ए पांच अंक मूकीने भिन्न भिन्न प्रकारे कोष्टको कर्यां छे. एम करवानुं कारण पण मननी एकाग्रता पामीने निर्जरा करी शके.

पुत्र—पिताजी! अनुक्रमे लेवाथी एम शा माटे न थइ शके?

पिता—लोम विलोम होयतो ते गोठवतां जवुं पडे अने नाम संभारतुं जवुं पडे. पांचनो अंक मूक्या पछी बेनो आंकडो आवे के नमो लोए सव्वसाहुणं पछी-नमोअरिहंताणं ए वाक्य मूकीने नमो सिद्धाणं ए वाक्य संभारवुं पडे. एम पुनःपुनः लक्षनी द्रढता राखतां मन एकाग्रताए पहोंचे छे. अनुक्रमबंध होयतो तेम थइ शकतुं नथी; कारण विचार करवो पडतो नथी; ए सूक्ष्म वखतमां मन परमेष्टि मंत्रमांथी नीकळीने संसारतंत्रनी खटपटमां जइ पडे छे; अने वखते धर्म करतां धाड पण करी नाखे छे एथी सत्पुरुषोए अनुपूर्विनी योजना करी छे. ते बहु सुंदर अने आत्मशांतिने आपनारी छे.

शिक्षापाठ ३७ सामायिकविचार भाग १.

आत्मशक्तिने प्रकाश करनार, सम्यक्ज्ञान दर्शननो उदय करनार, शुद्ध समाधिभावमां प्रवेश करावनार, निर्जरानो अमूल्य लाभ आपनार, रागद्वेषथी मध्यस्थ बुद्धि करनार एवुं सामायिक नामनुं शिक्षाव्रत छे. सामायिक शब्दनी व्युत्पत्ति सम, आय अने ईक ए शब्दोथी थायछे. सम एटले रागद्वेषरहित मध्यस्थ परिणाम, आय एटले ते समभावनाथी उत्पन्न थतो ज्ञानदर्शनचारित्ररूप मोक्षमार्गनो लाभ; अने इक कहेतां भाव एम अर्थ थायछे. एटले के जे वडे करीने मोक्षना मार्गनो लाभदायक भाव उपजे ते सामायिक. आर्त्त, अने रौद्र ए बे प्रकारनां ध्याननो त्याग करीने; मन, वचन कायाना पापभावने रोकीने विवेकी श्रावक सामायिक करेछे.

मननां पुद्गळ दोरंगी छे. सामायिकमां ज्यारे विशुद्ध परिणामथी रहेवुं कह्युंछे; त्यारे पण ए मन आकाश पाताळना घाट घड्या करेछे. तेमज भूल, विस्मृति, उन्माद इत्यादिकथी वचनकायामां पण दूषण आववाथी सामायिकमां दोष लागेछे. मन, वचन अने कायाना थइने बत्रीश दोष उत्पन्न थायछे. दशमनना, दश वचनना अने बार कायाना एम बत्रीश दोष जाणवा अवश्यना छे. जे जाणवाथी मन सावधान रहेछे.

मनना दश दोष कहुं छउं.

१ अविवेकदोष—सामायिकनुं स्वरूप नहीं जाणवाथी

मनमां एवो विचार करे के आथी शुं फळ थवानुं हतु? आथी कोण तर्युं हशे? एवा विकल्पनुं नाम अविवेक दोष.

२ यशोवांछादोष—पोते सामायिक करे छे; एम अन्य मनुष्यो जाणे तो प्रशंसा करे ते इच्छाए सामायिक करे इ. यशोवांछा चाहे ते यशोवांछा दोष.

३ धनवांछादोष—धननी इच्छाए सामायिक करवुं ते धनवांछा दोष.

४ गर्वदोष—मने लोको धर्मि कहेछे अने हुं केवी समायिक पण तेवीज करूं छउं? ए गर्वदोष.

५ भयदोष—हुं श्रावककूलमां जन्म्यो छउं; मने लोको मोटा तरीके मान देछे, अने जो सामायिक नहीं करूं तो कहेशे के एटलु पण नथी करतो; एथी निंदा थशे ए भयदोष.

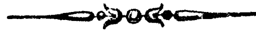
६ निदानदोष—सामायिक करीने तेनां फळथी धन, स्त्रि. पुत्रादिक मळवानुं इच्छे ते निदानदोष.

७ संशयदोष—सामायिकनुं परिणाम हशे के नहीं होय! ए विकल्प ते संशयदोष.

८ कषायदोष—सामायिक क्रोधथी करवा बेसी जाय के कंइ कारणथी पछी क्रोध, मान, माया, लोभमां वृत्ति धरे ए कषायदोष.

९ अविनयदोष—विनय वगर सामायिक करे ते अविनयदोष.

१० अबहुमानदोष—भक्तिभाव अने उमंगपूर्वक सामायिक न करे ते बहुमानदोष.



शिक्षापाठ ३८ सामायिकविचार भाग २.

दश दोष मनना कह्या हवे दश वचनना दोष कहुं छउं:

१ कुबोलदोष. सामायिकमां कुवचन बोलवुं ते कुबोलदोष.

२ सहसात्कारदोष. सामायिकमां साहसथी अविचारपूर्वक वाक्य बोलवुं ते सहसात्कारदोष.

३ असदारोपणदोष. बीजाने खोटो बोध आपे ते असदारोपणदोष.

४ निरपेक्षदोष. सामायिकमां शास्त्रनी दरकार विना वाक्य बोले ते निरपेक्षदोष.

५ संक्षेपदोष. सूत्रना पाठ इत्यादिक टुंकामां बोली नाखे; अने यथार्थ भाखे नहीं ते संक्षेपदोष.

६ क्लेशदोष. कोइथी कंकाश करे ते क्लेशदोष.

७ विकथादोष. चार प्रकारनी विकथा मांडी बेसे ते विकथादोष.

८ हास्यदोष. सामायिकमां कोइनी हांसी मश्करी करे ते हास्यदोष.

९ अशुद्धदोष. सामायिकमां सूत्रपाठ न्यूनाधिक अने अशुद्ध बोले ते अशुद्धदोष.

१० मुणमुणदोष. गडबडगोटाथी सामायिकमां सूत्रपाठ बोले जे पोते पण पुरुं मांड समजी शके ते मुणमुणदोष.

ए वचनना दश दोष कह्या; हवे कायाना बार दोष कहुं छउं.

१ सामायिकमां पगपर पग चढावी बेसे ए गुर्वादिकनुं अविनयरुपआसन माटे ए पहेलो अयोग्य आसन दोष.

२ चलासन दोष. डगडगते आसने बेसी सामायिक करे. अथवा वारंवार ज्यांथी उठवुं पडे तेवे आसने बेसे ए चलासन दोष.

३ चलद्रष्टिदोष. कार्योत्सर्गमां आंखो चंचळ राखे ए चलद्रष्टि दोष.

४ सावद्यक्रिया दोष. सामायिकमां कंइ पाप क्रिया के तेनी संज्ञा करे ते सावद्यक्रिया दोष.

५ आलंबनदोष. भींतादिके ओठींगण दइ बेसे एथी ज्यां बेठेला जंतु आदिकनो नाश अने प्रमाद थाय. ते आलंबन दोष.

६. आकुंचनप्रसारणदोष. हाथ पग संकोचे, लांबा करे ए आदि ते आकुंचनप्रसारणदोष.

७ आलसदोष. अंग मरडे; टचाका वगाडे ए आदि ते आलस दोष.

८ मोटनदोष. आंगळी वगेरे वांकी करे टचाका वगाडे ते मोटनदोष.

९ मलदोष. घरडा घरड करी सामायिकमां चल करी मेल खेरे ते मल दोष;

१० विमासणदोष. गळामां हाथ नांखी बेसे इ० ते विमासण दोष.

११ निद्रादोष. सामायिकमां उंघ आववी ते निद्रा दोष.

१२ वस्त्रसंकोचन. सामायिकमा टाढ प्रमुखनी भीतिथी वस्त्रथी शरीर संकोचे ते.

ए बत्रिश दूषणरहित सामायिक करवी. पांच अतिचार टाळवां.

शिक्षापाठ ३९ सामायिकविचार भाग ३.

एकाग्रता अने सावधानी विना ए बत्रीश दोषमांनो अमुक दोष पण आवी जाय छे. विज्ञानवेत्ताओए सामायिकनुं जघन्य प्रमाण बे घडीनुं बांध्युं छे. ए वृत्त सावधानी पूर्वक करवाथी परमशांति आपे छे. केटलाकंनो ए बे घडीनो काळ, ज्यारे जतो नथी त्यारे तेओ बहु कंटाळे छे. सामायिकमां नवराश लइने बेसवाथी काळ जाय पण क्यांथी ? आधुनिक काळमां सावधानीथी सामा-

यिक करनारा बहुज थोडा छे. प्रतिक्रमणुं सामायिकनी साथे करवानुं होय छे त्यारे तो वखत जवो सुगम पडे छे. जो के एवा पामरो प्रतिक्रमणुं लक्ष पूर्वक करी शकता नथी तोपण केवळ नवराश करतां एमां जरुर कंइक फेर पडे छे सामायिक पण पुरुं जेओने आवडतुं नथी तेओ विचारा सामायिकमां पछी बहु मुंझाय छे. केटलाक भारे कर्मियो ए अवसरमां व्यवहारना प्रपंचो पण घडी राखे छे आथी सामायिक बहु दोषित थाय छे.

विधिपूर्वक सामायिक न थाय ए बहु खेदकारक अने कर्मनी बाहुल्यता छे. साठघडीनां अहोरात्र व्यर्थ चाल्या जायछे असंख्यातां दीवसथी भरेलां अनंता कालचक्र व्यतित करतां पण जे सार्थक न थयुं ते बेघडीनी विशुद्ध सामायिक सार्थक करेछे. लक्षपूर्वक सामायिक थवा माटे सामायिकमां प्रवेश कर्या पछी चार लोगस्सथी वधारे लोगस्सनो कायोत्सर्ग करी चित्तनी कंइक स्वस्थता आणवी पछी सूत्रपाठ के उत्तम ग्रथनुं मनन करवुं, वैराग्यनी उत्तम काव्यो बोलवीं;पाछळनुं अध्ययन करेलुं स्मरण करी जवुं नूतन अभ्यास थाय तो करवो. कोइने शास्त्राधारथी बोध आपवो; एम सामायिकी काळ व्यतित करवो. मुनिराजनो जो समागम होयतो आगमवाणी सांभळवी अने ते मनन करवी; तेम न होय अने शास्त्रपरिचय न होय तो विचक्षण अभ्यासी पासेथी वैराग्यबोधक कथन श्रवण करवुं; किंवा कंइ अभ्यास करवो. ए सघळी योग-

वाइ न हांयतो केटलोक भाग लक्षपूर्वक कायोत्सर्गमां रोकवो; अने केटलोक भाग महापुरुषोनां चरित्रकथामां उपयोगपूर्वक रोकवो; परंतु जेम बने तेम विवेकथी अने उत्साहथी सामायिकीकाळ व्यतित करवो. कंइ साहित्य न होयतो पंच परमेष्टिमंत्रनो जापज उत्साहपूर्वक करवो. पण व्यर्थ काळ काढी नाखवो नहीं. धीरजथी, शांतिथी अने यत्नाथी सामायिक करवु. जेम बने तेम सामायिकमां शास्त्रपरिचय वधारवो.

साठघडीना वखतमांथी बेघडी अवश्य बचावी सामायिकतो सद्भावथी करवुं.

शिक्षापाठ ४० प्रतिक्रमण विचार.

प्रतिक्रमण एटले सामुं जवं.—स्मरण करी जवुं. फरीथी जोई जवुं एम एनो अर्थ थई शकेछे. जे दीवसे जे वखते प्रतिक्रमण करवा बेठा;ते वखतनी अगाउ ते दीवसे जे जे दोष थयाछे ते एक पछी एक जोई जवा अने तेनो पश्चाताप करवो के दोषनुं स्मरण करी जवुं; वगेरे सामान्य अर्थ पण छे.

उत्तम मुनियो अने भाविक श्रावको संध्याकाळे अने रात्रिना पाछळना भागमां दीवसे अने रात्रे एम अनुक्रमे थयेला दोषनो पश्चाताप के क्षमापना इच्छेछे एनुं नाम अहीं आगळ प्रतिक्रमण छे. ए प्रतिक्रमणुं आपणे पण अवश्य करवुं. कारण आ आत्मा मन, वचन अने कायाना

योगथी अनेक प्रकारनां कर्म बांधेछे. प्रतिक्रमण सूत्रमां एनुं दोहन करेलुं छे; जेथी दीवस रात्रमां थयेलां पापनो पश्चाताप ते वडे थई शकेछे. शुद्धभाव वडे करी पश्चाताप करवाथी लेश पाप थतां परलोकभय अने अनुकंपा छूटेछे; आत्मा कोमळ थायछे. त्यागवा योग्य वस्तुनो विवेक आवतो जायछे. भगवन् साक्षीए अज्ञान ई. जे जे दोष विस्मरण थया होय तेनो पश्चाताप पण थई शकेछे. ए निर्जरा करवानुं उत्तम साधन छे.

एनुं आवश्यक एवुं पण नाम छे आवश्यक एटले अवश्य करीने करवा योग्य; ए सत्य छे. ते वडे आत्मानी मलिनता खसेछे माटे अवश्य करवा योग्यजछे.

सांयकाळे जे प्रतिक्रमणुं करवामां आवेछे तेनुं नाम देवसी पडिक्कमणुं एटले दीवससंबंधी पापनो पश्चाताप अने रात्रिना पाछला भागमां जे प्रतिक्रमणुं करवामां आवेछे ते रायसी पडिक्कमणुं कहेवाय छे. देवसी अने रायसी ए प्राकृत भाषाना शब्दो छे. पखवाडीए करवानुं प्रतिक्रमणुं ते पाक्षिक अने संवत्सरे करवानुं ते संवत्सरी कहेवाय छे. सत्पुरूषोए योजनाथी बांधेलो ए सुंदर नियम छे.

केटलाक सामान्य बुद्धिमानो एम कहेछे के दीवस अने रात्रीनुं सवारे पायश्चितरुप प्रतिक्रमणुं कर्युं होय तो कंइ खोटुं नथी, परंतु ए कहेवुं प्रमाणिक नथी. रात्रिये अकस्मात् अमुक कारण के काळधर्म थइ पडे तो दीवस संबंधी पण रही जाय.

प्रतिक्रमणसूत्रनी योजना बहु सुंदर छे. एनां मूळतत्त्व बहु उत्तम छे. जेम बने तेम प्रतिक्रमणुं धीरजथी, समजाय एवी भाषाथी. शांतिथी, मननी एकाग्रताथी अने यत्नापूर्वक करवुं.

शिक्षापाठ ४१ भीखारीनो खेद भाग १

एक पामर भीखारी जंगलमां भटकतो हतो त्यां तेने भूख लागी. एटले ते बिचारो लडथडीआं खातो खातो एक नगरमां एक सामान्य मनुष्यने घेर पहोंच्यो; त्यां जइने तेणे अनेक प्रकारनी आजीजी करी; तेना कालावालाथी करुणा पामीने ते गृहस्थनी स्त्रिए तेने घरमांथी जमतां वधेलुं मिष्टान्न भोजन आणी आप्युं. भोजन मळवाथी भीखारी बहु आनंद पामतो पामतो नगरनी बहार आव्यो, आवीने एक झाड तळे बेठो; त्यां जरा स्वच्छ करीने एक बाजुए पोतानो अति जूनो थयेलो पोतानो जळनो घडो मूक्यो. एक बाजुए पोतानी फाटीतुटी मलीन गोदडी मूकी अने एक बाजुए पोते ते भोजन लइने बेठो. राजी राजी थतां एणे ते भोजन खाइने पुरुं कर्युं. ओशिके पछी एक पथ्थर मूकीने ते सुतो. भोजनना मदथी जरावारमां तेनी आंखो मिंचाइ गइ. निद्रावश थयो एटले तेने एक स्वप्नुं आव्युं. पोते जाणे महा राजरीद्धिने पाम्यो छे; सुंदर वस्त्राभूषण धारण कर्यां छे. देश आखामां पोतानो विजयनो डंको वागी गयो छे समीपमां तेनी आज्ञा अवलंबन क-

रवा अनुचरो उभा थइ रह्या छे; आजुबाजु छडीदारो खमा खमा पोकारेछे;एक रमणिय महेलमां सुंदर पलंगपर तेणे शयन कर्युंछे; देवांगना जेवी स्त्रियो तेना पग चांपेछे; पंखार्थी एकबाजुएथी पंखानो मंद मंद पवन ढोळाय छे;एवा स्वप्नामां तेनो आत्मा चढी गयो. ते स्वप्नना भोग लेतां तेनां रोम उल्लसी गयां. एवामां मेघ महाराजा चढी आव्या; वीजळीना झबकारा थवा लाग्या. सूर्यदेव वादळांथी ढंकाइ गयो; सर्वत्र अंधकार पथराइ गयो; मुशलधार वर्षाद थशे एवुं जणायुं अने एटलामां गाजवीजथी एक प्रबळ कडाको थयो. कडाकाना अवाजथी भय पामीने ते पामर भीखारी विचारो जागी गयो.

शिक्षापाठ ४२ भीखारीनो खेद भाग २.

जुए छे तो जे स्थळे पाणीनो खोखरो घडो पड्यो हतो ते स्थळे ते घडो पड्यो छे ज्यां फाटी टुटी गोदडी पडी हती; त्यांज ते पडी छे. पोते जेवां मलीन अने गोख जाळीवाळां कपडां धारण कर्यां हतां तेवां ने तेवां शरीर उपर ते वस्त्रो बिराजे छे, नथी तल्भार वध्युं के नथी जवभार घस्युं. नथी ते देश के नथी ते नगरी, नथी ते महेल के नथी ते पलंग; नथी ते चामरछत्र धरनारा के नथी ते छडीदारो; नथी ते स्त्रियो के नथी ते वस्त्रालंकारो; नथी ते पंखा के नथी ते पवन; नथी ते अनुचरो के

नथी ते आज्ञा; नथी ते सुख विलास के नथी ते मदोन्मत्तता; भाइ तो पोते जेवा हता तेवाने तेवा देखाया. एथी ते देखाव जोइने ते खेद पाम्यो. स्वप्नामां में मिथ्या आडंबर दीठो तेथी आनंद मान्यो; एमांनुं तो अहीं कशुंए नथी. स्वप्नांना भोग भोगव्या नहीं अने तेनुं परिणाम जे खेद ते हुं भोगवुं छउं. एम ए पामर जीव पश्चात्ताप मां पडी गयो.

अहो भव्यो! भीखारीनां स्वप्नां जेवां संसारनां सुख अनित्य छे. स्वप्नांमां जेम ते भीखारीए सुख समुदाय दीठा अने आनंद मान्यो तेम पामर प्राणीओ संसार स्वप्नना सुख समुदायमां आनंद माने छे. जेम ते सुख समुदाय जागृतिमां मिथ्या जणाया तेम ज्ञान प्राप्त थतां संसारनां सुख तेवां जणाय छे. स्वप्नानां भोग न भोगव्या छतां जेम भीखारीने खेदनी प्राप्ति थइ. तेम मोहांध प्राणीओ संसारनां सुख मानी बेसे छे; अने भोगव्या सम गणे छे. परंतु परिणामे खेद, दुर्गति अने पश्चाताप ले छे. चपळ अने विनाशी छतां स्वप्नानां खेद जेवुं परिणाम रह्युं छे. ए उपर बुद्धिमान पुरुषो आत्महितने शोधे छे. संसारनी अनित्यतापर एक काव्य छे के.--

---

उपजाति.

विद्युतलक्ष्मी प्रभुता पतंग;
आयुष्य तेतो जळना तरंग;

पुरंदरी चाप अनंगरंग;
शुं राचिये त्यां क्षणनो प्रसंग !

विशेषार्थः—लक्ष्मी विजळी जेवी छे. वीजळीनो झबकार जेम थइने ओलवाइ जायछे, तेम लक्ष्मी आवीने चाली जाय छे. अधिकार पतंगना रंग जेवोछे, पतंगनो रंग जेम चार दिवसनी चटकी छे; तेम अधिकार मात्र थोडो काळ रही हाथमांथी जतो रहे छे. आयुष्य पाणीना मोजां जेवुं छे. पाणीनो हिलोळो आव्यो के गयो तेम जन्म पाम्या अने एक देहमां रह्या के न रह्या त्यां बीजा देहमां पडवुं पडेछे. कामभोग आकाशमां उत्पन्न थतां इंद्रना धनुष्य जेवा छे, जेम इंद्र धनुष्य वर्षाकाळमां थइने क्षणवारमां लय थई जायछे; तेम योवनमां कामना विकार फळिभूत थई जरा वयमां जता रहे छे; टुंकामां हे जीव ! ए सघळी वस्तुओनो संबंध क्षणभर छे; एमां प्रेमबंधननी सांकळे बंधाईने शुं राचवुं? तात्पर्य ए सघळां चपळ अने विनाशी छे, तुं अखंड अने अविनाशी छे; माटे तारा जेवी नित्य वस्तुने प्राप्त कर! ए बोध यथार्थ छे.

शिक्षापाठ ४३ अनुपम क्षमा.

क्षमा ए अंतर्शत्रु जीतवामां खड्गछे.पवित्र आचारनी रक्षा करवामां बख्तर छे. शुद्धभावे असह्य दुःखमां, समपरिणामथी क्षमा राखनार मनुष्य भवसागर तरी जाय छे.

कृष्ण वासुदेवना राजकुमार नामना नाना भाइ महा-सुरूपवान, सुकुमार मात्र बारवर्षनी वये भगवान् नेमना-थनी पासेथी संसारत्यागी थइ स्मशानमां उग्र ध्यानमां रह्या हता. त्यारे तेओ एक अद्भुत क्षमामय चरित्रथी महा-सिद्धिने पामी गया ते अहीं कहुं छउं.

सोमल नामना ब्राह्मणनी सुरूपवर्णसंपन्न पुत्रि वेरे गजसुकुमारनुं सगपण कर्युं हतुं. परंतु लग्न थया पहेलां गजसुकुमार तो संसारत्यागी गया. आथी पोतानी पुत्रिनुं सुख जवाना द्वेषथी ते सोमल ब्राह्मणने भयंकर क्रोध व्याप्यो गजसुकुमारनो शोध करतो करतो ए स्मशानमां ज्या महामुनि गजसुकुमार एकाग्र विशुद्ध भावथी कायोत्सर्गमां छे. त्यां आवी पहोंच्यो. कोमळ गजसुकुमारना माथापर चीकणी माटीनी वाड करी; अने अंदर धखधखता अंगारा भर्या, इंधन पूर्युं एटले महा ताप थयो. एथी गजसुकुमारनो कोमळदेह बळवा मंड्यो एटले ते सोमल जतो रह्यो. ए वेळा गजसुकुमारनां असह्य दुःखमां कहेवुं पण शुं होय? परंतु त्यारे ते समभावपरिणाममां रह्या. किंचित् क्रोध के द्वेष उत्पन्न एना हृदयमां जन्म पाम्यो नहीं. पोताना आत्माने स्थितिस्थापक करीने बोध दीधो के जो! तुं एनी पुत्रिने परण्यो होत तो ए कन्यादानमां तने पाघडी आपत ए पाघडी थोडा वखतमां फाटी जाय तेवी अने परिणामे दुःखदायक थात. आ एनो बहु उपकार

थयो के ए पाघडी बदल एणे मोक्षनी पाघडी बंधावी. एवां विशुद्ध परिणामथी अडग रही सम्भावथी ते असह्य वेदना सहीने सर्वज्ञ सर्वदर्शि थई अनंत जीवनने पाम्या. केवी अनुपम क्षमा अने केवुं तेनुं सुंदर परिणाम! तत्वज्ञानीओनां वचनछे के आत्मा मात्र स्वसद्भावमां आववो जोइए; अने ते आव्यो तो मोक्ष हथेळीमांज छे. गजसुकुमारनी नामांकित क्षमा केवो विशुद्ध बोध करेछे!

शिक्षापाठ ४४ राग.

श्रमण भगवन् महावीरना अग्रेसर गणधरगौतमनुं नाम तमे बहुवार वांच्युंछे. गौतमस्वामीना बोधेला केटलाक शिष्यो केवळज्ञान पाम्या छतां गौतम पोते केवळज्ञान पामता नहोता, कारण-भगवन् महावीरनां अंगोपांग, वर्ण, वाणीरुप इत्यादिकपर हजु गौतमने मोहिनी हती. निग्रंथ प्रवचननो निष्पक्षपाती न्याय एवो छे के गमे ते वस्तुपरनो राग दुःखदायकछे. राग ए मोहिनी अने मोहिनी ए संसारज छे. गौतमनां हृदयथी ए राग ज्यां सुधी खस्यो नहीं त्यां सुधी तेओ केवळज्ञान पाम्या नहीं. पछी श्रमण भगवन् ज्ञातपुत्र ज्यारे अनुपमेय सिद्धिने पाम्या, त्यारे गौतम नगरमांथी आवता हता. भगवानना निर्वाण समाचार सांभळी तेओ खेद पाम्या. विरहथी तेओ अनुराग वचनथी बोल्या.हे महावीर! तमे मने साथे तो न लीधो परंतु संभार्योए नहीं! मारी प्रीति सामुं तमें द्रष्टि पण करी

नहीं: आम नमने छाजतुं नहोतुं. एवा तरंगो करतां करतां तेनुं लक्ष फर्युं ने निरागश्रेणिए चढ्या हुं बहु मूर्खता करुं छउं. ए वितराग–निर्विकारी अने निरागी ते मारामां केम मोहिनी राखे; एनी शत्रु अने मित्रपर केवळ समान दृष्टि हती; हुं ए निरागीनो मिथ्या मोह राखुं छउं. मोह संसारनुं प्रबळ कारण छे; एम विचारतां विचारतां तेओ शोक तजीने निरागी थया. एटले अनंतज्ञान प्रकाशित थयुं; अने प्रांते निर्वाण पधार्या.

गौतममुनिनो राग आपणने बहु सूक्ष्म बोध आपेछे. भगवतपरनो मोह गौतम जेवा गणधरने दुःखदायक थयो तो पछी संसारनो, ते वळी पामर आत्माओनो मोह केवुं अनंत दुःख आपतो हशे ! संसाररूपी गाडीने राग अने द्वेष ए बे रूपी बळद छे. ए न होय तो संसारनुं अटकन छे. ज्यां राग नथी त्यां द्वेष नथी; आ मान्य सिद्धांत छे. राग तिव्र कर्मबंधननुं कारण छे; एना क्षयथी आत्मसिद्धि छे.

शिक्षापाठ ४५ सामान्य मनोर्थ.

सवैया.

मोहिनिभावविचार अधीन थइ,
ना निरखुं नयने परनारी;
पत्थरतुल्य गणुं परवैभव,
निर्मळ तात्त्विक लोभ समारी !

द्वादश वृत्त अने दिनता धरि,
सात्विक थाउं स्वरुप विचारी;
ए मुजनेम सदा शुभ क्षेमक,
नित्य अखंड रहो भवहारी. १
ते त्रिशलातनये मन चिंतवि,
ज्ञान विवेक विचार वधारुं;
नित्य विशोध करी नव तत्वनो,
उत्तम बोध अनेक उच्चारुं;
संशय बीज उगे नहिं अंदर,
जे जिननां कथनो अवधारुं.
राज्य सदा मुज एज मनोरथ,
धार, थशे अपवर्ग, उतारु. २

शिक्षापाठ ४६ कपिलमुनि भाग १.

कोसंबी नामनी एक नगरी हती; त्यांना राजदरबारमां राज्यनां आभूषणरुप काश्यप नामनो एक शास्त्री रहेतो हतो. एनी स्त्रिनुं नाम श्रीदेवी हतुं; तेना उपरथी कपिल नामनो एक पुत्र जन्म्यो हतो; ते पंदर वर्षनो थयो त्यारे तेना पिता परधाम गया. कपिल लाडपालमां उछरेलो होवाथी कंइ विशेष विद्वता पाम्यो नहोतो; तेथी एना पितानी जगो कोइ बीजा विद्वानने मळी; काश्यपशास्त्री जे पुंजी कमाइ गयां हता ते कमावामां अशक्त एवा कपिले खाइने पुरी करी. श्रीदेवी एक दीवस घरनां

बारणामां उभी हती त्यां बे चार नोकरो सहित पोताना पतिनी शास्त्रिय पद्वि पामेलो विद्वान जतो तेना जोवामां आव्यो. घणां मानथी जनो आ शास्त्रीने जोइने श्रीदेवीने पोतानी पूर्व स्थितिनुं स्मरण थइ आव्युं. ज्यारे मारा पति आ पद्विपर हता त्यारे हुं केवुं सुख भोगवती हती ? ए मारूं सुखतो गयुं परंतु मारा पुत्र पण पुरूं भण्यो नहीं. एम विचारमां डोलता डोलतां तेनी आंखमांथी दड दड आंसु खरवा मंड्यां. एवामां फरतो फरतो कपिल त्यां आवी पहोंच्यो, श्रीदेवीने रडती जोइ तेनुं कारण पछ्युं कपिलना बहु आग्रहथी श्रीदेवीए जे हतुं ते कही बताव्युं. पछी कपिल बोल्यो. जो मा ! हुं बुद्धिशाळी छउं, परतु मारी बुद्धिनो उपयोग जेवो जोइए तेवो थइ शक्यो नथी. एटले विद्यावगर हुं ए पद्वि पाम्यो नहीं. तुं कहे त्यां जइने हवे हुं माराथी बनती विद्या साध्य करूं, श्रीदेवीए खेद साथे कह्युं, ए ताराथी बनी शके नहीं. नहीं तो आर्यावर्त्तनी मर्यादापर आवेली सावरथी नगरीमां इंद्रदत्त नामनो तारा पितानो मित्र रहेछे, ते अनेक विद्यार्थियोने विद्यादान देछे; जो ताराथी त्यां जवाय तो धारेली सिद्धि थाय खरी. एक बे दीवस रोकाइ सज थइ अस्तु कही कपिलजी पंथे पळ्या.

अवध वीततां कपिल सावरथीए शास्त्रिजीने घेर आवी पहोंच्या. प्रणाम करीने पोतानो इतिहास कही बताव्यो. शास्त्रीजीए मित्रपुत्रने विद्यादान देवाने माटे

બહુ આનંદ દેખાડયો; પણ કપિલ આગળ કંઇ પુંજી નહોતી કે તે તેમાંથી ખાય અને અભ્યાસ કરી શકે એથી કરીને તેને નગરમાં યાચવા જવું પડતું હતું. યાચતાં યાચતાં બપોર થઇ જતા હતા, પછી રસોઇ કરે અને જમે ત્યાં સાંજનો થોડો ભાગ રહેતો હતો. એટલે કંઇ અભ્યાસ કરી શકતો નહોતો. પંડિતે તેનું કારણ પૂછયું ત્યારે કપિલે તે કહી બતાવ્યું. પંડિત તેને એક ગૃહસ્થ પાસે તેડી ગયા. એને હમેશાં ભોજન મળે એવી ગોઠવણ એક વિધવા બ્રાહ્મણીને ત્યાં તે ગૃહસ્થે કપિલની અનુકંપા ખાતર કરી દીધી. જેથી કપિલને એ એક ચિંતા ઓછી થઇ.

શિક્ષાપાઠ ૪૭ કપિલમુનિ ભાગ ૨.

એ નાની ચિંતા ઓછી થઇ ત્યાં બીજી મોટી જંજાળ ઉભી થઇ. ભદ્રિક કપિલ હવે યુવાન થયો હતો; અને જેને ત્યાં તે જમવા જતો તે વિધવા બાઇ પણ યુવાન હતી. તેની સાથે તેના ઘરમાં બીજું કોઇ માણસ નહોતું. હમેશનો પરસ્પરનો વાતચિતનો સંબંધ વધ્યો. વધીને હાસ્યવિનોદરૂપે થયો; એમ કરતાં કરતાં બન્નેને પ્રીતિ બંધાઇ કપિલ તેનાથી લુબ્ધાયો! એકાંત બહુ અનિષ્ટ ચીજછે!!

વિદ્યા પ્રાપ્ત કરવાનું તે ભૂલી ગયો. ગૃહસ્થ તરફથી મળતાં સીધાંથી બન્નેનું માંડ પુરું થતું હતું; પણ લૂગડાં લતાના વાંધા થયા. ગૃહસ્થાશ્રમ માંડી બેઠાં જેવું કપિલે કરી મૂક્યું. ગમે તેવો છતાં હળુ કર્મી જીવ હોવાથી

संसारनी विशेष लोताळनी तेने माहिती पण नहोती. एथी पैसा केम पेदा करवा ते बिचारो ते जाणतो पण नहोतो. चंचळ स्त्रिये तेने रस्तो बनाव्यो के मुझावामां कंइ वळवानुं नथी; परंतु उपायथी सिद्धि छे. आ गामना राजानो एवो नियम छे के सवारमां पहेलो जइ जे ब्राह्मण आशिर्वाद आपे तेने ते बे मासा सोनुं आपेछे. त्यां जो जइ शको अने प्रथम आशिर्वाद आपी शको तो ते बे मासा सोनुं मळे. कपिले ए वातनी हा कही. आठ दीवस सुधी आंटा खाधा पण वखत वीत्या पछी जाय एटले कंइ वळे नहीं. एथी तेणे एक दीवस एवो निश्चय कर्यो के जो हुं चोकमां सुउंतो चीवट राखीने उठाशे. पछी ते चोकमां सुतो; अधरात भांगतां चंद्रनो उदय थयो. कपिले प्रभात समिप जाणीने मुठीओ वाळीने आशिर्वाद देवा माटे दोडतां जवा मांड्युं. रक्षपाळे चोर जाणीने तेने पकडी राख्यो. एक करतां बीजुं थइ पड्युं. प्रभात थयो एटले रक्षपाळे तेने लइ जइने राजानी समक्ष उभो राख्यो कपिल बेभान जेवो उभो रह्यो, राजाने तेनां चोरनां लक्षण भाश्यां नहीं. एथी तेने सघळुं वृत्तांत पुछ्युं. चंद्रना प्रकाशने सूर्यसमान गणनारनी भद्रिकतापर राजाने दया आवी. तेनी दरिद्रता टाळवा राजानी इच्छा थइ एथी कपिलने कह्युं; आशिर्वादने माटे थइ तारे जो एटलीबधी तरखड थइ पडीछे तो हवे तारी इच्छा पूरतुं तुं मागी ले. हुं तने आपीश. कपिल थोडीवार मुढ जेवो रह्यो. एथी

राजाए कह्युं केम विप्र, कंइ मागता नथी? कपिले उत्तर आप्यो. मारुं मन हजु स्थिर थयुं नथी; एटले शुं मागवुं ते सूझतुं नथी. राजाए सामेना बागमां जइ त्यां बेसीने स्वस्थतां पूर्वक विचार करी कपिलने मागवानुं कह्युं. एटले कपिल ते बागमां जइने विचार करवा बेठो.

शिक्षापाठ ४८ कपिलमुनि भाग ३.

बे मासा सोनुं लेवानी जेनी इच्छा हती ते कपिल हवे तृष्णातरंगमां घसडायो. पांच महोर मागवानी इच्छा करी तो त्यां विचार आव्यो के पांचथी कंइ पुरुं थनार नथी. माटे पंचवीश महोर मागवी. ए विचार पण फर्यो. पंचवीश महोरथी कंई आखुं वर्ष उतराय नहीं माटे सो महोर मागवी; त्यां वळी विचार फर्यो. सो महोरे बे वर्ष उतरी, वैभव भोगवी पाछो दुःखनां दुःख. माटे एक हजार महोरनी याचना करवी ठीक छे; पण एक हजार महोरे छोकरां छैयांनां बेचार खर्च आवे के एवुं थाय तो पुरुं पण शुं थाय? माटे दश हजार महोर मागवी; के जेथी जींदगी पर्यंत पण चिंता नहीं. त्यां वळी इच्छा फरी. दश हजार महोर खवाई जाय एटले पछी मुडी वगरना थई रहेवुं पडे. माटे एक लाख महोरनी मागणी करुं के जेना व्याजमां बधा वैभव भोगवुं. पण जीव! लक्षाधिपति तो घणाय छे.एमां आपणे नामांकित क्यांथी थवाना? माटे करोड महोर मांगवी के जेथी महान् श्रीमंतता कहेवाय.

वळी पाछो रंग फर्यो. महान् श्रीमंतताथी पण घेर अमल कहेवाय नहीं माटे राजानुं अर्धुं राज्य मागवुं; पण जो अर्धुं राज्य मांगीश तोय राजा मारा तुल्य गणाशे. अने वळी हुं एनो याचक पण गणाइश. माटे मागवुं तो आखुं राज्य मागवुं. एम ए तृष्णामां डुब्यो; परंतु तुच्छ संसारी एटले पाछो वळ्यो भला जीव! आपणे एवी कृतघ्नता शा माटे करवी पडे के जे आपणने इच्छा प्रमाणे आपवा तत्पर थयो तेनुंज राज्य लई लेवुं; अने तेनेज भ्रष्ट करवो! खरुं जोतां तो एमां आपणीज भ्रष्टता छे. माटे अर्धुं राज्य मागवुं; परंतु ए उपाधिए मारे नथी जोइती? त्यारे नाणांनी उपाधि पण क्यां ओछी छे? माटे करोड लाख मूकीने सो बसें महोरज मागी लेवी. जीव, सो बसें महोर हमणां आवशे तो पछी विषयवैभवमांज वखत चाल्यो जशे; अने विद्याभ्यास पण धर्यो रहेशे; माटे पांच महोर हमणां तो लई जवी पछीनी वात पछी. अरे! पांच महोरनीए हमणां कंइ जरूर नथी; मात्र बे मासा सोनुं लेवा आव्यो हतो तेज मागी लेवुं. आ तो जीव बहु थइ. तृष्णासमुद्रमां तें बहु गळका खाधां. आखुं राज्य मांगतां पण तृष्णा छीपती नहोती. मात्र संतोष अने विवेकथी ते घटाडी तो घटी. ए राजा जो चक्रवर्त्ति होत तो पछी हुं एथी विशेष शुं मांगी शकत? अने विशेष ज्यां सुधी न मळत त्यांसुधी मारी तृष्णा समात पण नहीं; ज्यां सुधी तृष्णा समात नहीं त्यां सुधी हुं सुखी पण नहोत. एटलेथी ए

मारी तृश्ना टळे नहीं तो पछी बे मासाथी करीने क्यांथी टळे? एनो आत्मा सवळीए आव्यो अने ते बोल्यो हवे मारे ए बे मासानुं पण कंई काम नथी. बे मासाथी वधीने हुं केटले सुधी पहोंच्यो! सुख तो संतोषमांज छे. तृश्ना ए संसार वृक्षनुं बीज छे. एनो हे जीव, तारे शुं खपछे! विद्या लेतां तुं विषयमां पडी गयो; विषयमां पडवाथी आ उपाधिमां पड्यो; उपाधि वडे करीने अनंत तृश्ना समुद्रना तरंगमां तुं पडयो. एक उपाधिमांथी आ संसारमां एम अनंत उपाधि वेठवी पडेछे. एथी एनो त्याग करवो उचितछे. सत्यसंतोष जेवुं निरुपाधि सुख एके नथी. एम विचारतां विचारतां—तृश्ना समाववाथी ते कपिलनां अनेक आवरण क्षय थया. तेनुं अंतःकरण प्रफुल्लित अने बहु विवेकशील थयुं. विवेकमां ने विवेकमां उत्तम ज्ञानवडे ते स्वात्मनो विचार करी शक्यो. अपूर्वश्रेणिए चढी ते कैवल्यज्ञानने पाम्यो कहेवाय छे.

तृश्ना केवी कनिष्ट वस्तु छे! ज्ञानीओ एम कहेछे के तृश्ना आकाशना जेवी अनंत छे; निरंतर ते नव यौवन रहेछे. चाहना जेटलुं मळ्युं एटले चाहनाने वधारी देछे. संतोष एज मात्र कल्पवृक्ष छे. अने एज मात्र मनोवांछितता पूर्ण करे छे.

कपिल मुनिनुं आ चरित्र मात्र कथारुप छे; ते कंई इतिहासरुपे मळ्युं नथी.



शिक्षापाठ ४९ तृष्णानी विचित्रता.

मनहर छंद.

(एक गरीबनी वधती गयेली तृष्णा.)

हती दीनताइ त्यारे ताकी पटलाइ अने,
मळी पटेलाइ त्यारे ताकी छे शेठाइने;
सांपडी शेठाइ त्यारे ताकी मंत्रिताइअने,
आवी मंत्रिताइ त्यारे ताकी नृपताइने;
मळी नृपताइ त्यारे ताकी देवताइअने,
दीठी देवताइ त्यारे ताकी शंकराइने,
अहो राज्यचंद्रमानो मानो शंकराइ मळी (!)
वधे तृशनाइ तोय जाय न मराइने. १

(२)

करोचली पडी दाढी डाचांतणो दाट वळ्यो,
काळी केशपटी विषे, श्वेतता छवाइ गइ;
सूंघवुं सांभळवुंने देखवुं ते मांडी वळ्युं,
तेम दांत आवली ते, खरी, के खवाइ गइ;
वळी केड वांकी हाड गयां अंगरंग गयो,
उठवानी आय जतां लाकडी लेवाइ गइ;
अरे ! राज्यचंद्र एम, युवानी हराइ पण,
मनथी न तोय रांड, ममता मराइ गइ. २

(३)

करोडोनां करजनां, शीरपर डंका वागे,

रोगथी रुंधाइ गयुं, शरीर सूकाइने;
पुरपति पण माथे, पीडवाने ताकी रह्यो,
पेट तणी वेठ पण, शके न पुराइने;
पितृ अने परणी ते, मचावे अनेक धंध,
पुत्र, पुत्री भाखे खाउं खाउं दुःखदाइने,
अरे राज्यचंद्र तोय जीव झावा दावा करे,
जंजाळ छडाय नहीं तजी तृशनाइने. ३

(४)

थइ क्षीण नाडी अवाचक जेवो रह्यो पडी,
जीवन दीपक पाम्यो केवळ झंखाइने,
छेल्ली इसे पड्यो भाळी भाइए त्यां एम भाख्युं,
हवे टाढी माटी थाय तो तो ठीक भाइने;
हाथने हलावी त्यां तो खीजी बुढे सूचव्युं ए,
बोल्या विना बेश बाळ तारी चतुराइने!
अरे राज्यचंद्र देखो देखो आशापास केवो!
जतां गइ नहीं डोशे ममता मराइने! ४

शिक्षापाठ ५० प्रमाद.

धर्मनी अनादरता, उन्माद, आळस, कषाय ए सघळां प्रमादनां लक्षण छे.

भगवाने उत्तराध्ययन सूत्रमां गौतमने कह्युं के हे गौतम मनुष्यनुं आयुष्य डाभनी अणीपर पडेला जळनां बिंदु जेवुं छे. जेम ते बिंदुने पडतां वार लागती नथी तेम

आ मनुष्यायु जतां वार लागती नथी. ए बोधनी काव्यमां चोथी कडी स्मरणमां अवश्य राखवा जेवी छे 'समयं गोयम मा पमाए' ए पवित्र वाक्यना बे अर्थ थायछे. एक तो हे गौतम ! समय एटले अवसर पामीने प्रमाद न करवो अने बीजो एके मेषानुमेषमां चाल्या जता असंख्यातमा भागनो जे समय कहेवायछे तेटलो वखत पण प्रमाद न करवो. कारण देह क्षणभंगुरछे; काळशीकारी माथे धनुष्यबाण चढावीने उभो छे. लीधो के लेशे एम जंजाळ थइ रही छे; त्यां प्रमादथी धर्म कर्त्तव्य करवुं रही जशे.

अति विचिक्षण पुरुषो संसारनी सर्वोपाधि त्यागीने अहो रात्र धर्ममां सावधान थायछे, पळनो पण प्रमाद करता नथी. विचक्षण पुरुषो अहो रात्रना थोडा भागने पण निरंतर धर्मकर्त्तव्यमां गाळेछे; अने अवसरे अवसरे धर्मकर्त्तव्य करता रहेछे. पण मूढ पुरुषो निद्रा, अहार, मोजशोख अने विकथा तेमज रंगरागमां आयु व्यतित करी नाखेछे. एनुं परिणाम तेओ अधोगति रुप पामेछे.

जेम बने तेम यत्न अने उपयोगथी धर्मने साध्य करवो योग्य छे. साठघडीनां अहोरात्रमां वीशघडी तो निद्रामां गाळीए छीए. बाकीनी चाळीश घडी उपाधि, टेलटप्पा अने रझळवामां गाळीए छीए. ए करतां ए साठघडीना वखतमांथी बे चारघडी विशुद्ध धर्मकर्त्तव्यने माटे उपयोगमां लइए तो बनी शके एवुं छे; एनुं परिणाम पण केवुं सुंदर थाय !

पळ ए अमूल्य चीज छे; चक्रवर्त्ति पण एकपळ पामवा आखी रिद्धि आपे तो पण ते पामनार नथी. एक पळ व्यर्थ खोवाथी एक भव हारी जवा जेवुंछे.एम तत्वनी द्रष्टि ए सिद्ध छे!

शिक्षापाठ ५१ विवेक एटले शुं?

लघु शिष्योः—भगवन्! आप अमने स्थळे स्थळे कहेता आवो छो के विवेक ए महान् श्रेयस्कर छे. विवेक ए अंधारामां पडेलां आत्माने ओळखवानो दीवो छे. विवेक वडे करीने धर्म टकेछे. विवेक नथी त्यां धर्म नथी तो विवेक एटले शुं? ते अमने कहो.

गुरुः—आयुष्यमन्नो! सत्यासत्यने तेने स्वरुपे करीने समजवां तेनुं नाम विवेक.

लघु शिष्योः—सत्यने सत्य अने असत्यने असत्य कहेवानुंतो बधाय समजे छे. त्यारे महाराज! एओ धर्मनुं मूळ पाम्या कहेवाय?

गुरुः—तुं जे वात कहेछे तेनुं एक दृष्टांत आपो जोइए.

लघु शिष्योः—अमे पोते कडवाने कडवुंज कहीए छीए मधुराने मधुरु कहीए छीए. झेरने झेर ने अमृतने अमृत कहीए छीए.

गुरुः—आयुष्यमन्नो! ए बधा द्रव्य पदार्थ छे; परंतु आत्माने कयि कडवाश, कयि मधुराश कयुं झेर अने क-

युं अमृत छे ए भावपदार्थोनो एथी कंइ परिक्षा थइ शके?

लघुशिष्यः—भगवन ! ए संबंधी तो अमारुं लक्ष पहोंचे ण नथी.

गुरुः—त्यारे एज समजवानुं छे के ज्ञान दर्शन रुप आत्माना सत्य भाव पदार्थने अज्ञान अने अदर्शन रुप असत् वस्तुए घेरी लीधा छे, एमां एटली बधी मिश्रता थइ गइ छे के परिक्षा करवी अति अति दुर्लभ छे, संसारनां सुखो अनंतवार आत्माए भोगव्यां छतां, तेमांथी हजु पण मोहिनी टळी नहीं, अने तेने अमृत जेवां गण्यां ए अविवेक छे. कारण संसार कडवो छे. कडवा विपाकने आपेछे.तेमज वैराग्य जे ए कडवा विपाकनु औषध छे; तेने कडवो गण्यो: आ पण अविवेक छे. ज्ञान दर्शनादिगुणो अज्ञानादर्शने घेरी लइ जे मिश्रता करी नाखी छे ते ओळखी भावअमृतमां आववुं; एनुं नाम विवेक छे. कहो त्यारे हवे विवेक ए केवी वस्तु ठरी !

लघु शिष्यो:—अहो! विवेक एज धर्मनु मूळ अनेधर्म रक्षक कहेवाय छे ते सत्यछे. आत्म स्वरुपने विवेक विना ओळखी शकाय नहीं ए पण सत्यछे. ज्ञान,शील, धर्मतत्व अने तप ए सघळां विवेक विना उदय पामे नहीं ए आपनुं कहेवु यथार्थ छे. जे विवेकी नथी ते अज्ञानी अने मंद छे. तेज पुरुष मतभेद अने मिथ्या दर्शनमां लपटाइ रहे छे. आपनी विवेक संबधानी शिक्षा अमे निरंतर मनन करीशुं.

शिक्षापाठ ५२ ज्ञानीओए वैराग्य शा माटे बोध्यो ?

संसारनां स्वरूप संबंधी आगळ केटलुंक कहेवामां आव्युं छे. ते तमने लक्षमां हशे.

ज्ञानीओए एने अनंत खेदमय, अनंत दुःखमय, अव्यवस्थित, चळविचळ, अने अनित्य कह्योछे. आ विशेषणो लगाडवा पहेलां एमणे संसारसंबंधी संपूर्ण विचार करेलो जणायछे. अनंत भवनुं पर्यटन, अनंतकाळनुं अज्ञान, अनंतजीवननो व्याघात, अनंत मरण, अनंतशोक ए वडे करीने संसारचक्रमां आत्मा भम्या करेछे. संसारनी देखाती इंद्रवारणा जेवी सुंदर मोहिनीए आत्माने तटस्थ लीन करी नांख्यो छे. ए जेवुं सुख आत्माने क्यांय भासतुं नथी. मोहिनीथी सत्यसुख अने एनुं स्वरूप जोवानी एणे आकांक्षा पण करी नथी. पतंगनी जेम दीपक प्रत्ये मोहिनी छे तेम आत्मानी संसारसंबंधे मोहिनी छे. ज्ञानीओ ए संसारने क्षण भर पण सुखरूप कहेता नथी. तल जेटली जग्यो पण ए संसारनी झेर विना रही नथी. एक भूंडथी करीने एक चक्रवर्त्ति सुधी भावे करीने सरखापणुं रह्युंछे. एटले चक्र वर्त्तिनी संसार संबंधमां जेटली मोहिनी छे; तेटलीज बलके तेथी विशेष भूंडने छे. चक्रवर्त्ति जेम समग्र प्रजापर अधिकार भोगवे छे तेम तेनी उपाधि पण भोगवेछे. भूंडने एमांनुं कशुंए

भोगववुं पडतुं नथी. अधिकार करता उलटी उपाधि विशेष छे. चक्रवर्त्तिनो पोतानी पत्नि प्रत्येनो प्रेम जेटलो छे; तेटलोज बल्के तेथी विशेष भुंडनो पोतानी भुंडणी प्रत्ये प्रेम रह्योछे. चक्रवर्त्ति भोगथी जेटलो रस लेछे. तेटलोज रस भुंड पण मानी बेठुं छे चक्रवर्त्तिनी जेटली वैभवनी बहोळता छे; तेटलीज उपाधि छे. भुंडने एना वैभवना प्रमाणमां छे. बन्ने जन्म्यां छे अने बन्ने मरवानां छे. आम अति सूक्ष्म विचारे क्षणिकताथी, रोगथी, जराथी बन्ने ग्राहित छे. द्रव्ये चक्रवर्त्ति समर्थ छे. महा पुण्यशाळी छे. शातावेदनी भोगवेछे. अने भुंड बिचारुं अशातावेदनी भोगवी रह्युं छे. बन्नेने अशाता—शातापण छे; परंतु चक्रवर्त्ति महा समर्थ छे. पण जो ए जीवन पर्यंत मोहांध रह्यो तो सघळी बाजी हारी जवा जेवुं करेछे. भुंडने पण तेमज छे. चक्रवर्त्ति श्लाघापुरुष होवाथी भुंडथी ए रूपे एनी तुल्यनाज नथी; परंतु आ स्वरूपे छे. भोग भोगववामां पण बन्ने तुच्छ छे; बन्नेनां शरीर परु मांसादिकनां छे. संसारनी आ उत्तमोत्तम पदवी आवी रही त्यां आवुं दुःख, क्षणिकता, तुच्छता, अंधपणुं ए रह्युं छे तो पछी बीजे सुख शा माटे गणवुं जोइए ? ए सुख नथी छतां सुख गणो तो जे सुख भयवाळां अने क्षणिक छे ते दुःखज छे. अनंत ताप, अनंत शोक, अनंत दुःख जोइने ज्ञानीओए ए संसारने पुंठ दीधीछे; ते सत्य छे. ए भणी पाछुं वाळी जोवा जेवुं नथी. त्यां दुःख दुःखने दुःखज छे. दुःखनो ए

समुद्र छे.

वैराग्य एज अनंतसुखमां लइ जनार उत्कृष्ट भोमियो छे.

शिक्षापाठ ५३ महावीरसासन.

हमणां जे सासन प्रवर्त्तमान छे ते श्रमण भगवंत महावीरनुं प्रणित करेलुं छे. भगवन् महावीरने निर्वाण पधार्यां २४१४ वर्ष थयां, मगध देशना क्षत्रियकुंड नगरमां त्रिशलादेवी क्षत्रियाणीनी कुखे सिद्धार्थ राजाथी भगवन् महावीर जन्म्या. महावीर भगवानना मोटा भाइनुं नाम नंदिवर्द्धमान हतुं. महावीर भगवाननी स्त्रिनुं नाम यशोमति हतुं. त्रीश वर्ष तेओ गृहस्थाश्रममां रह्या. एकांतिक विहारे साडाबार वर्ष एक पक्ष तपादिक सम्यकाचारे, एमणे अशेष घनघाती कर्मने बाळीने भस्मि भूत कर्यां; अने अनुपमेय केवळज्ञान अने केवळदर्शन ऋजुवालिका नदीने किनारे पाम्या. एकंदर बहोतेर वर्षनी लगभग आयु भोगवी सर्व कर्म भश्मिभूत करी सिद्धस्वरुपने पाम्या. वर्त्तमान चोवीशीना ए छेल्ला जिनेश्वर हता.

एओनुं आ धर्मतिर्थ प्रवर्त्तेछे ते २१,००० हजार वर्ष एटले पंचमकाळनी पुर्णता सुधी प्रवर्त्तशे; एम भगवतीसूत्रनां प्रवचन छे.

आ काळ दश अपवादथी युक्त होवाथी ए धर्मतिर्थ पर अनेक विपत्तिओ आवी गइ छे. आवेछे; अने प्रवचन प्रमाणे आवशे पण खरी.

जैनसमुदायमां परस्पर मतभेद बहु पडी गयाछे. परस्पर निंदाग्रंथोथी जंजाळ मांडी बेठा छे. विवेक विचारे मध्यस्थ पुरुषो मतमतांतरमां नहीं पडतां जैनशिक्षानां मूळ तत्वपर आवे छे; उत्तम शीलवान मुनियोपर भाविक रहे छे. सत्य एकाग्रतार्थी पोतानां आत्माने दमेछे.

काळप्रभावने लीधे वखते वखते सासन कंइ सामान्य प्रकाशमां आवे छे;पण ते जोइए तेवुं प्रफुल्लित न थइ शके.

वंक जडाय पछिमा एवुं उत्तराध्ययन सूत्रमां वचन छे, एनो भावार्थ ए छे के छेल्ला तिर्थकरना(महावीरस्वामी) शिष्यो वांका अने जड थशे. अने तेनी सत्यता विषे कोइने बोलवुं रहे तेम नथी. आपणे क्यां तत्वनो विचार करीए छीए ? क्यां उत्तम शीलनो विचार करीए छीए ? नियमित वखत धर्ममां क्यां व्यतित करीए छीए ? धर्म तिर्थना उदयने माटे क्यां लक्ष राखीए छीए ? क्यां दाझवडे धर्मतत्वने शोधीए छीए ! श्रावक कुळमां जन्म्या एथी करीने श्रावक, ए वात आपणे भावे करीने मान्य करवी जोइती नथी; एने माटे जोइता आचार—ज्ञान—शोध के एमांना कंइ विशेष लक्षणो होय तेने श्रावक मानिये तो ते यथायोग्य छे. द्रव्यादिक केटलाक प्रकारनी सामान्य दया श्रावकने घेर जन्मे छे अने ते पाळेछे, ए वात वखाणवा लायक छे; पण तत्वने कोइकज जाणेछे जाण्या करतां झाझी शंका करनारा अर्धदग्धो पण छे. जाणीने अहंपद करनारा पण छे. परंतु जाणीने तत्वनीं कां-

टामां तोळनारा कोइक वीरलाज छे. केवळ, मनःपर्यव अने अवधज्ञान विच्छेद गयां, द्रष्टिवाद विच्छेद गयुं, सिद्धांतनो घणो भाग विच्छेद गयो; मात्र थोडा रहेला भागपर सामान्य समजणथी शंका करवी योग्य नथी. जे शंका थाय ते विशेष जाणनारने पूछवी, त्यांथी मनमानतो उत्तर न मळे तोपण जिनवचननी श्रद्धा चळविचळ करवी नहीं. अनेकांत शैलीना स्वरुपने विरला जाणेछे.

भगवाननां कथनरुप मणिनां घरमां केटलाक पामर प्राणीओ दोषरूपी काणुं शोधवानुं मंथन करी अधोगति जन्यकर्म बांधेछे. लीलोतरीने बदले तेनी सुकवणी करी लेवानुं कोणे ? केवा विचारथी शोधी काढयुं हशे ?

आ विषय बहु मोटो छे. ए संबंधी अहीं आगळ कहेवानी कंइ योग्यता नथी; टुंकामां कहेवानुं के आपणे आपणा आत्मानां सार्थक अर्थे मतभेदमां पडवुं नहीं. उत्तम अने शांत मुनिनो समागम, विमळ आचार, विवेक, दया, क्षमा एनुं सेवन करवुं. महावीर तीर्थने अर्थे बने तो विवेकी बोध कारणसहित आपवो. तुच्छ बुद्धिथी शंकित थवुं नहीं. एमां आपणुं परम मंगळ छे ए वीसर्जन करवुं नहीं.



शिक्षापाठ ५४ अशुचि कोने कहेवी ?

जिज्ञासुः—मने जैन मुनियोनां आचारनी वात बहु रुचीछे. एओना जेवो कोइ दर्शनना संतोमां आचार न-

थी. गमे तेवा शीयाळानी टाढमां अमुक वस्त्रवडे तेओने रेडववुं पडेछे; उनाळामां गमे तेवा ताप तपता छतां पगमां तेओने पगरखां के माथापर छत्री लेवाती नथी. उनी रेतीमां आतापना लेवी पडेछे.याव जीवंत उनुं पाणी पीएछे, गृहस्थने घेर तेओ बेसी शकता नथी. शुद्ध ब्रह्मचर्य पाळेछे. फुटी बदाम पण पासे राखी शकता नथी. अयोग्य वचन तेथी बोली शकातु नथी. वाहन तेओ लइ शकता नथी. आवा पवित्र आचारो खरे ! मोक्षदायक छे. परंतु नववाडमां भगवाने स्नान करवानी ना कहीछे ए वात तो मने यथार्थ बेसती नथी.

सत्य— शा माटे बेसती नथी?

जिज्ञासु—कारण एथी अशुचि वधेछे.

सत्य—काइ अशुचि वधेछे!

जिज्ञासु—शरीर मलिन रहेछे ए.

सत्य—भाइ, शरीरनी मलिनताने अशुचि कहेवी ए वात कंइ विचारपूर्वक नथी. शरीर पोते शानुं बन्युं छे एतो विचार करो. रक्त, पित, मळ, मुत्र श्लेष्मनो ए भंडार छे तेपर मात्र त्वचा छे; छतां ए पवित्र केम थाय? वळी साधुए एवुं कंइ संसारी कर्त्तव्य कर्युं न होय के जेथी तेओने स्नान करवानी आवश्यक रहे.

जिज्ञासुः—पण स्नान करवाथी तेओने हानि शुं छे?

सत्यः—ए तो स्थूळ बुद्धिनुंज प्रश्न छे. नहावाथी असंख्याता जंतुनो विनाश, कामाग्निनी प्रदिप्तता, व्रतनो

भंग, परिणामनुं बदलवुं ए सघळी अशुचि उत्पन्न थाय छे अने एथी आत्मा महा मलीन थायछे. प्रथम एनो विचार करवो जोइए. शरीरनी जीवहिंसायुक्त जे मलीनता छे ते अशुचि छे अन्य मलीनताथी तो आत्मानी उज्वळता थायछे.ए तत्वविचारे समजवानुं छे;नहावाथी वृत्तभंग थइ आत्मा मलीन थाय छे; अने आत्मानी मलीनता एज अशुचि छे.

जिज्ञासुः—मने तमे बहु सुंदर कारण बताव्युं. सूक्ष्म विचार करतां जिनेश्वरनां कथनथी बोध अने अत्यानंद प्राप्त थाय छे. वारु गृहस्थाश्रमीओने शरीरनी जीव हिंसा के संसारकर्त्तव्यथी थयेली अशुचि टाळवी जोइए के नहीं ?

सत्यः—समजण पूर्वक अशुचि टाळवीज जोइए. जैन जेवुं एके पवित्र दर्शन नथी; अने ते अपवित्रतानो बोध करतुं नथी. शौचाशौचनो विचार परंतु थोडोज करेछे.

शिक्षापाठ ५५ सामान्य नित्यनियम.

प्रभात पहेलां उठीने यत्नाथी रात संबंधी थयेला दोषनुं प्रतिक्रमणुं करवुं.

प्रतिक्रमणु कर्या पछी स्तुति,अने शिक्षावचन उच्चारी मननी बनती शांति करी घेर आववुं.

मात पितानो विनय करी यत्नाथी संसारी काममां प्रयोजन करवुं.

अहार विहारनो नियमित वखत राखवो; तेमज शास्त्रना अभ्यासनो अने तात्विक ग्रंथनां मनननो पण नियमित वखत राखवो.

सांयकाळे संध्यावश्यक उपयोग पूर्वक करवुं.

चोविहार प्रत्याख्यान करवुं

नियमित निद्रा लेवी.

सुता पेहेलां अढार पापस्थानक, द्वादशव्रत दोष, अने सर्व जीवने क्षमावी पंच परमेष्टि मंत्रनुं स्मरण करी महा शांतिथी समाधिभावे शयन करवुं.

आ सामान्य नियमो बहु लाभदायक थशे. ए तमने संक्षेपमां कह्या छे. सूक्ष्मविचारथी ए विशेष मंगळ दायक थशे.

शिक्षापाठ ५६ क्षमापना.

हे भगवान ! हुं बहु भूली गयो, में तमारां अमूल्य वचनने लक्षमां लीधां नहीं. तमारां केहेलां अनुपम तत्वनो में विचार कर्यो नहीं. तमारां प्रणीत करेलां उत्तम शीलने सेव्युं नहीं. तमारां कहेलां दया, शांति, क्षमा अने पवित्रता में ओळख्यां नहि. हे भगवन् ! हुं भूल्यो, आथड्यो—रझळ्यो—अने अनंत संसारनी विटम्बनामां पड्यो छउं. हुं पापी छउं. हुं बहु मदोन्मत्त अने कर्म रजथी करीने मलीन छउं. हे परमात्मा ! तमारां कहेलां तत्व विना मारो मोक्ष नथी. हुं निरंतर प्रपंचमां पड्यो

छउं; अज्ञानथी अंध थयो छउं; मारामां विवेकशक्ति नथी अने हुं मुंढ छउं, हुं निराश्रित छउं, अनाथ छउं. निरागी परमात्मा! हवे हुं तमारुं, तमारा धर्मनुं अने तमारा साधुनुं शरण ग्रहुं छउं. मारा अपराध क्षय थइ हुं ते सर्व पापथी मुक्त थउं ए मारी अभिलाषा छे. आगळ करेलां पापोनो हुं हवे पश्चाताप करुं छउं. जेम जेम हुं सूक्ष्म विचारथी उंडो उतरुं छउं तेम तेम तमारा तत्वना चमत्कारो मारा स्वरुपनो प्रकाश करे छे. तमे निरागी, निर्विकारी, सत्चिदानंद स्वरुप, सहजानंदी, अनंतज्ञानी, अनंतदर्शि, अने त्रैलोक्यप्रकाशक छो. हुं मात्र मारा हितने अर्थे तमारी साक्षीए क्षमा चाहुं छउं. एक पळ पण तमारां कहेलां तत्वनी शंका न थाय, तमारा कहेला रस्तामां अहोरात्र हुं रहुं एज मारी आकांक्षा अने वृत्ति थाओ! हे सर्वज्ञ भगवान्! तमने हुं विशेष शुं कहुं? तमाराथी कंइ अजाण्युं नथी.मात्र पश्चातापथी हुं कर्मजन्य पापनी क्षमा इच्छुं छउं—ओं शांतिः शांतिः शांतिः

शिक्षापाठ ५७ वैराग्य ए धर्मनुं स्वरुपछे.

एक वस्त्र लोहीथी करीने रंगायुं. तेने जो लोहीथी धोइए तो ते धोइ शकानार नथी; परंतु विशेष रंगायछे. जो पाणीथी ए वस्त्रने धोइए तो ते मलिनता जवानो संभवछे ए द्रष्टांत परथी आत्मापर विचार लइए. आत्मा

अनादिकाळथी संसाररूपी लोहीथी मलीन थयोछे. मलीनता रोम रोम उतरी गइ छे! ए मलीनता आपणे संसारवडे टाळवा धारीए तो टळी शके नहीं. लोहीथी जेम लोही धोवातुं नथी; तेम शृंगारथी करीने विषयजन्य आत्म मलीनता टळनार नथी ए जाणे निश्चयरूपछे. अनेक धर्ममतो आ जगत्मां चाले छे ते संबंधी अपक्षपाते विचार करतां आगळथी आटलुं विचारवुं अवश्यनुं छे के ज्यां स्त्रिओ भोगववानो उपदेश कर्यो होय, लक्ष्मीलीलानी शिक्षा आपी होय रंग, राग, गुलतान अने एशाराम करवानुं तत्त्व बताव्युं होय; त्यांथी आपणा आत्माने सत् शांति नथी. कारण ए धर्ममत गणीए तो आखो संसार धर्ममतयुक्तज छे. प्रत्येक गृहस्थनुं घर एज योजनाथी भरपूर होय छे. छोकरांछैयां, स्त्रि, रंग राग तान त्यां जाम्युं पड्युं होय छे अने ते घर धर्ममंदिर कहेवुं; तो पछी अधर्मस्थानक कयुं? अने जेम वर्त्तिए छीए तेम वर्त्तवाथी खोटुं पण शुं! कोइ एम कहे के पेलां धर्ममंदिरमां तो प्रभूनी भक्ति थइ शके छे तो तेओने माटे खेदपूर्वक आटलोज उत्तर देवानो छे के ते परमात्मतत्त्व अने तेनी वैराग्यमय भक्तिने जाणता नथी. गमे तेम हो पण आपणे आपणा मूळ विचारपर आववुं जोइए. तत्त्वज्ञाननी दृष्टिए आत्मा संसारमां विषयादिक मलीनताथी पर्यटन करे छे. ते मलिनतानो क्षय विशुद्ध जळ भावथी होवो जोइए. आत्मतत्त्वने निर्ग्रंथ गुरु धोनार, वे

अर्हतनां कहेलां तत्वरुप साबु अने वैराग्यरुपी जळथी उत्तम आचाररुप पथ्थरपर राखीने. आमां जो वैराग्य-जळ न होयतो बधां साहियो कंइ करी शकता नथी; माटे वैराग्यने धर्मनुं स्वरुप कही शकाय. यदी अर्हत प्रणित तत्व वैराग्यज बोधे छे, तो ए रुपी जळ अने तेज धर्मनुं स्वरुप एम गणवुं.

शिक्षापाठ५८ धर्मना मतभेद भाग१.

आ जगतीतळपर अनेक प्रकारथी धर्मना मत पडेला छे. मतभेद अनादिकाळथी छे, ए न्याय सिद्ध छे. पण ए मत कंइ कंइ रुपांतर पाम्या जायछे; ए संबंधी केटलाक विचारो करीए.

केटलाक परस्पर मळता अने केटलाक परस्पर विरुद्ध छे; केटलाक केवळ नास्तिकना पाथरेला पणछे. केटलाक सामान्य नीतिने धर्म कहे छे. केटलाक ज्ञाननेज धर्म कहे छे. केटलाक अज्ञान ए धर्ममत कहेछे. केटलाक भक्तिने कहेछे; केटलाक क्रियाने कहेछे; केटलाक विनयने कहेछे अने केटलाक शरीर साचववुं एने धर्ममत कहेछे.

ए धर्ममत स्थापकोए एम बोध कर्यो जणायछे के अमे जे कहीए छीए ते सर्वज्ञवाणीरुप अने सत्य छे. बाकी-ना सघळा मतो असत्य अने कुतर्कवादी छे. परस्पर तेथी ते मत वादीओए योग्य के अयोग्य खंडन कर्युं छे. वेदां-

नना उपदेशक आज बोधेछे; सांख्यनो पण आज बोध छे. बौद्धनो पण आज बोध छे. न्यायमतवाळानो पण आज बोध छे; वैशेषिकनो आज बोध छे; शक्तिपंथीनो आज बोध छे; वैष्णवादिकनो आज बोध छे इस्लामीनो आज बोध छे. अने क्राइस्टनो आज बोध छे के आ अमारुं कथन तमने सर्व सिद्धि आपशे. त्यारे आपणे एथी शुं विचार करवो?

वादी प्रतिवादी बन्ने साचा होता नथी, तेम बन्ने खोटा होता नथी. बहु तो वादी कंइक वधारे साचो; अने प्रतिवादि कंइक ओछो खोटो होय. केवळ बन्नेनी वात खोटी होवी न जोइए. आम विचार करतां तो एक धर्ममत साचो ठरे; अने बाकीना खोटा ठरे.

जिज्ञासु—ए एक आश्चर्यकारक वात छे. सर्वने असत्य अने सर्वने सत्य केम कही शकाय? जो सर्वने असत्य एम कहीए तो आपणे नास्तिक ठरीए; अने धर्मनी सच्चाइ जाय. आ तो निश्चय छे के धर्मनी सच्चाइ छे तेम सृष्टिपर तेनी अवश्य छे. एक सत्य अने सर्व असत्य एम कहीए तो ते वात सिद्ध करी बतावबी जोइए. सर्व सत्य कहीए तो तो ए रेतीनी भींत करी; कारण तो आटला बधा मतभेद शा माटे पडे? सर्व एकज प्रकारना मतो स्थापवा शा माटे यत्न करे! एम अन्योन्यता विरोधाभास विचारथी थोडीवार अटकवुं पडेछे.

तोपण ते संबंधी यथामति हुं कंइ खुलासो करूं छउं. ए खुलासो सत्य अने मध्यस्थभावनानो छे. एकांतिक

मतांतिक नथी. पक्षपाती के अविवेकी नथी; पण उत्तम अने विचारवा जेवो छे. देखावे ए सामान्य लागशे; परंतु सूक्ष्मविचारथी बहु भेदवाळो लागशे.

शिक्षापाठ ५९ धर्मना मतभेद भाग २.

आटलुं तो तमारे स्पष्ट मानवुं के गमे ते एक धर्म आ सृष्टिपर संपूर्ण सत्यता धरावेछे. हवे एक दर्शनने सत्य कहेतां बाकीना धर्ममतने केवळ असत्य कहेवा पडे; पण हुं एम कही न शकुं. शुद्ध आत्मज्ञानदाता निश्चयनयवडे तो ते असत्यरुप ठरे; परंतु व्यवहारनये ते असत्य ठरावी शकाय नहीं. एक सत्य अने बाकीनां अपूर्ण अने सदोष छे एम हुं कहुं छउं. तेमज केटलांक कुतर्कवादी अने नास्तिकछे ते केवळ असत्य छे; परंतु जेओ परलोक संबंधी के पाप संबंधी कंइपण बोध के भय बतावेछे ते जातना धर्ममतने अपूर्ण अने सदोष कही शकाय छे. एक दर्शन जे निर्दोष अने पूर्ण कहेवानुंछे ते वात हमणां एक बाजु राखीए.

हवे तमने शंका थशे के सदोष अने अपूर्ण एवुं कथन एना प्रवर्त्तके शा माटे बोध्युं हशे? तेनुं समाधान थवुं जोइए. ए धर्ममतवाळाओनी ज्यां सुधी बुद्धिनी गति पहोंची त्यां सुधी तेमणे विचारो कर्या. अनुमान, तर्क अने उपमादिक आधारवडे तेओने जे कथन सिद्ध जणायुं. ते प्रत्यक्षरुपे जाणे सिद्ध छे एवुं तेमणे दर्शाव्युं, जे पक्ष लीधो तेमां मुख्य एकांतिक वाद लीधो, भक्ति, विश्वास

के नीति एमांनां एक विषयने विशेष वर्णव्यो, एथी बीजा मानवा योग्य विषयो तेमणे दूषित करी दीधा. वळी जे विषयो तेमणे वर्णव्या ते सर्वभावभेदे तेओए कंइ जाण्या नहोता पण पोतानी मति बुद्धि अनुसारे बहु वर्णव्या. नास्तिक सिद्धांत दृष्टांतादिकथी सामान्य बुद्धिवाळा आगळ के जडभरथ आगळ तेओए सिद्ध करी बताव्यो. कीर्त्ति, लोकहित के भगवान मनावानी आकांक्षा एमांनी एकादी पण एमना मननी भ्रमना होवाथी अत्युग्र खुब उद्यमादिकथी तेओ जय पाम्या. केटलाके शृंगार अने लहरी साधनोथी मनुष्यनां मनहरण कर्यां. दुनियां मोहिनीमां तो मूळे डुबी पडी छे; एटले ए लहरी दर्शनथी गाडररूपे थइने तेओए राजी थइ तेनुं कहेवुं मान्य राख्युं. केटलाके नीति, गुण इत्यादिकथी ते कथन मान्य राख्युं. प्रवर्त्तकनी बुद्धि तेओ करतां विशेष होवाथी तेने पछी भगवानरूपज मानी लीधा. केटलाके वैराग्यथी धर्ममत फेलावी पाछळथी केटलांक सुखशीलियां साधननो बोध खोसी दीधो. पोतानो मत स्थापन करवानी महान भ्रमनाए; अने पोतानी अपूर्णता इत्यादिक गमे ते कारणथी बीजानुं कहेलुं पोताने न रुच्युं एटले तेणे जूदोज राह काढ्यो. आम अनेक मतमतांतरनी जाळ थती गइ. चार पांच पेढी एकनो एक धर्म पाळ्यो एटले पछी ते कुळ धर्म थइ पड्यो. एम स्थळे स्थळे थतुं गयुं.

शिक्षापाठ ६० धर्मना मत भेद भाग ३.

जो एक दर्शन पूर्ण अने सत्य न होय तो बीजा धर्म मतने अपूर्ण अने असत्य कोइ प्रमाणथी कही शकाय नहीं; ए माटे थइने जे एक दर्शन पूर्ण अने सत्य छे. तेनां तत्वप्रमाणथी बीजा मतोनी अपूर्णता अने एकांतिकता जोइए.

ए बीजा धर्ममतोमां तत्वज्ञान संबंधी यथार्थ सूक्ष्म विचारो नथी. केटलाक जगत्कर्त्तानो बोध करेछे; पण जगत्कर्त्ता प्रमाणवडे सिद्ध थइ शकतो नथी. केटलाक ज्ञानथी मोक्षछे एम कहेछे ते एकांतिक छे; तेमज क्रियाथी मोक्ष छे एम कहेनारा पण एकांतिक छे. ज्ञान, क्रिया ए बन्नेथी मोक्ष कहेनारा तेना यथार्थ स्वरुपने जाणता नथी; अने ए बन्नेना भेद श्रेणिबंध नथी कही शक्या एज एमनी सर्वज्ञतानी खामी जणाइ आवेछे. सत्‌देवतत्वमां कहेलां अष्टादश दूषणोथी ए धर्ममतस्थापको रहित नहोता एम एओनां गुंथेलां चरित्रोपरथी पण तत्वनी द्रष्टिए देखायछे. केटलाक मतोमां हिंसा, अब्रह्मचर्य इ. अपवित्र विषयोनो बोध छे तेतो सहजमां अपूर्ण अने सरागीना स्थापेलां जोवामां आवेछे. कोइए एमां सर्वव्यापक मोक्ष, कोइए कंइ नहीं ए रूप मोक्ष, कोइए साकारमोक्ष अने कोइए अमूक काळसुधी रही पतित थवुं ए रूपे मोक्ष मान्योछे; पण एमांथी कोइ वात तेओनी सप्रमाण थइ

शकती नथी. एओना अपूर्ण विचारोनुं खंडन यथार्थ जोवा जेवुं छे; अने ते निग्रंथ आचार्योना गुंथेला शास्त्रोथी मळी शकशे.

वेद शीवायना बीजा मतोना प्रवर्त्तकों, एमनां चरित्रो, विचारो इत्यादिक वांचवाथी अपूर्ण छे एम जणाई आवे छे. वेदे प्रवर्त्तक भिन्न भिन्न करी नाखी भेधडाथी वात मर्ममां नाखी गंभिर डोळ पण कर्यो छे. छतां एमना पुष्कळ मतो वांचवाथी ए पण अपूर्ण अने एकांतिक जणाई आवशे.

जे पूर्ण दर्शन विषे कहेवानुंछे ते जैन एटले निरागीनां स्थापन करेलां दर्शन विषे छे. एना बोधदाता सर्वज्ञ अने सर्वदर्शि हता:काळभेद छतां पण ए वात सिद्धांतिक जणायछे. दया, ब्रह्मचर्य, शील, विवेक, वैराग्य एनां जेवां पूर्ण एकेए वर्णव्यां नथी. तेनी साथे शुद्ध आत्मज्ञान तेनी कोटीओ जीवनां च्यवन, जन्म, गति विगति, योनिद्वार, प्रदेश, काळ, तेनां स्वरूप ए विषे एवो सूक्ष्म बोधछे के जेवडे तेनी सर्वज्ञतानी निःशंकता थाय.काळभेदे केवळज्ञानादि ज्ञानो विच्छेद छे छतां जे जे जिनेश्वरना रहेलां सिद्धांतिक वचनोछे ते अखड छे. एक विचार करतां जींदगी वही जाय तेवुं छे. आगळपर केटलुंक ए संबंधी कहेवानुं छे.

जिनेश्वरना कहेलां धर्मतत्वथी कोइ पण प्राणीने लेश खेद उत्पन्न थतो नथी. सर्व आत्मानी रक्षा अने सर्वात्म

शक्तिनो प्रकाश एमां रह्यां छे. ए भेदो वांचवाथी, समजवाथी, अने ते पर अति अति सूक्ष्म विचार करवाथी आत्मशक्ति प्रकाश पामी जैनदर्शननी सर्वज्ञतानी हा कहेवरावे छे. बहु मननथी सर्व धर्ममत जाणी पछी तोलन करनारने मारुं कथन अवश्य सिद्ध थशे.

ए सर्वज्ञदर्शननां मूळतत्वो अने बीजा मतनां मूळतत्वोविषे अहीं विशेष कही शकाय तेटली जग्या नथी.

शिक्षापाठ ६१ सुख विषे विचार भाग १.

एक ब्राह्मण दरिद्रावस्थाथी करीने बहु पीडातो हतो. कंटाळीने छेवटे देवनुं उपासन करी लक्ष्मी मेळववानो निश्चय कर्यो. पोते विद्वान होवाथी उपासन करवां पहेलां विचार कर्यो के कदापि देव तो कोइ तृपमान थशे; पण पछी ते आगळ सुख कयुं मागवुं? तप करी पछी मागवामां कंइ सूजे नहीं, अथवा न्यूनाधिक सूजे तो करेलो तप पण निरर्थक जाय; माटे एक वखत आखा देशमां प्रवास करवो. संसारना महत्पुरुषोनां धाम, वैभव अने सुख जोवां. एम निश्चय करी ते प्रवासमां नीकळी पड्यो. भारतनां जे जे रमणिय अने रीद्धिमान शहेरो हतां ते जोयां. युक्तिप्रयुक्तिए राजाधिराजनां अंतःपुर, सुख अने वैभव जोया. श्रीमंतोना अवास, वहिवट, बाग बगीचा अनेकुटुंब परिवार जोया; पण एथी तेनुं कोइ रीते मन मान्युं नहीं. कोइने स्त्रिनुं दुःख, कोइने पतिनुं दुःख, कोइने

अज्ञानथी दुःख,कोइने वहालांना वियोगनुं दुःख,कोइने नि-र्धनतानुं दुःख,कोइने लक्ष्मीनी उपाधिनुं दुःख,कोइने शरीर संबंधी दुःख, कोइने पुत्रनुं दुःख, कोइने शत्रुनुं दुःख, कोइने जडतानुं दुःख, कोइने माबापनुं दुःख, कोइने वैधव्य दुःख, कोइने कुटुंबनुं दुःख, कोइने पोताना नीचकुळनुं दुःख, कोइने प्रीतिनुं दुःख, कोइने इर्ष्यानुं दुःख, कोइने हानिनुं दुःख, एम एक, बे विशेष के बधां दुःख स्थळे स्थळे ते विप्रना जोवामां आव्यां. एथी करीने एनुं मन कोई स्थळे मान्युं नहीं. ज्यां जुए त्यां दुःख तो खरूंज. कोई स्थळे संपूर्ण सुख तेना जोवामां आव्युं नहीं. हवे त्यारे शुं मागवुं? एम विचारतां विचारतां एक महाधनाढ्यनी प्रशंसा सांभळीने ते द्वारिकामां आव्यो. द्वारिका महा रीद्धिमान, वैभवयुक्त, बागबगीचावडे करीने सुशोभित अने वस्तीथी भरपुर शहेर तेने लाग्युं. सुंदर अने भव्य आवासो जोतो, अने पूछतो पूछतो ते पेला महाधनाढ्यने घेर गयो. श्रीमंत मुखग्रहमां बेठा हता. तेणे अतिथि जाणीने ब्राह्मणने सन्मान आप्युं; कुशळता पूछी. अने भोजननी तेओने माटे योजना करावी. जरा वार जवा दई धीरजथी शेठे ब्राह्मणने पूछ्युं, आपनुं आगमन कारण जो मने कहेवा जेवुं होय तो कहो. ब्राह्मणे कह्युं, हमणा आप क्षमा राखो; आपनो सघळी जातनो वैभव, धाम, बागबगीचा इत्यादिक मने देखाडवुं पडशे; ए जोवा पछी आगमनकारण कहीश. शेठे एनुं कंई मर्मरूप कारण

जाणीने कह्युं. भले आनंदपूर्वक आपनी इच्छा प्रमाणे करो. जम्या पछी ब्राह्मणे शेठे पोते साथे आवीने धामादिक बताववा विनंति करी. धनाढ्ये ते मान्य राखी; अने पोते साथे जई बागबगीचा, धाम, वैभव ए सघळुं देखाड्युं. शेठनी स्त्रि, पुत्रो पण त्यां ब्राह्मणना जोवामां आव्या. योग्यतापूर्वक तेओए ते ब्राह्मणनो सत्कार कर्यो एओनां रुप, विनय अने स्वच्छता तेमज मधुर वाणी जोइने ब्राह्मण राजी थयो; पछी तेनी दुकाननो वहिवट जोयो. सोएक वाहिवटिया त्यां बेठेला जोया. तेओ पण मायाळु, विनयि अने नम्र ते ब्राह्मणना जोवामां आव्या. एथी ते बहु संतुष्ट थयो. एनुं मन अहीं कंइक संतोषायुं. सुखी तो जगत्मां आज जणायछे एम तेने लाग्युं.



शिक्षापाठ ६२ सुख विषे विचार भाग२.

केवां एनां सुंदर घर छे! तेनी स्वच्छता अने जाळवणी केवी सुंदरछे! केवी शाणी अने मनोज्ञा तेनी सुशीळ स्त्रि छे! तेना केवा कांतिमान अने कह्यागरा पुत्रोछे! केवुं संपीलुं तेनुं कुटुंब छे! लक्ष्मीनी महेरपण एने त्यां केवीछे! आखा भारतमां एना जेवो बीजो कोइ सुखी नथी. हवे तप करीने जो हुं मागुं तो आ महाधनाढ्य जेवुंज सघळुं मागुं बीजी चाहना करुं नहीं.

दीवस वीती गयो अने रात्रि थइ. सुवानो वखत थयो. धनाढ्य अने ब्राह्मण एकांतमां बेठा हता; पछी

धनाढ्ये विप्रने आगमन कारण कहेवा विनंति करी.

विप्रः—हुं घेरथी एवो विचार करी नीकळ्यो हतो के बधाथी वधारे सुखी कोण छे ? ते जोवुं; अने तप करीने पछी एना जेवुं सुख संपादन करवुं. आखा भारत ने तेनां मनळां रमणिय स्थळो जोयां; परंतु कोइ राजाधिराजने त्यां पण मने संपूर्ण सुख जोवामां आव्युं नहीं. ज्यां जोयुं त्यां आधि, व्याधि अने उपाधि जोवामां आवी. आ भणी आवतां आपनी प्रशंसा सांभळी एटले हुं अहीं आव्यो; अने संतोष पण पाम्यो. आपना जेवी रीद्धि, सत्पुत्र, कमाइ, स्त्रि, कुटुंब, घर वगेरे मारा जोवामां क्यांय आव्युं नथी. आप पोते पण धर्मशील, सद्गुणी अने जिनेश्वरना उत्तम उपास्यकछो. एथी हुं एम मानुं छउं के आपना जेवुं सुख बीजे नथी. भारतमां आप विशेष सुखीछो. उपासन करीने कदापि देव कने याचुं तो आपना जेवी सुखस्थिति याचुं.

धनाढ्य—पंडितजी, आप एक बहु मर्मभरेला विचारथी नीकळ्या छो; एटले अवश्य आपने जेम छे तेम स्वानुभवी वात कहुं छउं; पछी जेम तमारी इच्छा थाय तेम करजो. मारे त्यां आपे जे जे सुख जोयां ते ते सुख भारतसंबंधमां क्यांय नथी ए आपे कह्युं तो तेम हशे; पण खरुं ए मने संभवतुं नथी; परंतु मारो सिद्धांत आवोछेके जगत्मां कोइ स्थळे सुख नथी. जगत् दुःखथी करीने दा-

शतुं छे. हुं पण जे स्वरूपे तमे सुखी जुओछो ते स्वरूपथी गणी शकाउं नहीं.

विप्र—आपनुं आ कहेवुं कोइ अनुभवसिद्ध अने मार्मिक हशे. में अनेक शास्त्रो जोयां छे; छतां मर्मपूर्वक विचारो आवा लक्षमां लेवा परिश्रमज लीधा नथी. तेम मने एवो अनुभव सर्वने माटे थइने थयो नथी. हवे आपने शुं दुःख छे? ते मने कहो.

धनाढ्य—पंडितजी आपनी इच्छाछे तो हुं कहुंछउं. ते लक्षपूर्वक मनन करवा जेवुछे; अने ए उपरथी कंइ रस्तो पामवा जेवुं छे.

शिक्षापाठ ६३ सुखविषे विचार भाग ३.

जे स्थिति हमणां मारी आप जुओछो तेवी स्थिति लक्ष्मी, कुटुंब अने स्त्रि संबंधमां आगळ पण हती. जे वखतथी हुं वात करुं छउं. ते वखतने लगभग वीश वर्ष थयां. व्यापार, अने वैभवनी बहोळाश ए सघळुं वहिवट अवळो पडवाथी घटवा मंडयुं. कोट्याधि कहेवातो हुं उपराचापरी खोटना भार वहन करवाथी लक्ष्मी वगरनो मात्र त्रण वर्षमां थइ पडयो. ज्यां केवळ सवळुं धारीने नांख्युं हतुं त्यां अवळुं पडयुं. एवामां मारी स्त्रि पण गुजरी गइ. ते वखतमां मने कंइ संतान नहोतुं. जवरी खोटोने लीधे मारे अहींथी नीकळी जवुं पडयुं. मारां कुटुंबीओए यती रक्षा करी; परंतु ते आभ फाट्यानुं थीगडुं हतुं. अन्नने अने

दोतने वेर थवानी स्थितिए.हुं बहु आगळ नीकळी पड्यो ज्यारे हुं त्यांथी नीकळ्यो त्यारे मारा कुटुंबीओ मने रोकी राखवा मंड्यां के तें गामनो दरवाजो पण दीठो नथी माटे तने जवा दइ शकाय नहीं. तारुं कोमळ शरीर कंइ पण करी शके नहीं; अने तुं त्यां जा अने सुखी था तो पछी आव पण नहीं; माटे ए विचार तारे मांडी वाळवो. घणा प्रकारथी तेओने समजावी, सारी स्थितिमां आवीश त्यारे अवश्य अहीं आवीश. एम वचन दइ जावाबंदर हुं पर्यटने नीकळी पड्यो.

प्रारब्ध पाछां वळवानी तैयारी थइ. दैवयोगे मारीकने एक दमडी पण रही नहोती. एक के बे महीना उदर पोषण चाले तेवुं साधन रह्युं नहोतुं. छतां जावामां हुं गयो त्यां मारी बुद्धिए प्रारब्ध खीलव्यां. जे वहाणमां हुं बेठो हतो ते वहाणना नाविके मारी चंचळता अने नम्रता जोइने पोताना शेठ आगळ मारा दुखनी वात करी. ते शेठे मने बोलावी अमुक काममां गोठव्यो; जेमां हुं मारा पोषणथी चोगणुं पेदा करतो हतो. ए वेपारमां मारुं चित्त ज्यारे स्थिर थयुं त्यारे भारतसाथे ए वेपार वधारवा में प्रयत्न कर्युं, अने तेमां फाव्यो. बे वर्षमां पांच लाख जेटली कमाइ थइ. पछी शेठ पासेथी राजी खुशीथी आज्ञा लइ में केटलोक माल खरीदी द्वारिका भणी आववानुं कर्युं. थोडे काळे त्यां आवी पहोंच्यो. त्यारे बहु लोक सन्मान आपवा मने सामा आव्या हता.

हुं मारां कुटुंबीओने आनंदभावथी जइ मळ्यो. तेओ मारा भाग्यनी प्रशंसा करवा लाग्यां. जावेथी लीधेला माले मने एकना पांच कराव्या. पंडितजी! त्यां केटलाक प्रकारथी मारे पाप करवां पड्यां हतां; पुरुं खावा पण हुं पाम्यो नहोतो; परंतु एकवार लक्ष्मी साध्य करवानो जे प्रतिज्ञाभाव कर्यो हतो ते प्रारब्ध योगथी पळ्यो. जे दुःखदायक स्थितिमां हुं हतो ते दुःखमां शुं खामी हती? स्त्रि, पुत्र एतो जाणे नहोतांज, माबाप आगळथी परलोक पाम्यां हतां. कुटुंबीओना वियोगवडे अने विना दमडीए जावे जे वखते हुं गयो ते वखतनी स्थिति अज्ञानदृष्टिथी आंखमां आंसु आणी दे तेवी छे; आ वखते पण धर्ममां लक्ष राख्युं हतुं. दीवसनो अमुक भाग तेमां रोकतो हतो; ते लक्ष्मी के एवी लालचे नहीं. परंतु संसारदुःखथी ए तारनार साधन छे एम गणीने मोतनो भय क्षण पण दूर नथी; माटे ए कर्त्तव्य जेम बने तेम करी लेवुं. ए मारी मुख्य नीति हती. दुराचारथी कंइ सुख नथी. मननी तृप्ति नथी; अने आत्मानी मलिनता छे. ए तत्व भणी में मारुं लक्ष दोरेलु हतुं.

शिक्षापाठ ६४ सुख विषे विचार.

भाग ४.

अहीं आव्या पछी हुं सारां ठेकाणांनी कन्या पाम्यो ते पण सुलक्षणी अने मर्यादशील नीवडी; ए वडे करीने

मारे त्रण पुत्र थया. वहिवट प्रबळ होवाथी अने नाणुं नाणांने वधारतुं होवाथी दश वर्षमां हुं महाकोट्यावधि थइ पड्यो. पुत्रनी नीति विचार, अने बुद्धि उत्तम रहे-वा में बहु सुंदर साधनो गोठव्यां. जेथी, तेओ आ स्थि-ति पाम्या छे. मारां कुटुंबीओने योग्य योग्य स्थळे गो-ठवी तेओनी स्थितिने सुधरती करी. दुकानना में अमुक नियमो बांध्या. उत्तम धामनो आरंभ पण करी लीधो आ फक्त एक ममत्व खातर कर्युं. गयेलुं पाछुं मेळव्युं; अने कुळ परंपरानुं नामांकितपणु जतुं अटकाव्युं. एम कहेवराववा माटे आ सघळुं में कर्युं,एन हुं सुख मानतो न-थी.जोके हु बीजा करतां सुखी छउं,तोपण ए शातावेदनी छे. सत्सुख नथी. जगतमां बहुधा करीने अशातावेदनी छे. में धर्ममां मारो काळ गाळवानो नियम राख्योछे; शा-स्त्रनां मनन, सत्पुरुषोनो समागम, यमनियम, एक मही-नामां बार दीवस ब्रह्मचर्य, बनतुं गुप्तदान, सर्व व्यवहार संबंधीनी उपाधिमांथी केटलोक भाग बहु अंशे में त्या-ग्योछे. पुत्रोने व्यवहारमां यथायोग्य करीने हु निर्ग्रंथ थवानी इच्छा राखुं छउं. हमणां निग्रथ थइ शकुं तेम नथी; एमां संसारमोहिनी के एवुं कारण नथी; परंतु ते पण धर्मसंबंधी कारण छे. गृहस्थधर्मनां आचरण बहु कनिष्ट थइ गयाछे. अने मुनियो ते सुधारी शकता नथी. गृहस्थ गृहस्थने विशेष बोध करी शके; आचरणथी पण असर करी शके. एटला माटे धर्मसंबंधे गृहस्थवर्गने हुं घणे

भाग बोधी यमनियममां आणुं छउं. दरसप्ताहिके आपणे सौ पांचसें जेटला सद्गृहस्थोनी सभा भरायछे. आठ दीवसनो नवो अनुभव अने बाकीनो आगळनो धर्मानुभव एमने बे त्रण मुहुर्त्त बोधुं छउं. मारी स्त्रि धर्मशास्त्रनो केटलोक बोध पामेली होवाथी ते पण स्त्रिवर्गने उत्तम यमनियमनो बोध करी सप्ताहिके सभा भरेछे. पुत्रो पण शास्त्रनो बनतो परिचय राखेछे. विद्वानोनुं सन्मान, अतिथिनुं सन्मान विनय, अने सत्यता सामान्य सत्यता एकज भाव एवा नियमो बहुधा मारा अनुचरो पण सेवेछे. एओ बधा एथी शाता भोगवी शकेछे. लक्ष्मीनी साथे मारी नीति, धर्म, सद्गुण, विनय एणे जनसमुदायने बहु सारी असर करी छे. राजासहित पण मारी नीतिवात अंगीकार करे तेवुं थयुंछे. आ सघळुं आत्मप्रशंसा माटे हुं कहेतो नथी. ए आप स्मृतिमान राखवुं; मात्र आपना पूछेला खुलासा दाखल आ सघळुं संक्षेपमां कहेतो जउं छउं.

शिक्षापाठ ६५ सुख विषे विचार भाग ५.

आ सघळां उपरथी हुं सुखी छउं; एम आपने लागी शकशे, अने सामान्य विचारे मने बहू सुखी मानो तो मानी शकाय तेम छे. धर्म, शील अने नीतिथी तेमज शास्त्रावधानथी मने जे आनंद उपजेछे; ते अवर्णिय छे. पण तत्व दृष्टिथी हुं सुखी न मनाउं. ज्यांसुधी सर्व प्रकारे

बाह्य अने अभ्यंतर परिग्रह में त्याग्या नथी; त्यां सुधी राग द्वेषनो भावछे. जो के ते बहु अंशे छे. नथी पण छे; तो त्या उपाधि पणछे. सर्व संग परित्याग करवानी मारी संपूर्ण आकांक्षा छे; पण ज्यांसुधी तेम थयुं नथी त्यां सुधी गणातां हजु कोइ प्रियजननो वियोग, व्यवहारमां हानि, कुटुंबिनुं दुःख ए थोडे अंशे पण उपाधि आपी शके. पोताना देहपर मोत शावयि पण नाना प्रकारना रोगनो संभवछे. माटे केवळ निग्रंथ, बाह्यांभ्यतर परिग्रहनो त्याग, अल्पारंभनो त्याग ए सघळुं नथी थयुं त्यां सुधी हुं मने केवळ सुखी मानतो नथी हवे आपने तत्वनी द्रष्टिए विचारतां मालुम पडशे के लक्ष्मी, स्त्रि, पुत्र के कुटुंब एवडे सुख नथी. अने एने सुख गणुं तो ज्यारे मारी स्थिति पतितथइ हती त्यारे ए सुख क्यां गयुं हतुं? जेनो वियोगछे, क्षणभंगुर छे अने एकत्वनथी ते सुख संपूर्ण नथी. एटला माटे थइने हुं मने सुखी कही नथी शकतो. हुं बहु विचारी विचारी व्यापार वहिवट करतो हतो तोपण मारे आरंभोपाधि, अनीति अने लेश पण कपट सेववुं पड्यु नथी; एम तो नथीज. अनेक प्रकारना आरंभ, अने कपट मारे सेववां पड्यां हतां. आप जो धारता हो के देवोपासनथी लक्ष्मी प्राप्त करवी. तो ते जो पूण्य नहोय तो कोइ काळे मळनार नथी. पूण्यथी लक्ष्मी पामी महारंभ कपट अने मानप्रमुख वधारवां ते महापापनां कारण छे; पाप नर्कमां नाखेछे. पापथी आत्मा पामेलो महान् मनुष्य देह एळे गुमावी दे छे. एकतो जाणे पूण्यने खाइ जवां; बाकी

वळी पापनुं बंधन करवुं; लक्ष्मीनी अने ते वडे आखा संसारनी उपाधि भोगववी ते हुं धारुं छउं के विवेकी आत्माने मान्य न होय. में जे कारणथी लक्ष्मी उपार्जन करी हती; ते कारण में आगळ आपने जणाव्युं हतुं. जेम आपनी इच्छा होय तेम करो. आप विद्वान छो. हुं विद्वानने चाहुं छउं. आपनी अभिलाषा होयतो धर्मध्यानमां प्रसस्त थइ सहकुटुंब अहीं भले रहो. आपनी उपजीविकानी सरळ योजना जेम कहो तेम हुं रुचिपूर्वक करावी आपुं. अहीं शास्त्राध्ययन अने सत् वस्तुनो उपदेश करो. मिथ्यारंभोपाधिनी लोलुपतामां हुं धारुं छउं के न पडो. पछी आपनी जेवी इच्छा.

पंडित—आपे आपना अनुभवनी बहु मनन करवा जेवी आख्यायिका कही. आप अवश्य कोइ महात्माछो पूण्यानुंबंधी पूण्यवान जीव छो. विवेकी छो. आपनी शक्ति अदभूत छे. हुं दरिद्रताथी कंटाळीने जे इच्छा राखतो हतो ते एकांतिक हती. आवा सर्व प्रकारना विवेकी विचार में कर्या नहोता. आवो अनुभव—आवी विवेकशक्ति हुं गमे तेवो विद्वान छउं; छतां मारामां नथीज. ए हुं सत्यज कहुं छउं. आपे मारे माटे जे योजना दर्शावी ते माटे आपनो बहु उपकार मानुं छउं; अने नम्रतापूर्वक ए हुं अंगिकार करवा हर्ष बतावुं छउं. हुं उपाधिने चहातो नथी. लक्ष्मीनो फंद उपाधिज आपे छे. आपनुं अनुभवसिद्ध कथन मने बहु रुच्युं छे. संसार बळतोज छे.

एमां सुख नथी. आपे निरुपाधि मुनिसुखनी प्रशंसा करी ते सत्य छे. परिणामे सर्वोपाधि, आधि व्याधि अने सर्व अज्ञान भाव रहित थइ शाश्वत मोक्षरुपछे.

शिक्षापाठ ६६ सुख विषे विचार भाग६.

धनाढ्यः—आपने मारी वात रुची एथी हुं निराभिमान पूर्वक आनंद पामुं छउं. आपने माटे हुं योग्य योजना करीश. मारा सामान्य विचारो कथानुरुप अहीं हुं कहेवानी आज्ञा लउ छउ.

जेओ केवळ लक्ष्मीने उपार्जन करवामां कपट, लोभ अने मायामां मुझाया पड्या छे ते बहु दुःखी छे. तेनो ते पुरो उपयोग के अधुरो उपयोग करी शकता नथी. मात्र उपाधिज भोगवे छे. ते असंख्यात पाप करेछे. काळ अचानक लइने उपाडी जाय छे. अधोगति पामी ते जीव अनंत संसार वधारे छे. मळेलो मनुष्य देह ए निर्मूल्य करी नाखे छे. जेथी ते निरंतर दुःखीज छे.

जेणे पोतानां उपजीविका जेटलां साधनमात्र अल्पारंभथी राख्यांछे,शुद्ध एक पत्निव्रत, संतोष,परात्मानी रक्षा यम, नीयम, परोपकार, अल्पराग, अल्पद्रव्यमाया. अने सत्य तेमज शास्त्राध्ययन राख्यु छे. सत्पुरुषोने सेवेछे. निर्ग्रंथतानो मनोर्थ राख्यो छे. बहु प्रकारे करीने संसारथी जे त्यागी जेवोछे. जेना उत्कृष्ट वैराग्य अने विवेक छे. ते पवित्रतामां काळ निर्गमन करेछे.

सर्व घनघाती कर्मनो क्षय जेमणे कर्यो छे. चार कर्म पातळां जेनां पड्यां छे. जे मुक्त छे. जे अनंतज्ञानी अने अनंतदर्शि छे ते तो संपूर्ण सुखीज छे. मोक्षमां तेओ अनंत जीवनमां अनंतसुखमां सर्व कर्मविरक्ततांथी विराजेछे

आम सत्पुरुषोए कहेलो मत मने मान्य छे. पहेलो तो मने त्याजछे. बीजो हमणां मान्य छे. अने घणे भागे ए ग्रहण करवानो मारो बोध छे. त्रीजो बहु मान्यछे. अने चोथो तो सर्वमान्य अने सच्चिदानंद स्वरूपज छे.

एम पंडितजी आपनी अने मारी सुखसंबंधी वातचित थइ. प्रसंगोपात ते वात चर्चता जइशुं. तेपर विचार करीशुं. आ विचारो आपने कह्याथी मने बहु आनंद थयो छे. आप तेवा विचारने अनुकूळ थया एथी वळी आनंदमां वृद्धि थइछे. परस्पर एम वातचित करतां करतां हर्षभेर पछी तेओ समाधिभावथी शयन करी गया.

जे विवेकीओ आ सुखसंबंधी विचार करशे तेओ बहु तत्व अने आत्मश्रेणीनी उत्कृष्टताने पामशे. एमां कहेला अल्पारंभी, निरारंभी अने सर्वमुक्त लक्षणो लक्षपूर्वक मनन करवां जेवां छे. जेम बने तेम अल्पारंभी थइ सम्भावथी जनसमुदायनां हित भणी वळवुं, परोपकार, दया, शांति क्षमा अने पवित्रतानुं सेवन करवुं ए बहु सुखदायक छे. निर्ग्रंथता विषे तो विशेष कहेवारूपज नथी. मुक्तात्मा तो अनंत सुखमयज छे.



शिक्षापाठ ६७ अमूल्य तत्वविचार.

हरिगीत छंद.

बहु पुण्यकेरा पुंजथी शुभ देह मानवनो मळ्यो;
तोये अरे! भवचक्रनो आंटो नहि एके टळ्यो;
सुख प्राप्त करतां सुख टळेछे लेश ए लक्षे लहो;
क्षण क्षण भयंकर भावमरणे कां अहो राची रहो? १

लक्ष्मी अने अधिकार वधतां, शुं वध्युं ते तो कहो,
शुं कुटुंब के परिवारथी वधवापणुं, ए नय ग्रहो;
वधवापणुं संसारनुं नर देहने हारी जवो,
एनो विचार नहीं अहोहो! एक पळतमने हवो!!! २

निर्दोष सुख निर्दोष आनंद, ल्यो गमे त्यांथी भले;
ए दिव्य शक्तिमान जेथी जंजिरेथी नीकळे!!
पर वस्तुमां नहिं मुंझवो, एनी दया मुजने रही;
ए त्यागवा सिद्धांत के पश्चातदुख ते सुख नहीं. ३

हुं कोण छुं? क्यांथी थयो? शुं स्वरुपछे मारुं खरुं?
कोना संबंधे वळगणा छे? राखुं के ए परहरुं?
एना विचार विवेक पूर्वक शांत भावे जो कर्या;
तो सर्व आत्मिकज्ञानना सिद्धांततत्व अनुभव्यां. ४

ते—प्राप्त करवा वचन कोनुं सत्य केवळ मानवुं?

निर्दोष नरनुं कथन मानो "तेह" जेणे अनुभव्युं;
रे ! आत्म तारो ! आत्म तारो ! शीघ्र एने ओळखो;
सर्वात्ममां समदृष्टि द्यो आ वचनने हृदये लखो. ५

शिक्षापाठ ६८ जीतेंद्रियता.

ज्यांसुधी जीभ स्वादिष्ट भोजन चाहेछे, ज्यांसुधी नासिका सुगंधी चाहेछे; ज्यांसुधी कान वारांगनानां गायन अने वाजिंत्र चाहेछे, ज्यांसुधी आंख वनोपवन जोवानुं लक्ष राखेछे; ज्यांसुधी त्वचा सुगंधीलेपन चाहेछे. त्यांसुधी ते मनुष्य निरागी, निग्रंथ, निःपरिग्रही, निरारंभी अने ब्रह्मचारी थइ शकतो नथी. मनने वश करवुं ए सर्वोत्तम छे. एना वडे सघळी इंद्रियो वश करी शकाय छे. मन जीतवुं बहु बहु दुर्घट छे. एक समयमां असंख्याता योजन चालनार अश्व ते मन छे. एने थकाववुं बहु दुर्लभ छे. एनी गति चपळ अने न झाली शकाय तेवी छे. महा ज्ञानीओए लगामवडे करीने एने स्थंभित राखी सर्व जय कर्योछे.

उत्तराध्ययन सूत्रमां नमिराज महर्षिए शक्रेंद्रप्रत्ये एम कह्युं के दश लाख सुभटने जीतनार कंइक पड्या छे; परंतु स्वात्माने जीतनारा बहु दुर्लभ छे; अने ते दश लाख सुभटने जीतनार करतां अत्युत्तम छे.

मनज सर्वोपाधिनी जन्मदाता भूमिका छे. मनज बंध अने मोक्षनुं कारण छे. मनज सर्व संसारनी मोहिनी

रुपछे. ए वश थतां आत्मस्वरुपने पामवुं लेश दुर्लभ नथी.

मनवडे इंद्रियोनी लोलुपता छे भोजन, वाजित्र, सुगंधी, स्त्रिनुं निरक्षन,सुंदर विलेपन ए सघळुं मनज मागे छे. ए मोहिनी आडे ते धर्मने संभारवा पण देतुं नथी. संभार्या पछी सावधान थवा देतुं नथी. सावधान थया पछी पतितता करवामां प्रवृत्त थाय छे. एमां नथी फावतुं त्यारे सावधानीमां कंइ न्यूनता पहोंचाडे छे. जेओ ए न्यूनता पण न पामतां अडग्ग रहीने मन जीते छे ते सर्व सिद्धिने पामे छे.

मन अकस्मात कोइथीज जीती शकायछे, नहींतो अभ्यास गृहस्थाश्रमे करीनेज जीतायछे,ए अभ्यास निग्रंथतामां बहू थइ शकेछे छतां सामान्य परिचय मांगीए तो तेनो मुख्य मार्ग आ छे के ते जे दुईच्छा करे तेने भूली जवी, तेम करवुं नहीं. ते ज्यारे शब्दस्पर्शादि विलास इच्छे त्यारे आपवां नहीं. टुंकामां आपणे एथी दोरावुं नहीं पण आपणे एने दोरवुं; अने दोरवुं ते पण मोक्षमार्गमां. जीतेंद्रियता विना सर्व प्रकारनी उपाधि उभिज रही छे. त्यागे न त्याग्या जेवो थाय छे, लोक लज्जाए तेने सेववो पडे छे. माटे अभ्यासे करीने पण मनने जीतीने स्वाधिनतामां लई अवश्य आत्महित करवुं.

शिक्षापाठ ६९ ब्रह्मचर्यनी नववाड.

ज्ञानीओए थोडा शब्दोमां केवो भेद अने केवुं स्वरुप

बताव्युं छे! ए वडे केटली बधी आत्मोन्नति थायछे. ब्रह्मचर्य जेवा गंभिर विषयनुं स्वरुप संक्षेपमां अति चमत्कारिक रीते आप्युं छे. ब्रह्मचर्यरुपी एक सुंदर झाड अने तेने रक्षा करनारी जे नव विधियो तेने वाडनुं रुप आपी आचार पाळवामां विशेष स्मृति रही शके एवी सरळता करी छे. ए नववाड जेम छे तेम अहीं कही जउं छउं.

१ वस्ती. जे ब्रह्मचारी साधु छे तेमणे ज्यां स्त्रि, पशु पडंग एथी करीने जे संयुक्त वस्ती होय त्यां रहेवुं नहीं. स्त्रि बे प्रकारनी छे मनुष्यिणी अने देवांगना: ए प्रत्येकना पाछा बे बे भेद छे. एकतो मूळ अने बीजी स्त्रिनी मूर्ति के चित्र ए प्रकारनो ज्यां वास होय त्यां ब्रह्मचारी साधुए न रहेवुं. पशु एटले तिर्यंचणी गाय भेंस इत्यादिक जे स्थळ होय ते स्थळे न रहेवुं; अने पडंग एटले नपुंसक एनो वास होय त्यां पण न रहेवुं. एवा प्रकारनो वास ब्रह्मचर्यनी हानि करे छे. तेओनी कामचेष्टा हाव भाव इत्यादिक विकारो मनने भ्रष्ट करे छे.

२ कथा. केवल एकली स्त्रियोनेज के एकज स्त्रिने धर्मोपदेश ब्रह्मचारीए न करवो. कथा ए मोहनी उत्पत्तिरुप छे. स्त्रिना रुप संबंधी ग्रंथो, कामविलास संबंधी ग्रंथोके जेथी चित्त चळे एवा प्रकारनी गमे ते शृंगार संबंधी कथा ब्रह्मचारीए न करवी.

३ आसन—स्त्रियोनी साथे एक आसने न बेसवुं. ज्यां स्त्रि बेठी होय त्यां बे घडी सुधीमां ब्रह्मचारी ए न बे-

सर्व. ए स्त्रियोनी स्मृतिनुं कारण छे. विकारनी उत्पत्ति छे. एम भगवाने कह्युं छे.

४ इंद्रियनिक्षन—स्त्रियोनां अंगोपांग ब्रह्मचारी साधुए न जोवां. एनां अमुक अंगपर द्रष्टि एकाग्र थवाथी विकारनी उत्पत्ति थायछे

५ कुड्यांतर—जे भीत, कनात के त्राटानां अंतरपटमां होवाथी स्त्रि पुरुष ज्यां मैथुन सेवे त्यां ब्रह्मचारीए रहेवुं नहीं. कारण शब्द, चेष्टादिक विकारनां कारणछे.

६ पूर्वक्रिडा –पोते गृहस्थावासमां गमे तेवी जातना शृंगारथी विषयक्रिडा करी होय तेनी स्मृति करवी नहीं. करवाथी ब्रह्मचर्य भंग थायछे.

७ प्रणीत—दूध, दहीं, घृत, मधुग अने चीकाशवाळा पदार्थोनो बहुधा अहार न करवो. एथी विर्यनी वृद्धि अने उन्मादथी कामनी उत्पत्ति थायछे. माटे ब्रह्मचारीए तेम करवुं नहीं.

८ अतिमात्राहार—पेट भरीने अहार करवो नहीं, तेम अति मात्रानी उत्पत्ति थाय तेम करवुं नहीं एथी पण विकार वधेछे.

९ विभूषण—स्नान, विलेपन, पुष्पादिक ब्रह्मचारीए ग्रहण करवुं नहीं एथी ब्रह्मचर्यने हानि उत्पन्न थायछे.

एम भगवंते नववाड विशुद्ध ब्रह्मचर्यने माटे कहीछे. बहुधा ए तमारा सांभळवामां आवी हशे; परंतु गृहस्थावासमां अमुक अमुक दीवस ब्रह्मचर्य धारण करवामां अ-

भ्यासीओने लक्षमां रहेवा अहीं आगळ कंइक समजणपूर्वक कही छे.

शिक्षापाठ ७० सनंतकुमार भाग १.

चक्रवर्त्तिना वैभवमां शी खामी होय? सनंतकुमार ए चक्रवर्त्ति हतो. तेनां वर्ण अने रूप अत्युत्तम हतां. एक वेळा सुधर्मसभामां ते रूपनी स्तुति थइ; कोइ बे देवोने ते वात रुची नहीं; पछी तेओ ते शंका टाळवाने विप्ररूपे सनंतकुमारनां अंतःपुरमां गया. सनंतकुमारनो देह ते वेळा खेळथी भर्यो हतो. तेने अंग मर्दनादिक पदार्थोनुं मात्र विलेपन हतुं. एक नानुं पंचीयुं पहेर्युं हतुं. अने ते स्नान मंजन करवा माटे बेठो हतो. विप्ररूपे आवेला देवता तेनुं मनोहर मुख, कंचनवर्णि काया, अने चंद्र जेवी कांति जोइने बहु आनंद पाम्या; अने माथुं धुणाव्युं एटले चक्रवर्त्तिए पूछ्युं तमे माथुं शा माटे धुणाव्युं? देवोए कह्युं, अमे तमारुं रूप अने वर्ण निरक्षन करवा माटे बहु अभिलाषी हता. स्थळे स्थळे तमारा वर्ण रुपनी स्तुति सांभळी हती, आजे ते अमे प्रत्यक्ष जोयुं एथी अमने पूर्ण आनंद उपज्यो. माथुं धुणाव्युं एनुं कारण एके जेवुं लोकोमां वायकछे तेवुंज रूपछे. एथी विशेपछे पण ओछुं नथी. सनंतकुमार स्वरुप वर्णनी स्तुतिथी प्रभूत लावी बोल्यो तमे आ वेळा मारुं रूप जोयुं ते भले. परंतु हुं राजसभामां वस्त्रालंकार धारण करी, केवळ सज थइने ज्यारे सिंहास-

नपर वेसुं छउं. सारे मारुं रुप अने मारो वर्ण जोवा यो-
ग्य छे. असारे तो हुं खेळभरी कायाए बेठो छउं. जो ते
वेळा तमे मारां रुपवर्ण जुओ तो अद्भुत चमत्कारने पामो
अने चांकत थइ जाओ देवोए कह्युं सारे पछी अमे रा-
जसभामां आवीशुं; एम कहीने सांथी चाल्या गया. स
नंतकुमारे सार पछी उत्तम वस्त्रालंकारो धारण कर्या. अ
नेक उपचारथी जेम पोतानी काया विशेष आश्चर्यता उ
पजावे तेम करीने ते राजसभामां आवी सिंहासनपर बेठो.
आजु बाजु समर्थ मंत्रियो, सुभटो, विद्वानो अने अन्य स
भासदो योग्य आसने बेसी गया हता. राजेश्वर चामर
छत्रथी अने खमा खमाथी विशेष शोभी रह्यो छे तेमज व
धाइ रह्यो छे. सां पेला देवताओ पाछा विप्ररुपे आव्या
अद्भूत रुपवर्णथी आनंद पामवाने बदले जाणे खेद पा-
म्या छे एवा स्वरुपमां तेओए माथुं धुणाव्युं. चक्रवर्तिए
पूछयुं अहो ब्राह्मणो ! गइ वेळा करतां आ वेळा तमे
जूदा रुपमां माथुं धुणाव्युं एनुं शुं कारणछे? ते मने कहो
अवधज्ञानानुसारे विप्रे कह्युं के हे महाराजा ? ते रुपमां
अने आ रुपमां भूमी आकाशनो फेर पडी गयो छे. च-
क्रवर्तिए ते स्पष्ट समजाववाने कह्युं. ब्राह्मणोए कह्युं अधि
राज ! प्रथम तमारी कोमळ काया अमृत तुल्य हती. आ
वेळाए झेररुपछे ज्यारे अमृततुल्य अंग हतुं सारे आ-
नंद पाम्या, अने आ वेळा झेर तुल्यछे सारे खेद पाम्या
अमे कहीए छीए ते वातनी सिद्धता करवी होय तो तमे

तांबुल थंको, तत्काळ ते पर मांखी बेसशे अने ते पर लोक पहोंची जशे.



शिक्षापाठ ७१ सनतकुमार भाग २.

सनंतकुमारे ए परिक्षा करी तो सत्य ठरी; पूर्वित कर्मनां पापनो जे भाग तेमां आ कायाना मद संबंधीनुं मेळवण थवाथी ए चक्रवर्त्तिनी काया झेरमय थइ गइ हती. विनाशी अने अशुचीमय कायानों आवो प्रपंच जोइने सनंतकुमारने अंतःकरणमां वैराग्य उत्पन्न थयो. केवळ आ संसार तजवा योग्य छे. आवीने आवी अशुची स्त्रि, पुत्र मित्रादिनां शरीरमां रही छे. ए सघळुं मोहमान करवा योग्य नथी. एम बोलीने ते छ खंडनी प्रभूता त्याग करीने चाली नीकळ्यो. साधुरुपे ज्यारे विचरतो हता त्यारे महा रोग उत्पन्न थयो तेना सत्यत्वनी परिक्षा लेवाने कोइ देव त्यां वैदरुपे आव्यो साधुने कह्युं हुं बहु कुशळ राजवैद छउं. तमारी काया रोगनो भोग थयेली छे. जो इच्छा होय तो तत्काळ हुं ते रोगने टाळी आपुं. साधू बोल्या, हे वैद ! कर्मरुपी रोग महोन्मत्त छे; ए रोग टाळवानी तमारी जो समर्थता होय तो भले मारो ए रोग टाळो ए समर्थता न होय तो ए रोग भले रह्यो. देवता बोल्यो, ए रोग टाळवानी समर्थता नथी, साधुए पोतानी लब्धिनां परिपूर्ण प्रबळवडे थुंकवाळी अंगुली करी ते रोगने खरडी के तत्काळ ते रोग नाश थयो; अने काया

पाछी हती तवी बनी गइ. पछी ते वेळा देवे पोतानुं स्वरूप प्रकाश्युं; धन्यवाद गाइ वंदन करी पोताने स्थानके गयो.

रक्तपीत जेवा सदैव लोही परुथी गदगदता महा रोगनी उत्पत्ति जे कायामां छे; पळमां वणसी जवानो जेनो स्वभाव छे. जेना प्रत्येक रोमे पोणाबब्बे रोगनो निवास छे; तेवां साडात्रण करोड रोमथी ते भरेली होवाथी साडापांच करोड रोगनो ते भंडार छे. अन्न वगेरेनी न्यूनाधिकताथी ते प्रत्येक रोग जे कायामां देखाव दे छे. मळमुत्र, नर्क, हाड, मांस, परु अने श्लेष्मथी जेनुं बंधारण टक्युं छे. त्वचाथी मात्र जेनी मनोहरता छे ते कायानो मोह खरे! विभ्रमज छे. सनंतकुमारे जेनुं लेशमात्र मान मान कर्युं ते पण तेथी संखायुं नहीं ते कायामां अहो पामर! तुं शुं मोहे छे! ए मोह मंगळदायक नथी.

शिक्षापाठ ७२ बत्रिश योग.

सत्पुरुषो नीचेना बत्रिश योगनो संग्रह करी आत्माने उज्वळ करवानुं कहेछे.

१. शिष्य पोताना जेवो थाय तेने माटे तेने श्रुतादिक ज्ञान आपवुं.

२. पोताना आचार्यपणानुं जे ज्ञान होय तेनो अन्यने बोध आपवो, अने प्रकाश करवो.

३. आपत्तिकाळे पण धर्मनुं द्रढपणुं त्यागवुं नहीं.

४. लोक, परलोकनां सुखनां फळनी वांछना विना तप करवो.

५. शिक्षा मळी ते प्रमाणे यथार्थी वर्त्तवुं; अने नवी शिक्षा विवेकथी ग्रहण करवी.

६. ममत्वनो त्याग करवो.

७. गुप्त तप करवो.

८. निर्लोभता राखवी.

९. परिसह उपसर्गने जीतवा.

१०. सरळ चित्त राखवुं.

११. आत्मसंयम शुद्ध पाळवो.

१२. समकित शुद्ध राखवुं.

१३. चित्तनी एकाग्र समाधि राखवी.

१४. कपटरहित आचार पाळवो.

१५. विनय करवा योग्य पुरुषोनो यथा योग्य विनय करवो.

१६. संतोषथी करीने तृश्नानी मर्यादा टुंकी करी नांखवी.

१७. वैराग्यभावनामां निमग्न रहेवुं.

१८. मायारहित वर्त्तवुं.

१९. शुद्ध करणीमां सावधान थवुं.

२०. सम्वरने आदरवो अने पापने रोकवां.

२१. पोताना दोष सम्भावपूर्वक टाळवा.

२२. सर्व प्रकारना विषयथी विरक्त रहेवुं.

२३. मूळ गुणे पंचमहाव्रत्त विशुद्ध पाळवां.

२४. उत्तर गुणे पंचमहाव्रतने विशुद्ध पाळवां.

२५. उत्साह पूर्वक कायोत्सर्ग करवो.

२६. प्रमाद रहित ज्ञान ध्यानमां प्रवर्त्तन करवुं.

२७. हमेशां आत्मचारित्रमां सूक्ष्म उपयोगथी वर्त्तवुं.

२८. ध्यान, जीतेंद्रियता अर्थे एकाग्रतापूर्वक करवुं,

२९. मरणांत दुःखथी पण भय पामवो नहीं.

३० स्त्रियादिकना संगने त्यागवो.

३१. प्रायश्चित विशुद्धि करवी.

३२. मरणकाले आराधना करवी.

ए अकेको योग अमूल्य छे. सघळा संग्रह करनार परिणामे अनंत सुखने पामेछे.

शिक्षापाठ ७३ मोक्षनां सुख.

केटलीक आ सृष्टिमंडळपर पण एवी वस्तुओ अने मनेच्छा रही छे के जे केटलाक अंशे जाणता छतां कही शकाती नथी. छतां ए वस्तुओ कंइ संपूर्ण शाश्वत के अनंत भेदवाळी नथी. एवी वस्तुनुं ज्यारे वर्णन न थइ शके त्यारे अनंत सुखमय मोक्ष संबंधीनी उपमा क्यांथीज मळे? भगवानने गौतमस्वामीए मोक्षना अनंत सुखविषे प्रश्न कर्युं. त्यारे भगवाने उत्तरमां कह्युं गौतम! ए अनंतसुख हुं जाणुं छउं; पण ते कही शकाय एवी अहीं आगळ कंइ उपमा नथी जगत्मां ए सुखना तुल्यनी कोइपण वस्तु के

सुख नथी. एम वदी एक भीलनुं द्रष्टांत नीचेना भावमां आप्युं हतुं.

एक जंगलमां एक भद्रिकभील तेनां बाळबच्चां सहीत रहेतो हतो. शहेर वगेरेनी समृद्धिनी उपाधिनुं तेने लेश भान पण नहोतुं. एक दीवसे कोइ राजा अश्वक्रीडा माटे फरतो फरतो त्यां नीकळी आव्यो, तेने बहु तृषा लागी हती; जेथी करीने सानवडे भील आगळ पाणी माग्युं. भीले पाणी आप्युं. शीतळ जळथी राजा संतोषायो. पोताने भील तरफथी मळेलां अमूल्य जळदाननो प्रत्युपकार करवा माटे थइने भीलने समजावीने साथे लीधो. नगरमां आव्या पछी भीले जींदगीमां नहीं जोयेली वस्तुमां तेने राख्यो. सुंदर महेलमां, कने अनेक अनुचरो मनोहर छत्र पलंग अने स्वादिष्ट भोजनथी मंदमंद पवनमां, सुगंधी विलेपनमां तेने आनंद आनंद करी आप्यो. विविध जातिना हीरामाणेक, मौक्तिक, मणिरत्न अने रंग बेरंगी अमूल्य चीजो निरंतर ते भीलने जोवा माटे मोकल्या करे. बागबगीचामां फरवा हरवा मोकले. एम राजा तेने सुख आप्या करतो हतो. कोइ रात्रे बधां सूइ रह्यां हतां, त्यारे ते भीलने बाळबच्चां सांभरी आव्यां एटले ते त्यांथी कंइ लीधा कर्याविगर एकाएक नीकळी पड्यो. जइने पोतानां कुटुंबीने मळ्यो. ते बधांये मळीने पूछ्युं के तुं क्यां हतो? भीले कह्युं बहु सुखमां. त्यां में बहु वखाणवा लायक वस्तुओ जोइ.

कुटुंबीओ—पण ते केवी? ते तो अमने कहे.

भील—शुं कहुं, अहीं एवी एके वस्तुज नथी.

कुटुंबीओ—एम होय के? आ शंखलां, छींप, कोडां केवां मजानां पड्यांछे; त्यां कोइ एवी जोवालायक वस्तु हती?

भील—नहीं, नहीं भाइ, एवी चीज तो अहीं एके नथी. एना सोमा भागनी के हजारमा भागनी पण मनोहर चीज अहीं नथी.

कुटुंबीओ—त्यारे तो तुं बोल्याविना बेठो रहे. तने भ्रमना थइछे आथी ते पछी सारुं शुं हशे?

हे गौतम! जेम ए भील राजवैभवसुख भोगवी आव्यो हतो; तेमज जाणतो हतो; छतां उपमा योग्य वस्तु नहीं मळवाथी ते कंइ कही शकतो नहोतो. तेम अनुपमेय मोक्षनी, सच्चिदानंद स्वरूपमय निर्विकारी मोक्षनां सुखना असंख्यातमा भागने पण योग्य उपमेय नहीं मळवाथी हुं तने कही शकतो नथी.

मोक्षनां स्वरूपविषे शंका करनारा तो कुतर्कवादीछे एओने क्षणिक सुखसंबंधी विचार आडे सत्सुखनो विचार नथी. कोइ आत्मिकज्ञानहिन एम पण कहेछे के आथी कोइ विशेष सुखनुं साधन त्यां रह्युं नहीं. एटले अनंत अव्याबाध सुख कही देछे आ एनुं कथन विवेकी नथी. निद्रा प्रत्येक मानवीने प्रिय छे; पण तेमां तेओ कंइ जाणी के देखी शकता नथी; अने जाणवामां आवे तो मात्र स्वप्नोपाधिनुं मिथ्यापणुं आवे जेनी कंइ असरपण

थाय ए स्वप्ना वगरनी निद्रा जेमां सूक्ष्मस्थूळ सर्व जाणी अने देखी शकाय; अने निरुपाधिथी शांत उंघ लइ शकाय तो तेनुं ते वर्णन शुं करी शके? एने उपमा पण शी आपे? आ तो स्थूळ द्रष्टांत छे; पण बाल अविवेकीए परथी कंइ विचार करी शके ए माटे कह्युं छे.

भीलनुं द्रष्टांत, समजाववा रुपे भाषाभेदे फेरफारथी तमने कही बताव्युं.

शिक्षापाठ ७४ धर्मध्यान भाग १.

भगवाने चार प्रकारनां ध्यान कह्यां छे. आर्त्त, रौद्र, धर्म अने शुक्ल. पहेलां बे ध्यान त्यागवा योग्यछे. पाछळनां बे ध्यान आत्मसार्थक रुपछे. श्रुतज्ञानना भेद जाणवा माटे शास्त्रविचारमां कुशळ थवा माटे निर्ग्रंथप्रवचननुं तत्व पामवा माटे सत्पुरुषोए सेववा योग्य, विचारवा योग्य अने ग्रहण करवा योग्य धर्मध्यानना मुख्य सोळ भेद छे. पहेलां चार भेद कहुं छउं. १ आणाविजये (आज्ञाविचय) २ आवायविजय (अपायविचय) ३ विवागविजये (विपाकविचय) ४ सठांणविजय (संस्थानविचय) १ आज्ञाविचय. आज्ञा एटले सर्वज्ञ भगवंते धर्मतत्व संबंधी जे जे कह्युं छे ते ते सत्य छे. एमां शंका करवा जेवुं नथी काळनी हिनताथी, उत्तम ज्ञानना विच्छेद जवाथी; बुद्धिनी मंदताथी के एवां अन्य कोइ कारणथी मारी समजवामां ते तत्व आवतुं नथी. परंतु अर्हंत भगवंते अंश मात्र पण माया युक्त के असत्य कह्युं नथीज. कारण एओ निरागी, त्यागी, अने निस्पृही हता. मृषा कहेवानुं कंइ कारण

एमने हतुं नहीं. तेम एओ सर्वज्ञ अने सर्वदर्शि हो॰ वाथी अज्ञानथी पण मृषा कहे नहीं, ज्यां अज्ञानज नथी. त्यां ए संबंधी मृषा क्यांथी होय? एवुं जे चिंत्तन करवुं ते आज्ञाविचय नामे प्रथम भेद छे. २ अपायविचय. राग, द्वेष, काम, क्रोध एथी जे दुःख उत्पन्न थाय छे तेनुं जे चिंत्तवन करवुं ते अपायविचय नामे बीजो भेद छे.अपाय एटले दुःख ३विपाकविचय.हुं जे जे क्षणे क्षणे दुःख सहन करुं छउं; भवाटविमां पर्यटन करुं छउं; अज्ञानादिक पामुं छउं ते सघळुं कर्मना फळना उदय वडे करी नेछे. ए धर्म ध्यानना त्रीजो भेद छे. ४संस्थानविचय. त्रण लोकनुं स्वरुप चिंतववुं. ते लोकस्वरुप सुप्रतिष्टिकने आकारेछे. जीव अजीवे करीने संपूर्ण भरपुर छे. असंख्यात योज ननी कोटानुकोटीए त्रिच्छो लोक छे. ज्यां असंख्याता द्विप—समुद्र छे. असंख्याता ज्योतिष्यि, वाणव्यंतरादि॰ कना निवास छे. उत्पाद, व्यय अने ध्रुवनानी विचित्रता एमां लागी पडीछे. अढी द्विपमां जघन्य तिर्थकर २० उ॰ त्कुष्टा एकसो सितेर होय. तथा केवळी भगवान अने निग्रंथ मुनिराज विचरे छे. तेओने वंदामि, नमंसामि, सक्का॰ रेमि, समाणेमि, कल्लाणं, मंगळं, देवयं, चेइयं पजजुवासामि तेमज त्यां वसता श्रावक, श्राविकानां गुणग्राम करीए. ते त्रिछालोकथकी असंख्यात गुणो अधिको उर्द्ध लोक छे, त्यां अनेक प्रकारना देवताओना निवास छे. पछी इषत प्राग्भाराछे ते पछि मुक्तात्माओ विराजे छे. तेने वंदामि,

यावत् पज्जुवासामि ते उर्द्ध लोकथी कंइक विशेष अधो लोक छे त्यां अनंत दुःखथी भरेला नर्कावास अने भुवन पतिना भुवनादिकछे ए त्रण लोकनां सर्व स्थानक आ आत्माए सम्यक्‌रहितकरणीथी अनंतिवार जन्ममरण करी स्पर्शि मूक्यां छे. एम जे चिंतन करवुं ते संस्थान विचय नामे धर्म ध्याननो चोथो भेदछे.ए चार भेद विचारीने सम्यक्‌सहित श्रुत अने चारित्र धर्मनी आराधना करवी. जेथी ए अनंत जन्म मरण टळे. ए धर्मध्यानना चार भेद स्मरणमां राखवा.

शिक्षापाठ ७५ धर्मध्यान भाग २.

धर्मध्याननां चार लक्षण कहुं छउं. आज्ञारुचि—एटले वितराग भगवाननी आज्ञा, अंगिकार करवानी रुची उपजे ते. २. निसर्ग रुचि—आत्मा स्वाभाविकपणे जांते समणादिक ज्ञाने करी श्रुत सहित चारित्र धर्म धरवानी रुचि पामे तेने निसर्ग रुचि कही छे. ३ सुत्र रुचि. श्रुतज्ञान, अने अनंत तत्वना भेदने माटे भाखेलां भगवानना पवित्र—वचनोनुं जेमां गुंथन थयुं छे. ते सुत्र श्रवण करवा, मनन करवा, अने भावथी पठन करवानी रुचि उपजे ते सुत्र रुचि. ४ उपदेशरुचि. अज्ञाने करीने उपार्जेलां कर्म ज्ञाने करीने खपावीए तेमज ज्ञानवडे करीने नवां कर्म न बांधीए. मिथ्यात्वे करीने उपार्ज्यां

कर्म ते सम्यकभावथी खपावीए, सम्यकभावथी नवां क-र्म न बांधीए. अवैराग्ये करीने उपार्ज्यां कर्म ते वैराग्ये करीने खपावीए अने वैराग्यवडे करीने पाछां नवां कर्म न बांधीए. कषाये करी उपार्ज्यां कर्म ते कषाय टाळीने खपावीए. पथी नवां कर्म न बांधीए. अशुभ योगे करी उपार्ज्यां कर्म ते शुभ योगे करी खपावीए, शुभ योगेकरी नवां कर्म न बांधीए. पांच इंद्रियना स्वादरूप आश्रवे क-री उपार्ज्यां कर्म ते संवरे करी खपावीए. तपरूप संवरे करी नवां कर्म न बांधीए. ते माटे अज्ञानादिक आश्रव-मार्ग छांडीने ज्ञानादिक संवरमार्ग गृहण करवा माटे ति-र्थंकर भगवंतनो उपदेश सांभळवानी रुचि उपजे तेने उपदेश रुचि कहीए. ए धर्मध्यानना चार लक्षण कहेवाय.

धर्म ध्यानना चार आलंबन कहुं छउं. १ वांचना २ पृच्छना ३ परावर्त्तना ४ धर्मकथा. वांचना एटले विनय सहित निर्जरा तथा ज्ञान पामवाने माटे सूत्र सिद्धांतना मर्मना जाणनार गुरु के सत्पुरुष समिपे सूत्र तत्वनुं वांच-न लइए तेनुं नाम वांचनाआलंबन. २ पृच्छणा. अपु-र्व ज्ञान पामवा माटे, जिनेश्वर भगवंतनो मार्ग दीपाववाने तथा शंकाशल्य निवारवाने माटे तेमज अन्यना तत्वनी म-ध्यस्थ परिक्षाने माटे यथायोग्य विनय सहित गुर्वादिकने प्रश्नपूछीए तेने पृच्छना कहीए. ३ परावर्त्तना. पूर्वे जिनभा-षित सूत्रार्थ जे भण्या होइए ते स्मरणमां रहेवा माटे, निर्जरा

ने अर्थ शुद्ध उपयोग सहित शुद्ध सूत्रार्थनी वारंवार सज्झाय करीए तेनुं नाम परावर्त्तनालंबन. ४ धर्मकथा. वितराग भगवाने जे भाव जेवा प्रणित कर्याछे ते भाव तेवा लइने, ग्रहीने विशेषे करीने, निश्चय करीने, शंका, कंखा अने वितिगिछारहितपणे, पोतानी निर्जराने अर्थे सभामध्ये ते भाव तेवा प्रणित करीए तेने धर्मकथालंबन कहीए. जेथी सांभळनार, सद्दहनार बन्ने भगवंतनी आज्ञाना आराधक थाय. ए धर्मध्याननां चार आलंबन कहेवायां. धर्मध्याननी चार अनुप्रेक्षा कहुं छउं. १ एकत्वानुप्रेक्षा. २ अनित्यानुप्रेक्षा. ३ अशरणानुप्रेक्षा. ४ संसारानुप्रेक्षा. ए चारेनो बोध बार भावनाना पाठमां कहेवाइ गयोछे. ते तमने स्मरणमां हशे.

शिक्षापाठ ७६ धर्मध्यान भाग ३.

धर्मध्यान पूर्वाचार्योए अने आधुनिक मुनीश्वरोए पण विस्तारपूर्वक बहु समजाव्युं छे. ए ध्यानवडे करीने आत्मा मुनीत्वभावमां निरंतर प्रवेश करेछे.

जे जे नियमो एटले भेद, लक्षण, आलंबन अने अनुप्रेक्षा कही ते बहु मनन करवा जेवी छे. अन्य मुनीश्वरोना कहेवा प्रमाणे में सामान्य भाषामां ते तमने कही; ए साथे निरंतर लक्ष राखवानी आवश्यकता छे के एमांथी आपणे कयो भेद पाम्या; अथवा कया भेदभणी भावना राखी छे? ए सोळ भेदमांनो गमे ते भेद हितस्वि

अने उपयोगी छे; परंतु जेवा अनुक्रमथी लेवो जोइए ते अनुक्रमथी लेवायतां ते विशेष आत्मलाभनुं कारण थइपडे.

सूत्रसिद्धांतनां अध्ययनो केटलाक मुखपाठे करेछे; तेना अर्थ, तेमां कहेलां मूळतत्वो भणी जो तेओ लक्ष पहोंचाडे तो केटलक सूक्ष्मभेद पामी शके. केळनां पत्रमां पत्रमां पत्रनी जेम चमत्कृति छे तेम सूत्रार्थने माटे छे. ए उपर विचार करतां निर्मळ अने केवळ दयामय मार्गनो जे वितरागप्रणित तत्वबोध तेनुं बीज अंतःकरणमां उगी नीकळशे. ते अनेक प्रकारनां शास्त्रावलोकनथी, प्रश्नोत्तर विचारथी अने सत्पुरुषना समागमथी पोषण पामीने वृद्धि थई वृक्षरूपे थशे. निर्जरा अने आत्मप्रकाशरूप पछी ते वृक्ष फळ आपशे.

श्रवण, मनन अने निदिध्यासनना प्रकारो वेदांतवादियोए बताव्या छे; पण जेवा आ धर्मध्यानना पृथक् पृथक् सोळ भेद कह्या छे तेवा तत्वपूर्वक भेद कोई स्थळे नथी, ए अपूर्व छे. एमांथी शास्त्रने श्रवण करवानो, मनन करवानो, विचारवानो, अन्यने बोध करवानो, शंकाकंखा टाळवानो, धर्मकथा करवानो, एकत्व विचारवानो, अनित्यता विचारवानो, अशरणता विचारवानो, वैराग्य पामवानो संसारनां अनंत दुःख मनन करवानो, अने वितराग भगवंतनी आज्ञावडे करीने आखा लोकालोकना विचार करवानो अपूर्व उत्साह मळेछे. भेदे भेदे करीने एना पाछा अनेक भाव समजाव्या छे.

धर्मोना केटलाक भाव समजवाथी तप्प, शांति, क्षमा, दया वैराग्य अने ज्ञाननो बहु बहु उदय थशे.

तमे कदापि ए सोळ भेदनुं पठन करी गया हशो तो पण फरी फरी तेनुं परावर्त्तन करजो.

शिक्षापाठ ७७ ज्ञान संबंधी बे बोल भाग १.

जेवडे वस्तुनुं स्वरुप जाणीए ते ज्ञान. ज्ञान शब्दनो आ अर्थ छे. हवे यथामति विचारवानुं छे के ए ज्ञाननी कंइ आवश्यकता छे? जो आवश्यकता छे तो ते प्राप्तिनां कंइ साधन छे? जो साधन छे तो तेने अनुकूळ देशकाळ भाव छे? जो देशकाळादिक अनुकूळे छे तो क्यां सुधी अनुकूळ छे? विशेष विचारमां ए ज्ञानना भेद केटलाछे? जाणवारुप छे शुं? एना वळी भेद केटलाछे? जाणवाना साधन क्यां क्यां छे? कयि कयि वाटे ते साधनो प्राप्त कराय छे? ए ज्ञाननो उपयोग के परिणाम शुं छे? ए जाणवुं अवश्यनुं छे.

१. ज्ञाननी शी आवश्यकता छे? ते विषे प्रथम विचार करीए. आ चतुर्दश रज्जवात्मक लोकमां, चतुर्गतिमां अनादिकाळथी सकर्मस्थितिमां आ आत्मानुं पर्यटन छे.

मेषानुमेष पण सुखनो ज्यां भाव नथी एवां नर्कनिगोदादिक स्थानक आ आत्माए बहु बहु काळ वारंवार सेवन कर्यां छे; असह्य दुःखोने पुनःपुनः अने कहो तो अनंतिवार सहन कर्यां छे. ए उतापथी निरंतर तापतो आत्मा मात्र स्वकर्मविपाकथी पर्यटन करेछे. पर्यटननुं कारण अनंत दुःखद ज्ञानावरणादि ३० कर्मो छे. जेवडे करीने आत्मा स्वस्वरुपने पामी शकतो नथी; अने विषयादिक मोहबंधनने स्वस्वरुप मानी रह्यो छे. ए सघळांनुं परिणाम मात्र उपर कह्युं तेज छेके अनंत दुःख अनंत भावे करीने सहेवुं, गमे तेटलुं अप्रिय, गमे तेटलुं खेददायक अने गमे तेटलुं रौद्र छतां जे दुःख अनंतकाळथी अनंतिवार सहन करवुं पडयुं; ते दुःख मात्र रह्युं ते अज्ञानादिक कर्मथी ए अज्ञानादिक टाळवा माटे ज्ञाननी परिपूर्ण आवश्यकता छे.



शिक्षापाठ ७८ ज्ञान संबंधी बे बोल भाग २.

२ हवे ज्ञानप्राप्तिनां साधनो विषे कंइ विचार करीए. अपूर्ण पर्याप्तिवडे परिपूर्ण आत्मज्ञान साध्य थतुं नथी ए माटे थईने छ पर्याप्तियुक्त जे देह ते आत्मज्ञान साध्य करी शके. एवो देह ते एक मानवदेह छे. आ स्थळे प्रश्न उठशे के मानव देह पामेला अनेक आत्माओछे,तो ते

सघळा आत्मज्ञान कां पामता नथी ? ए उत्तरमां आपणे मानी शकीशुं केजेओ संपूर्ण आत्मज्ञानने पाम्यांछे तेओनां पवित्र वचनामृतनी तेओने श्रुति नहीं होय. श्रुतिविना संस्कार नथी. जो संस्कार नथी तो पछी श्रद्धा क्यांथी होय? अने ज्यां ए एके नथी त्यां ज्ञानप्राप्ति शानी होय ? ए माटे मानवदेहनी साथे सर्वज्ञवचनामृतनी प्राप्ति अने तेनी श्रद्धा ए पण साधनरूपछे. सर्वज्ञवचनामृत अकर्म भूमि के केवळ अनार्य भूमिमां मळतां नथी तो पछी मानवदेह शुं उपयोगनो ए माटे थइने आर्यभूमि ए पण साधनरूप छे. तत्वनी श्रद्धा उपजवा अने बोध थवा माटे निर्ग्रंथ गुरुनी अवश्यछे. द्रव्ये करीने जे कुळ मिथ्यात्वि छे. ते कुळमां थयेलो जन्मपण आत्मज्ञान प्राप्तिनी हानी रूपज छे. कारण धर्ममत भेद ए अति दुःखदायकछे. परंपराथी पूर्वजोए ग्रहण करेलुं जे दर्शन तेमांज सत्यभावना बंधाय छे;एथी करीने पण आत्मज्ञान अटके छे. ए माटे भलुं कुळ. ए सघळां प्राप्त करवा माटे थइने भाग्यशाळी थवुं तेमां सद्पुण्य एटले पुण्यानुबंधी पुण्य इत्यादिक उत्तम साधनो छे. ए द्वितिय साधन भेद कह्यो.

३ जो साधन छे तो तेने अनुकुळ देश काळ छे. ए त्रींजा भेदनो विचार करीए भारतमां महाविदेह. इ०कर्म भूमि अने तेमां पण आर्यभूमि ए देश भावे अनुकूळ छे. जिज्ञासु भव्य तमे सघळा आ काळे भारतमां छो; माटे भारत देश अनुकूळछे.काळभाव प्रमाणे मति अने श्रुत प्राप्त

करी शकाय एटली अनुकूळता छे. कारण आ दुःसमपंचम काळमां परमावधि, मनःपर्यव अने केवळ ए पवित्र ज्ञान विच्छेद छे. एटले काळनी परिपूर्ण अनुकूळता नथी.

४ देशकाळादि जो अनुकूळ छे तो क्यां सुधी छे? एनो उत्तर शेष रहेलुं सिद्धांतिक मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, सामान्यमतथी ज्ञान काळभावे एकवीश हजार वर्ष तेमांथी अढी सहस्र गयां, बाकी साडा अढार वर्ष रह्यां; एटले पंचमकाळनी पूर्णता सुधी काळनी अनुकूळता छे. देश काळ ते लेइने परिपूर्ण अनुकूळ छे

शिक्षापाठ ७९ ज्ञान संबंधी बे बोल भाग ३.

हवे विशेष विचार करीए.

१ आवश्यकता शी छे? ए महद् विचारनुं आवर्त्तन पुनः विशेषताथी करीए. मुख्य अवश्य स्वस्वरूपस्थितिनी श्रेणीए चढवुं. अनंत दुःखनो नाश, दुःखना नाशथी आत्मानुं श्रेयिक सुख; अने सुख निरंतर आत्माने प्रियज छे; पण जे स्वस्वरूपिक सुखछे ते. देशकाळ भावने लइने श्रद्धा, ज्ञान इ० उत्पन्न करवानी आवश्यकता अने सम्यक् भाव सहित उच्चगति, त्यांथी महाविदेहमां मानवदेहे जन्म, त्यां सम्यक् भावनी पुनः उन्नति; तत्वज्ञाननी विशुद्धता अने वृद्धि; छेवटे परिपूर्ण आत्मसाधन

ज्ञान अने तेनुं सत्य परिणाम केवळ सर्व दुःखनो अभाव ए-टले अखंड अनुपम अनंत शाश्वत पवित्र मोक्षनी प्राप्ति ए-सघळां माटे थइने ज्ञाननी आवश्यकतानी आवश्यकता छे!

२. ज्ञानना भेद केटलाछे एनो विचार कहुं छउं. ए ज्ञानना भेद अनंत छे.पण सामान्य द्रष्टि परंतु समजी शके एटला माटे थइने सर्वज्ञ भगवाने मुख्य पांच भेद कह्या छे ते जेम छे तेम कहुं छउं. मति प्रथम द्वितिय श्रुत, तृतिय अवध चतुर्थ, मनःपर्यव अने पांचमु संपूर्ण स्वरुप केवळ. एना पाछा प्रतिभेद छे तेनी वळी अतिंद्रिय स्वरूपे अ-नंत भंगजाळ छे.

३. शुं जाणवारुप छे? एनो हवे विचार करीए. वस्तुनुं स्वरुप जाणवुं तेनुं नाम ज्यारे ज्ञान; त्यारे तो व-स्तुओ तो अनंत छे एने कइ पंक्तिथी जाणवी? सर्वज्ञ थया पछी सर्वदर्शिताथी ते सत्पुरुष,ते अनंत वस्तुनु स्व रुप सर्व भेदे करीने जाणेछे अने देखे छे; परंतु तेओ ए सर्वज्ञ श्रेणीने पाम्या ते कइ कइ वस्तुने जाणवाथी? अनंत श्रेणीओ ज्यांसुधी जाणी नथी त्यांसुधी कइ व-स्तुने जाणता जाणता ने अनंत वस्तुओने अनंत रुपे जा-णीए ? ए शंकानुं समाधान हवे करीए ! जे अनंत वस्तुओ मानी ते अनंत भंगे करीने छे. परंतु मुख्य वस्तुत्व स्वरुपे तेनी बे श्रेणीओ छे. जीव अने अजीव. विशेष वस्तुत्व स्व-रुपे नवतत्व किंवा षड्द्रव्यनी श्रेणीओ जाणवा रुप थइ पडे छे. जे पंक्तिए चढतां चढतां सर्व भावे जणाइ लोका-

लोक स्वरूप हस्तामलकवत् जाणी देखी शकाय छे. एटला माटे थइने जाणवारूप पदार्थ ते जीव अने अजीवछे ए जाणवा रूप मुख्य बे श्रेणीओ कहवाइ.

शिक्षापाठ ८० ज्ञानसंबंधी बेबोल

भाग ४.

४ एना उप भेद संक्षेपमां कहुं छउं. ए चैतन्य लक्षणे एक रूप छे. देहस्वरूपे अने द्रव्य स्वरूपे अनंतानु अनंतछे. देहस्वरूप तेना इंद्रियादिक जाणवा रूपछे तेनी गति, विगति इत्यादिक जाणवा रूपछे; तेनी संसर्ग रीद्धि जाणवा रूपछे तेमज अजीव तेना रूपी अरूपी पुद्गळ आकाशादिक विचित्र भाव काळचक्र इ. जाणवा रूप छे जीवाजीव जाणवानी प्रकारांतरे सर्वज्ञ सर्वदर्शी ए नव श्रेणी रूप नवतत्व कह्यांछे.

जीव,	अजीव,	पूण्य,
पाप,	आश्रव,	संवर,
निर्जरा,	बंध,	मोक्ष.

एमांनां केटलांक ग्राह्यरूप, केटलांक जाणवारूप केटलांक त्यागवा रूप छे. सघळां ए तत्वो जाणवा रूप तो छेज.

५ जाणवानां साधन. सामान्य विचारमां ए साधनो जो के जाण्यांछे. तोपण विशेष कंइक जाणीए.

भगवन्‌आज्ञा अने तेनुं शुद्ध स्वरुप यथातथ्य जाणवुं. स्वयं कांइकज जाणेछे. नहीं तो निर्ग्रंथज्ञानी गुरु जणावी शके. निरागी ज्ञाता सर्वोत्तम छे. एटला माटे श्रद्धानुं बीज रोपनार के तेने पोषनार गुरु ए साधन रुप छे, ए साधनादिकने माटे संसारनी निवृत्ति एटले शम, दम ब्रह्मचर्यादिक अन्य साधनो छे. ए, साधनो प्राप्त करवानीं वाट कहीए तो पण चाले.

६ ए ज्ञाननो उपयोग के परिणामना उत्तरनो आशय उपर आवी गयो छे; पण काळभेदे कंइ कहेवानुंछे. अने ते एटलुंज के दीवसमां बेघडीनो वखत पण नियमित राखीने जिनेश्वर भगवाननां कहेला तत्वबोधनी परियटना करो. वितरागनां एक सिद्धांतिक शब्दपरथी ज्ञाना वरणीनो बहु क्षयोपशम थशे एम हुं विवेकथी कहुं छउं.

शिक्षापाठ ८१ पंचमकाळ.

काळचक्रना विचारो अवश्य करीने जाणवा योग्य छे. जिनेश्वरे ए काळचक्रना बे मुख्य भेद कह्या छे १ उत्सर्पिणी २ अवसर्पिणी अकेका भेदना छ छ आराछे. आधुनिक वर्त्तन करी रहेलो आरो पंचमकाळ कहेवायछे; अने ते अवसर्पिणीकाळनो पांचमो आरो छे. अवसर्पिणी एटले उतरतो काळ, ए उतरता काळना पांचमा आरामां केवुं वर्त्तन आ भरतक्षेत्रे थवुं जोइए तेने माटे सत्पुरुषोए केटलाक विचारोजणाव्या छे; ते अवश्य जाणवा जेवाछे.

एओ पंचमकाळनुं स्वरुप मुख्य आ भावमां कहेछे. निर्ग्रंथप्रवचनपरथी मनुष्योनी श्रद्धा क्षीण थती जशे. धर्मनां मूळतत्वोमां मतमतांतर वधशे पाखंडी अने प्रपंची मतोनुं मंडन थशे. जनसमूहनी रुचि अधर्म भणी वळशे. सत्यदया हळवे हळवे पराभव पामशे. मोहादिक दोषोनी वृद्धि थती जशे. दंभी अने पापिष्ट गुरुओ पुज्यरुप थशे दुष्टवृत्तिनां मनुष्यो पोताना फंदमां फावी जशे. मीठा पण धुर्त्तवक्ता पवित्र मनाशे. शुद्ध ब्रह्मचर्यादिक शीलयुक्त पुरुषो मलिन कहेवाशे. आत्मिकज्ञानना भेदो हणाता जशे; हेतु वगरनी क्रिया वधती जशे. अज्ञानक्रिया बहुधा सेवाशे; व्याकूळ विषयोनां साधनो वधतां जशे. एकांतिक पक्षो सत्ताधिश थशे. शृंगारथी धर्म मनाशे.

खरा क्षत्रियोविना भूमि शोकग्रस्त थशे. निर्माल्य राजवंशीओ वेश्याना विलासमां मोह पामशे; धर्म, कर्म, अने खरी राजनीति भूली जशे; अन्यायने जन्म आपशे. जेम लुटाशे तेम प्रजाने लूटशे. पोते पापिष्ट आचरणो सेवी प्रजा आगळ ते पळावता जशे. राजबीजने नामे शून्यता आवती जशे. नीच मंत्रियोनी महत्ता वधती जशे. एओ दिनप्रजाने चुसीने भंडार भरवानो राजाने उपदेश आपशे. शीयळभंग करवानो धर्म राजाने अंगिकार करावशे. शौर्यादिक सद्गुणोनो नाश करावशे. मृगयादिक पापमां अंध बनावशे. राज्याधिकारीओ पोताना अधिकारथी हजारगुणी अहंपदता राखशे. विप्रो लालचु अने लोभी थइ जशे. सद्विद्याने दाटी देशे; संसारी साधनोने

धर्म ठरावशे. वैश्यो मायावि, केवळ स्वार्थि अने कठोर हृदयना थता जशे. समग्र मनुष्यवर्गनी सद्वृत्तियो घटती जशे. अकृत अने भयंकर कृत्यो करतां तेओनी वृत्ति अटकशे नहीं. विवेक, विनय,सरळता इ० सद् गुणो घटता जशे. अनुकंपाने नामे हीनता थशे. माता करतां पत्निमां प्रेम वधशे; पिता करतां पुत्रमां प्रेम वधशे; एक पतिव्रत्त नियम पूर्वक पाळनारी सुंदरीओ घटी जशे. स्नानथी पवित्रता गणाशे; धनथी उत्तमकूळ गणाशे. गुरुथी शिष्यो अवळा चालशे. भूमिनो रस घटी जशे. संक्षेपमां कहेवानो भावार्थ के उत्तम वस्तुनी क्षीणता छे; अने कनिष्ट वस्तुनो उदय छे. पंचमकाळनुं स्वरुप आमांनुं प्रत्यक्ष सूचवन पण केटलुं बधुं करेछे!

मनुष्य सत्धर्मतत्वमां परिपूर्ण श्रद्धावान नहीं थइ शके; संपूर्ण तत्वज्ञान नहीं पामी शके: जंबुस्वामीना निर्वाण प छी दश निर्वाणी वस्तु आ भरतक्षेत्रथी व्यवछेद गइ.

पंचमकाळनुं आवुं स्वरुप जाणीने विवेकी पुरुषो तत्वने ग्रहण करशे; काळानुसार धर्मतत्वश्रद्धा पामीने उच्चेर्गति साधी परिणामे मोक्ष साधशे. निर्ग्रंथप्रवचन, निर्ग्रंथ गुरु इ० धर्मतत्व पामवानां साधनोछे. एनी आराधनाथी कर्मनी विराधना छे.

शिक्षापाठ ८२ तत्वावबोध. भाग १.

दश विकाळिक सूत्रमां कथन छे के जेणे जीवाजीव-

ना भाव नथी जाण्या ते अबुध संयममां स्थिर केम रही शकशे ? ए वचनामृतनुं तात्पर्य एम छे के तमे आत्मा, अनात्मानां स्वरूपने जाणो, ए जाणवानी परिपूर्ण अवश्य छे.

आत्मा अनात्मानुं सत्य स्वरूप निर्ग्रंथप्रवचनमांथी प्राप्त थइ शके छे. अनेक मतोमां ए बे तत्वो विषे विचारो दर्शाव्या छे; ते यथार्थ नथी. महा प्रज्ञावंत आचार्योए करेलां विवेचनसहित प्रकारांतरे कहेलां मुख्य नवतत्वने विवेकबुद्धिथी जे ज्ञेय करे छे; ते सत्पुरुष आत्मस्वरूपने ओळखी शके छे.

स्याद्वादशैली अनुपम, अने अनंत भेद भावथी भरेली छे; ए शैलीने परिपूर्ण तो सर्वज्ञ अने सर्वदर्शिज जाणी शके; छतां एओनां वचनामृतानुसार आगम उपयोगथी यथामति नव तत्वनुं स्वरूप जाणवुं अवश्यनुं छे. ए नवतत्व प्रिय श्रद्धा भावे जाणवाथी परम विवेकबुद्धि, शुद्ध सम्यकत्व अने प्रभाविक आत्मज्ञाननो उदय थाय छे. नव तत्वमां लोकालोकनुं संपूर्ण स्वरूप आवी जाय छे. जे प्रमाणे जेनी बुद्धिनी गति छे; ते प्रमाणे तेओ तत्वज्ञान संबंधी द्रष्टि पहोंचाडे छे; अने भावानुसार तेओना आत्मानी उज्वळता थाय छे. ते वडे करीने तेओ आत्मज्ञानना निर्मळ रस अनुभवे छे. जेनुं तत्वज्ञान उत्तम अने सूक्ष्म छे; तेमज सुशीलयुक्त जे तत्वज्ञानने सेवे छे ते पुरुष महद्भागी छे.

ए नवतत्वनां नाम आगळना शिक्षापाठमां हुं कही गयो छउं; एनुं विशेष स्वरुप प्रज्ञावंत आचार्योना महान ग्रंथोथी अवश्य मेळववुं; कारण सिद्धांतमां जे जे कह्युं छे; ते ते विशेष भेदथी समजवाने माटे सहायभूत प्रज्ञावंत आचार्यविरचित ग्रंथो छे. ए गुरुगम्यरुप पण छे नय, निक्षेपा अने प्रमाणभेद नवतत्वनां ज्ञानमां अवश्यनां छे; अने तेनी यथार्थ समजण ए प्रज्ञावंतोए आपीछे.

शिक्षापाठ ८३ तत्वावबोध भाग २.

सर्वज्ञ भगवाने लोकालोकना संपूर्ण भाव जाण्या अने जोया तेनो उपदेश भव्य लोकोने कर्यो. भगवाने अनंत ज्ञानवडे करीने लोकालोकनां स्वरुपविषेना अनंत भेद जाण्या हता; परंतु सामान्य मानवियोने उपदेशथी श्रे-णीए चढवा मुख्य देखाता नव पदार्थ तेओए दर्शाव्या. एथी लोकालोकना सर्व भावनो एमां समावेश आवी जाय छे. निर्ग्रंथप्रवचनना जे जे सूक्ष्म बोध छे; ते तत्वनी द्रष्टिए नवतत्वमां समाइ जाय छे; तेमज सघळा धर्ममतोना सूक्ष्म विचार ए नवतत्वविज्ञानना एक देशमां आवी जाय छे. आत्मानी जे अनंत शक्तियो ढंकाइ रहीछे तेने प्रकाशित करवा अर्हंत भगवाननो पवित्र बोधछे; ए अनंत शक्तियो त्यारे प्रफुल्लित थइ शके के ज्यारे नवतत्व विज्ञानमां पारावार ज्ञानी थाय.

सूक्ष्म द्वादशांगी ज्ञान पण ए नवतत्व स्वरूप ज्ञानने

सहायरूप छे. भिन्न भिन्न प्रकारे ए नवतत्वस्वरूप ज्ञाननो बोध करे छे; एथी आ निःशंक मानवा योग्य छे के नवतत्व जेणे अनंत भाव भेदे जाण्यां ते सर्वज्ञ अने सर्व दर्शी थयो.

ए नवतत्व त्रिपदीने भावे लेवा योग्यछे हेय,ज्ञेय अने उपादेय एटले त्याग करवा योग्य, जाणवा योग्य अने ग्रहण करवा योग एम त्रण भेद नवतत्व स्वरूपना विचारमां रहेलां छे.

प्रश्नः—जे त्यागवारूप छे तेने जाणीने करवुं शुं? जे गाम न जवुं तेनो मार्ग शा माटे पूछवो?

उत्तरः—ए तमारी शंका सहजमां समाधान थइ शके तेवी छे. त्यागवारूप पण जाणवा अवश्य छे. सर्वज्ञ पण सर्व प्रकारना प्रपंचने जाणी रह्या छे. त्यागवारूप वस्तुने जाणवानुं मूळतत्व आछे के जो ते जाणी न होयतो अत्याग गणी कोइ वखत सेवी जवाय; एक गामथी बीजे पहोंचतां सुधी वाटमां जे जे गाम आववानां होय तेनो रस्तो पण पूछवो पडेछे; नहीं तो ज्यां जवानुं छे त्यां न पहोंची शकाय. ए गाम जेम पूछ्यां पण त्यां वास कर्यो नहीं तेम पापादिक तत्वो जाणवा पण ग्रहण करवां नहीं. जेम वाटमां आवतां गामनो त्याग कर्यो तेम तेनो पण त्याग करवो अवश्यनो छे.



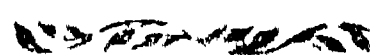
शिक्षापाठ ८४ तत्वावबोध भाग ३.

नवतत्वनुं काळभेदे जे सत्पुरुषो गुरुगम्यताथी श्रवण, मनन अने निधिध्यासन पूर्वक ज्ञान करेछे. ते सत्पुरुषो महा पूण्यशाळी तेमज धन्यवादने पात्र छे. प्रत्येक सुज्ञ पुरुषोने मारो विनयभावभूषित एज बोध छे के नवतत्वने स्वबुध्यानुसार यथार्थ जाणवां.

महावीर भगवंतनां शासनमां बहु मतमृतांतर पडी गयां छे तेनुं मुख्य आ एक कारण पण छे के तत्वज्ञान भणीथी उपासक वर्गनुं लक्ष गयुं. मात्र क्रियाभावपर राचता रह्या;जेनुं परिणाम दृष्टिगोचरछे. अंग्रेजोना शोधमां आवेली पृथ्विनी वस्ती एक अबज अने चाळीश करोडनी गणाइ छे; तेमां सर्व गच्छनी मळीने जैनप्रजा मात्र वीश लाख छे. ए प्रजा ते श्रमणोपास्यकनीछे. एमांथी हुं धारु छउं नवतत्वने पठनरुपे बे हजार पुरुषो पण मांड जाणता हशे; मनन अने विचारपूर्वक तो आंगळीने टेरवे गणी शकीए तेटला पुरुषो पण नहीं हशे. ज्यारे आवी-पतित स्थिति तत्वज्ञान संबंधी थइ गइ छे त्यारेज मतमतांतर वधी पड्या छे. एक लौकिक कथन छे के सो शाणे एक मत तेम अनेक तत्वविचारक पुरुषोना मतमां भिन्नता बहुधा आवती नथी.

ए नवतत्व विचार संबंधी प्रत्येक मुनिओने मारी विज्ञाप्ति छे के विवेक अने गुरुगम्यताथी एनुं ज्ञान विशेष वृद्धिमान करवुं; एथी तेओनां पवित्र पंच महाव्रत द्रढ थशे;

जिनेश्वरना वचनामृतना अनुपम आनंदनी प्रसादि मळशे; मुनीत्वआचार पाळवामां सरळ थइ पडशे. ज्ञान अने क्रिया विशुद्ध रहेवाथी सम्यकत्वनो उदय थशे; परिणामे भवांत थइ जशे.



शिक्षापाठ ८५ तत्वावबोध भाग ४.

जे जे श्रमणोपासक नवतत्व पठनरूपे पण जाणता नथी तेओए अवश्य जाणवां. जाण्या पछी बहु मनन करवां. समजाय तेटला गंभिर आशय गुरुगम्यताथी सद्भावे करीने समजवा. आत्मज्ञान एथी उज्वळता पामशे; अने यमनियमादिकनुं बहु पालन थशे.

नवतत्व एटले तेनुं एक सामान्यगुंथनयुक्त पुस्तक होय ते नहीं;परंतु जे जे स्थळ जे जे विचारो ज्ञानीओए प्रणित कर्या छे. ते ते विचारो नवतत्वमांना अमुक एक बे के विशेष तत्वना होय छे. केवळी भगवाने ए श्रेणीओथी सकळ जगत्‌मंडळ दर्शावी दीधुं छे; एथी जेमजेम नयादि भेदथी ए तत्वज्ञान मळशे तेम तेम अपूर्व आनंद अने निर्मळतानी प्राप्ति थशे; मात्र विवेक, गुरुगम्यता अने अप्रमाद जोइए. ए नवतत्वज्ञान मने बहु प्रिय छे. एना रसानुभवियो पण मने सदैव प्रिय छे.

काळभेदे करीने आ वखते मात्र मति अने श्रुत ए बे ज्ञान भरतक्षेत्रे विद्यमान छे; बाकीनां त्रण ज्ञान व्यवच्छेद छे; छतां जेम जेम पूर्ण श्रद्धाभावथी ए नवतत्वज्ञानना वि-

चारोनी गुफामां उतराय छे. तेम तेम तेना अंदर अद्भुत आत्मप्रकाश, आनंद, समर्थ तत्वज्ञाननी स्फूरणा, उत्तम विनोद अने गंभिर चळकाट दिंग् करी दइ शुद्ध सम्यक ज्ञान ते विचारो बहु उदय करेछे. स्याद्वादवचनामृतना अनंत सुंदर आशय समजवानी शक्ति आ काळमां आ क्षेत्रथी विच्छेद गयेली छतां ते परत्वे जे जे सुंदर आशयो समजाय छे ते ते आशयो अति अति गंभिर तत्वथी भरेला छे. पुनःपुनः ते आशयो मनन करतां चार्वाकमतिना चंचळ मनुष्यने पण सत्धर्ममां स्थिर करी देतेवा छे. संक्षेपमां सर्व प्रकारनी सिद्धि, पवित्रता, महाशील निर्मळ उंडा अने गंभिर विचार, स्वच्छ वैराग्यनी भेट ए तत्वज्ञानथी मळे छे.

शिक्षपाठ ८६ तत्वावबोध भाग ५.

एकवार एक समर्थ विद्वानथी निर्ग्रंथप्रवचननी चमत्कृति संबंधी वातचित थइ;तेना संबंधमां ते विद्वाने जणाव्युं के आटलुं हुं मान्य राखुं छउं के महावीर ए एक समर्थ तत्वज्ञानी पुरुष हता; एमणे जे बोध कर्योछे; ते झीली लइ प्रज्ञावंत पुरुषोए अंग उपअंगनी योजना करी छे तेना जे विचारो छे ते चमत्कृत्ति भरेला छे; परंतु ए उपरथी आखी सृष्टिनुं ज्ञान एमां रह्युं छे एम हुं कही न शकुं.एम छतां जो तमे कंइ ए संबंधी प्रमाण आ-

पता हो तो हुं ए वातनी कंइ श्रद्धा लावी शकुं एना उत्तरमां में एम कह्युं के हुं कंइ जैन वचनामृतने यथार्थ तो शुं पण विशेष भेदे करीने पण जाणतो नथी; पण जे सामान्य भावे जाणुं छउं एथी पण प्रमाण आपी शकुं खरो. पछी नवतत्वविज्ञान संबंधी वातचित नीकळी. में कह्युं एमां आखी सृष्टिनुं ज्ञान आवी जाय छे; परंतु यथार्थ समजवानी शक्ति जोइए. पछी तेओए ए कथननुं प्रमाणे मांग्युं, त्यारे आठ कर्म में कही बताव्या; तेनी साथे एम सूचव्युं के ए शिवाय एनाथी भिन्न भाव दर्शावे एवुं नवमुं कर्म शोधी आपो; पापनी अने पूण्यनी प्रकृतियो कहीने कह्युं आ शिवाय एक पण वधारे प्रकृति शोधी आपो एम कहेतां कहेतां अनुक्रमे वात लीधी प्रथम जीवना भेद कही पूछ्यु एमां कंइ न्यूनाधिक कहेवा मांगोछो? अजीवद्रव्यना भेद कही पूछ्यु कंइ विशेषता कहोछो? एम नव तत्वसंबंधी वातचित थइ त्यारे तेओए थोडीवार विचार करीने कह्युं आतो महावीरनी कहेवानी अद्भुत चमत्कृति छे के जीवनो एक नवो भेद मळतो नथी; तेम पापपूण्यादिकनी एक प्रकृति विशेष मळती नथी; अने नवमुं कर्म पण मळतुं नथी. आवां आवां तत्वज्ञान सिद्धांतो जैनमां छे ए मारुं लक्ष नहोतुं. आमां आखी सृष्टिनुं तत्वज्ञान केटलेक अंशे आवी शके खरुं.

शिक्षापाठ ८७ तत्वावबोध भाग ६.

एनो उत्तर आ भणीथी एम थयो के हजु आप आटलुं कहो छो; तेपण जैनना तत्वविचारो आपना हृदये आव्या नथी त्यांसुधी; परंतु हुं मध्यस्थताथी सत्य कहुं छउं के एमां जे विशुद्धज्ञान बताव्युंछे ते क्यांय नथी; अने सर्व मतोए जे ज्ञान बताव्युं छे ते महावीरना तत्वज्ञानना एक भागमां आवी जायछे. एनुं कथन स्याद्वाद छे. एक पक्षी नथी. तमे एम कह्युं के केटलेक अंशे ख्रीष्टनुं तत्वज्ञान एमां आवी शके खरुं; परंतु ए मिश्रवचन छे. अमारी समजाववानी अल्पज्ञताथी एम बने खरुं; परंत एथी ए तत्वोमां कंइ अपूर्णता छे एमतो नथीज. आ कंइ पक्षपाती कथन नथी. विचार करो आखी सृष्टिमांथी ए शिवायनुं एक दशमुं तत्व शोधतां कोइ काळे ते मळनार नथी. ए संबंधी प्रसंगोपात आपणे ज्यारे वातचित अने मध्यस्थ चर्चा थाय त्यारे निःशंकता थाय.

उत्तरमां तेओए कह्युं के आ उपरथी मने एम तो निःशंकता छे के जैन अद्भुत दर्शन छे. श्रेणिपूर्वक तमे मने केटलाक नवतत्वना भाग कही बताव्या एथी हुं एम बेधडक कही शकुं छउं के महावीर गुप्तभेदने पामेलो पुरूष हतो. एम सहजसाज वात करीने उपन्नेवा, विघनेवा अने धुवना. ए लब्धिवाक्य मने तेओए कह्युं; ते कही बताव्या पछी तेओए एम जणाव्युं छे के आ शब्दोना

सामान्य अर्थमां तो कंइ चमत्कृत्ति देखाती नथी. उपजवुं, नाश थवुं जे अचळता.एम ए त्रणे शब्दोनो अर्थ छे. परंतु श्रीमत् गणधरोए तो एम दर्शित कर्युंछे के ए वचनो गुरुमुखथी श्रवण करतां आगळना भाविक शिष्योने द्वादशांगीनुं आशयभरित ज्ञान थतुं हतुं ! ए माटे में कंइक विचारो पहोंचाडी जोया छतां मने तो एम लाग्युं के ए बनवुं असंभवितछे, कारण अति अति सूक्ष्म मानेलुं सिद्धांतिक ज्ञान एमां क्यांथी समाय ? ए संबंधी तमे कंइ लक्ष पहोंचाडी शकशो ?



शिक्षापाठ ८८ तत्वावबोध भाग ७.

उत्तरमां में कह्युं के आ काळमां त्रण महाज्ञान भारतथी व्यवच्छेद छे; तेम छतां हुं कंइ सर्वज्ञ के महाप्रज्ञावंत नथी छतां मारुं जेटलुं सामान्य लक्ष पहोंचे तेटलुं पहोंचाडी कंइ समाधान करी शकीश एम मने संभव रहेछे. त्यारे तेमणे कह्युं जो तेम संभवथतो होय तो ए त्रिपदी जीवपर "ना" ने "हा" विचारे उतरो. ते एम के जीव शुं उत्पत्तिरुप छे? तो केना.जीव शुं विग्रतारुप छे ? तो के ना. जीव शुं ध्रुवतारुप छे ? तो के ना. आम एक वखत उतारो अने बीजी वखत जीव शुं उत्पत्तिरुप छे? तो के हा. जीव शुं विग्रतारुपेछे ? तो के हा. जीव शुं ध्रुवरुपे छे ? तो के हा. आम उतारो. आ

विचारो आत्मा मंडळे एकत्र करी योज्या छे. ए जो यथार्थ कही न शकाय तो अनेक प्रकारथी दूषण आवी शके. विघ्ररूपे होय ए वस्तु ध्रुवरूपे होय नहीं. ए पहेली शंका. ज्यारे उत्पत्ति, विघ्नता अने ध्रुवता नथी तो जीव कयां प्रमाणथी सिद्ध करशो ? ए बीजी शंका. विघ्नता अने ध्रुवताने परस्पर विरोधाभास ए त्रीजी शंका. जीव केवळ ध्रुव छे तो उत्पत्तिमां हा कही ए असत्य. अने चोथो विरोध. उत्पन्नयुक्त जीवनो ध्रुव भाव कहो तो उत्पन्न कोणे कर्यो ए पांचमो विरोध. अनादिपणुं जतुं रहेछे ए छठी शंका. केवळ ध्रुव विघ्नरूपे छे एम कहो तो चार्वाकमिश्र वचन थयुं ए सातमो दोष. उत्पत्ति अने विघ्नरूपे कहेशो तो केवळ चार्वाकनो सिद्धांत ए आठमो दोष. उत्पत्तिनी ना, विघ्नतानी ना अने ध्रुवतानी ना कही पाछी त्रणेनी हा कही एना पुनःरूपे छ दोष, एटले सर्वाळे चौद दोष. केवळ ध्रुवता जतां तिर्थंकरनां वचन त्रुटी जाय ए पंदरमो दोष. उत्पत्तिध्रुवता लेतां कर्त्तानी सिद्धि थतां सर्वज्ञ वचन त्रुटी जाय ए सोळमो दोष. उत्पातिविघ्नरूपे पापपुण्यादिकनो अभाव एटले धर्माधर्म सघळुं गयुं ए सत्तरमो दोष. उत्पत्ति विघ्न अने सामान्य स्थितिथी (केवळ अचळ नहीं) त्रिगुणात्मक माया सिद्ध थायछे ए अढारमो दोष.



शिक्षापाठ ८९ तत्वावबोध भाग ८.

एटला दोष ए कथनो सिद्ध न थतां आवेछे.एक जैनमु-निए मने अने मारा मित्रमंडळने एम कह्युं हतुं के जैनसप्तभंगी नय अपूर्व छे. अने एथी सर्व पदार्थ सिद्ध थायछे. नास्ति, अस्तिना एमां अगम्यभेद रह्या छे. आ कथन सांभळी अमे बधा घेर आव्या पछी योजना करतां करतां आ लब्धिवाक्यनी जीवपर योजना करी.हुं धारुं छउं के एवा नास्ति अस्तिना बन्नेभाव जीवपर नहीं उतरी शके.लब्धि वाक्यो पण क्लेशरूप थइ पडशे. यदी ए भणी मारी कंइ तिरस्कारनी द्रष्टि नथी.

आपे जे नास्ति अने आस्ति नय जीवपर उतारवा धार्यो ते सनिक्षेप शैलीथी नथी. एटले वखते एमांथी एकांतिक पक्ष लेइ जवाय; तेम वळी हुं कंइ स्याद्वाद शैलीनो यथार्थ जाणनार नथी. मंदमतिथी लेश भाग जाणुं छउं. नास्ति आस्ति नय पण आपे शैली पूर्वक उ-तार्यो नथी एटले हुं तर्कथी जे उत्तर दइ शकुं ते आप सांभळो.

उत्पत्तिमां "ना" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके छे के जीव अनादि अनंत छे.

विघ्नतामां "ना" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के एनो कोइ काळे नाश नथी.

ध्रुवतामां "ना" एवी जे योजना करी छे ते एम य-

थार्थ थइ शके के एक देहमां ते सदैवने माटे रहेनार नथी.

शिक्षापाठ ९० तत्वावबोध भाग ९.

उत्पत्तिमां "हा" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के जीवनो मोक्ष थया सुधी एक देहमांथी च्यवन पामी ते बीजा देहमां उपजे छे.

विघ्नतामां "हा" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के ते जे देहमांथी आव्यो त्यांथी विघ्न पाम्यो; वा क्षण क्षण प्रति एनी आत्मिक रिद्धि विषयादिक मरणवडे रुंधाइ रहीछे ए रुपे विघ्नता योजी शकायछे.

ध्रुवतामां "हा" एवी जे योजना कही छे ते एम यथार्थ थइ शके के द्रव्ये करी जीव कोइ काळे नाश रुप नथी. त्रिकाळ सिद्धछे.

हवे एथी करीने योजेला दोष पण हुं धारुं छउं के टळी जशे.

१ जीव विघ्नरुपे नथी माटे ध्रुवता सिद्ध थइ. ए पहेलो दोष टळ्यो.

२ उत्पत्ति, विघ्नता अने ध्रुवता ए भिन्न भिन्न न्याये सिद्ध थइ; एटले जीवनुं सत्यत्व सिद्ध थयुं ए बीजो दोषगयो.

३ जीवनां सत्यस्वरुपे ध्रुवता सिद्ध थइ एटले विघ्नता गइ. ए त्रीजो दोष गयो.

४ द्रव्य भावे जीवनी उत्पत्ति असिद्ध थइ ए चोथो दोष गयो.

५ अनादि जीव सिद्ध थयो एटले उत्पत्ति संबंधी नो पांचमो दोष गयो.

६ उत्पत्ति असिद्ध थइ एटले कर्त्ता संबंधीनो छट्ठो दोष गयो.

७ ध्रुवता साथे विघ्नता लेतां अबाध थयुं एटले चार्वाक मिश्रवचननो सातमो दोष गयो

८ उत्पत्ति अने विघ्नता प्रथक् प्रथक् देहे सिद्ध थ माटे केवळ चार्वाकसिद्धांत ए नामनो आठमो दोष गयो

१४ शंकानो परस्परनो विरोधाभास जतां चौदसु धीना दोष गया.

१५ अनादि अनंतता सिद्ध थतां स्याद्वादवचन सत्य थयुं ए पंदरमो दोष गयो.

१६ कर्त्ता नथी ए सिद्ध थतां जिनवचननी सत्यता रही ए सोळमो दोष गयो.

१७ धर्माधर्म, देहादिक पुनरावर्त्तन सिद्ध थतां सत्तरमो दोष गयो.

१८ ए सर्व वात सिद्ध थतां त्रिगुणात्मक माया असिद्ध थइ ए अढारमो दोष गयो.

शिक्षापाठ ९१ तत्वावबोध भाग १०

आपनी योजेली योजना हुं धारुं छउं के आथा

समाधान पामी हशे. आ कंइ यथार्थ शैली उतारी नथी, तोपण एमां कंइ पण विनोद मळी शके तेम छे. ए उपर विशेष विवेचनने माटे बोहोळो वखत जोइए एटले वधारे कहेतो नथी; पण एक बे टुंकी वात आपने कहेवानी छे ते जो आ समाधान योग्य थयुं होय तो कहुं. पछी तेओ तरफथी मनमानता उत्तर मल्यो, अने एक बे वात जे कहेवानी होय ते सहर्ष कहो एम तेओए कह्युं.

पछी में मारी वात संजीवन करी लब्धि संबंधी कह्युं. आप ए लब्धि संबंधी शंका करो के एने क्लेशरूप कहो तो ए वचनोने अन्याय मळे छे. एमां अति अति उज्वळ आत्मिक शक्ति गुरुगम्यता अने वैराग्य जोइए छीए. ज्यां सुधी तेम नथी. त्यां सुधी लब्धि विषे शंका रहे खरी; पण हुं धारुं छउं के आ वेळा ए संबंधी कहेला बे बोल निरर्थक नहीं जाय. ते ए के जेम आ योजना नास्ति अस्तिपर योजी जोइ तेम एमां पण बहु सूक्ष्म विचार करवाना छे. देहे देहनी प्रथक् प्रथक् उत्पत्ति च्यवन, विश्राम, गर्भाधान, पर्याप्ति, इंद्रि, सत्ताज्ञान, संज्ञा आयुष्य विषय इ० अनेक कर्मप्रकृति प्रत्येक भेदे लेतां जे विचारो ए लब्धिथी नीकळे ते अपूर्व छे. ज्यां सुधी लक्ष पहोंचे त्यां सुधी सघळा विचार करेछे परंतु द्रव्यार्थिक भावार्थिक नये आखी सृष्टि ए त्रण शब्दोमां रही छे तेनो विचार कोइजं करे छे; ते सत्गुरु मुखनी पवित्र लब्धिरूपे ज्यारे आवे त्यारे द्वादशांगी ज्ञान शा माटे न था-

य? जगत एम कहेतां जेम मनुष्य एक घर, एक वास, एक गाम, एक शेहेर, एक देश, एक खंड एक पृथ्वि ए सघळु मूकी दइ असंख्यात द्वीप समुद्रयुक्तादिकथी भरपूर वस्तु एकदम केम समजी जाय छे? एनुं कारण मात्र एटलुंज के ते ए शब्दनी बहोळताने समज्युं छे किंवा लक्षनी अमुक बहोळताने समज्युं छे. जेथी जगत् एम कहेतां एवडो मोटो मर्म समजी शकेछे; तेमज ऋजु अने सरळ सत्पात्र शिष्यो निर्ग्रंथ गुरुथी ए त्रण शब्दानी गम्यता लइ द्वादशांगी ज्ञान पामता हता; अने ते लब्धि अल्पज्ञताथी विवेके जोतां क्लेशरूप पण नथी.

शिक्षापाठ ९२ तत्वावबोध भाग ११.

एमज नवतत्व संबंधी छे. जे मध्य वयना क्षत्रियपुत्रे जगत् अनादि छे; एम बेधडक कही कर्त्ताने उडाड्यो हशे ते पुरुषे शुं कंइ सर्वज्ञताना गुप्त भेद विना कर्युं हशे? तेम एनी निर्दोषता विशे ज्यारे आप वांचशो त्यारे निश्चय एवो विचार करशो के ए परमेश्वर हता. कर्त्ता नहोतो अने जगत अनादि हतुं तो तेम कह्युं. एना अपक्षपाति अने केवळ तत्वमय विचारो आपे अवश्य विशोधवा योग्य छे. जैन दर्शनना अवर्णवादीओ मात्र जैनने नथी जाणता एटले अन्याय आपेछे ते हुं धारुं छउं के ममत्वथी अधोगति सेवशे.

आ पछी केटलीक वात्त्वित थइ; प्रसंगोपात्त ए तत्व

विचारवानुं वचन लइने सहर्ष हुं सांथी उठ्यो हतो.

तत्वावबोधना संबंधमां आ कथन कहेवायु, अनंतभेदथी भरेला ए तत्व विचारो जेटला काळभेदथी जेटला ज्ञेय थाय तेटला ज्ञेय करवा, ग्राह्यरुप थाय तेटला ग्रहवा; अने त्यागरूप देखाय तेटला त्यागवा.

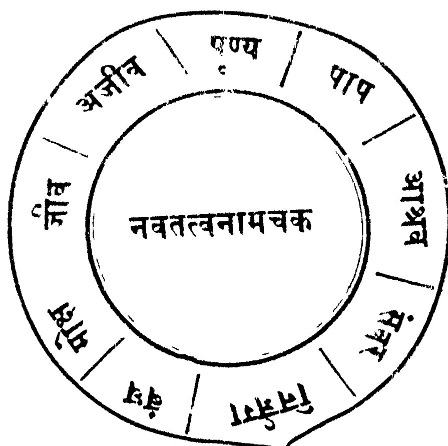
ए तत्वोने जे यथार्थ जाणेछे; ते अनंत चतुष्टयिथी विराजमान थाय छे ए हुं सत्यताथी कहुं छउं; ए नवतत्वनां नाम मूकवामां पण अरधुं सूचवन मोक्षनी निकटतानुं जणाय छे!

शिक्षापाठ ९३ तत्वावबोध भाग १२.

एतो तमारा लक्षमां छे के जीव, अजीव ए अनुक्रमथी छेवटे मोक्ष नाम आवेछे. हवे ते एक पछी एक मूकी जइए तो जीव अने मोक्षने अनुक्रमे आद्यअंत रहेवुं पडशे.

जीव
अजीव.
पुण्य.
पाप.
आश्रव.
संवर.
निर्जरा.
बंध.
मोक्ष.

में आगळ कह्युं हतुं के ए नाम मूकवामां जीव अने मोक्षने कट-ताछे.छतां आ निकटता तो न थइ.पण जीव अजीवने निकटता थइ.परंतु एम नथी. अज्ञानवडे तो ए बन्नेनेज निकटता रहीछे, ज्ञानवडे जीव अने मोक्षने निकटता रही छे जेमकं.



हवे जुओ ए बन्नेने कंइ निकटता आवी छे ! हा कहेली निकटता आवी गइ छे. पण ए निकटता तो द्रव्यरूपछे. ज्यारे भावे निकटता आवे त्यारे सर्व सिद्धि थाय,ए निकटतानुं साधन सत्परमात्म तत्व,सत्गुरुतत्व, अने सत्धर्म तत्व छे. केवळ एकज रूप थवा ज्ञान दर्शन अने चारित्र छे.

ए चक्रथी एवी पण आशंका थाय के ज्यारे बन्ने निकट छे त्यारे शुं बाकीनां त्यागवां ! उत्तरमां एम कहुं छउं के जो सर्व त्यागी शकता होतो त्यागी द्यो एटले मोक्षरूपज थशो नहीं ! तो हेय ज्ञेय उपादेयनो बोध ल्यो. एटले आत्मसिद्धि प्राप्त थशे.

शिक्षापाठ ९४ तत्वावबोध भाग १३

जे जे हुं कही गयो ते ते कंइ केवळ जैनकुळथी जन्म पामेला पुरुषने माटे नथी, परंतु सर्वने माटे छे तेम आ पण निशंक मानजो के हुं जे कहुं छउं ते अपक्षपाते अने परमार्थबुद्धिथी कहुं छउं.

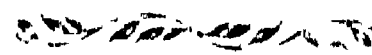
तमने जे धर्मतत्व कहेवानुं छे; ते पक्षपात के स्वार्थ बुद्धिथी कहेवानुं मने कंइ प्रयोजन नथी; पक्षपात के स्वार्थथी हुं तमने अधर्मतत्व बोधी अधोगतिने शा माटे साधुं? वारंवार हुं तमने निग्रंथनां वचनामृतो माटे कहुं छउं; तेनुं कारण ते वचनामृतो तत्वमां परिपूर्ण रुप ते छे. जिनेश्वरोने एवुं कोइपण कारण नहोतुं के जे निमित्ते तेओ मृषा के पक्षपाती बोधे; तेम एओ अज्ञानी नहता; के एथी मृषा बोधाइ जवाय. आशंका करशो के ए अज्ञानी नहोता ए शा उपरथी जणाय? तो तेना उत्तरमां एओना पवित्र सिद्धांतोना रहस्यने मनन करवानुं कहुं छउं; अने एम जे करशे तेतो पुनः आशंका लेश पण नहीं करे. जैनमत प्रवर्त्तकोए मने कंइ भूरशीदक्षणा आपी नथी; तेम ए मारा कंइ कुटुंबपरिवारी पण नथी के ए माटे पक्षपाते हुं कंइ पण तमने कहुं. तेमज अन्यमत प्रवर्त्तकोने मारे कंइ वैरबुद्धि नथी के मिथ्या एनुं खंडन करुं. बन्नेमां हुंतो मंदमति मध्यस्थरुप छउं. बहु बहु मननथी अने मारी मति ज्यां सुधी पहोंची सांसुधीना विचारथी हुं विनयथी एम कहुं छउं के प्रियभव्यो जैन जेवुं एके पूर्ण अने

पवित्र दर्शन नथी; वितराग जेवो एके देव नथी. तरीने अनंत दुःखथी पार पामवुं होय तो ए सर्वज्ञदर्शनरूप कल्पवृक्षने सेवो.

शिक्षापाठ ९५ तत्वावबोध भाग १४

जैन ए एटली बधी सूक्ष्म विचारसंकळनाथी भरेलुं दर्शन छे के जेमां प्रवेश करतां पण बहु वखत जोइए. उपर उपरथी के कोइ प्रतिपक्षीना कहेवाथी अमुक वस्तु संबंधी अभिप्राय बांधवो के आपवो ए विवेकीनुं कर्त्तव्य नथी. एक तळाव संपूर्ण भर्युं होय; तेनुं जळ उपरथी समान लागे छे; पण जेम जेम आगळ चालीए छीए तेम तेम वधारे वधारे उंडापणुं आवतुं जाय छे; छतां उपर तो जळ सपाटज रहे छे; तेम जगतुना सघळा धर्ममतो एक तळाव रूप छे, तेने उपरथी सामान्य सपाटी जोइने सरखा कही देवा ए उचित नथी. एम कहेनारा तत्वने पामेला पण नथी. जैनना अकेका पवित्र सिद्धांतपर विचार करतां आयुष्य पूर्ण थाय तो पण पार पामीए नहीं तेम रह्युं छे. बाकीना सघळा धर्ममतोना विचार जिनप्रणित वचनामृतसिंधु आगळ एक बिंदुरूप पण नथी. जैन जेणे जाण्यो; अने सेव्यो ते केवळ निरागी अने सर्वज्ञ थइ जायछे. एना प्रवर्त्तको केवा पवित्र पुरुषो हता! एना सिद्धांतो केवा अखंड संपूर्ण अने दयामय छे! एमां

दूषण कांइज नथी. केवळ निर्दोष तो मात्र जैनुं दर्शनछे. एवो एके पारमार्थिक विषय नथी के जे जैनमां नहीं होय अने एवुं एके तत्व नथी के जे जैनमां नथी; एक विषयने अनंतभेदे परिपूर्ण कहेनार ते जैनदर्शन छे. प्रयोजनभूत तत्व एना जेवुं क्यांय नथी. एक देहमां बे आत्मा नथी; तेम आखी सृष्टिमां बे जैन एटले जैननी तुल्य एके दर्शन नथी. आम कहेवानुं कारण शुं ? तो मात्र तेनी परिपूर्णता, निरागीता, सत्यता अने जगत् हितस्विता.



शिक्षापाठ ९६ तत्वावबोध भाग १५.

न्यायपूर्वक आटलुं मारे पण मान्य राखवुं जोइए के ज्यारे एकदर्शनने परिपूर्ण कहीं वात सिद्ध करवी होय त्यारे प्रतिपक्षनी मध्यस्थ बुद्धिथी अपूर्णता दर्शाववी जोइए अने ए बे वातपर विवेचन करवा अहीं जेटली जग्यो नथी; तो पण थोडुं थोडुं कहेतो आव्यो छउं; मुख्यतत्वे जे वात छे ते आ छे के ए मारी वात जेने रुचिकर थती न होय के असंभवित लागती होय तेणे जैनतत्वविज्ञानी शास्त्रो अने अन्यतत्वविज्ञानी शास्त्रो मध्यस्थ बुद्धिथी मनन करी न्यायने कांटे तोलन करवुं. ए उपरथी अवश्य एटलुं महावाक्य नीकळशे के जे आगळ नगारापर डांडी ठोकीने कहेवायुं हतुं ते खरुं हतुं.

जगत् गाडरियो प्रवाह छे; धर्मना मतभेद संबंधीना शिक्षापाठमां दर्शित कया प्रमाणे अनेक धर्ममतनी जाळ

लागी पडीछे. विशुद्ध आत्मा कोइकज थायछे. विवेकथी तत्वने कोइकज शोधेछे. एटले मने कंइ विशेष खेद नथी के जैनतत्वने अन्यदर्शनियो शा माटे जाणता नथी? ए आशंकाज करवारूप नथी.

छतां मने बहु आश्चर्य लागेछे के केवळ शुद्ध परमात्म तत्वने पामेला, सकळ दूषणरहित, मृषा कहेवानुं जेने कंइ निमित्त नथी एवा पुरुषनां कहेलां पवित्र दर्शनने पोते तो जाण्युं नहीं; पोताना आत्मानुं हित तो कर्युं नहीं; पण अविवेकथी मतभेदमां आवी जइ केवळ निर्दोष अने पवित्र दर्शनने नास्तिक शा माटे कह्युं हशे? यदां हुं स-मजुं छउं के ए कहेनारा एना तत्वने जाणता नहोता; वळी एना तत्वने जाणवाथी पोतानी श्रद्धा फरशे त्यारे लोको पछी पोताना आगळ कहेला मतने गांठशे नहीं. जे लौकिक मतमां पोतानी आजीविका रही छे; एवा वेदोनी महत्ता घटाडवाथी पोतानी महत्ता घटशे; पोतानुं मिथ्या स्थापित करेलुं परमेश्वरपद चालशे नहीं. एथी जैनतत्वमां प्रवेश करवानी रुचिने मूळथी बंध करवा लोकोने एवी भ्रमभुरकी आपी के जैन नास्तिक छे. लोको तो बिचारा गभरु गाडर छे; एटले पछी विचार पण क्यांथी करे? ए कहेवुं केटलुं अनर्थकारक अने मृषा छे ते जेणे वितराग प्रणित सिद्धांतो विवेकथी जाण्या छे ते जाणे. मारुं कहेवुं मंदबुद्धिओ वखते पक्षपातमां लइ जाय.

शिक्षापाठ ९७ तत्वावबोध भाग १६.

जैन पवित्र दर्शनने नास्तिक कहेवरावतामां तेओ

एक दलीलथी मिथ्या फाववा इच्छेछे के जैनदर्शन आ जगत्ना कर्त्ता परमेश्वरने मानतुं नथी; अने जे परमेश्वरने नथी मानता तेतो नास्तिकज छे. आ वात भद्रिकजनोने शीघ्र चोंटी रहेछे. कारण तेओमां यथार्थ विचार करवानी प्रेरणा नथी. जो ए उपरथी एम विचारमां आवेके जैन जगत्ने त्यारे अनादि अनंत कहेछे ते कया न्यायथी कहेछे ? जगत्कर्त्ता नथी एम कहेवाथी एमनुं निमित्त शुं छे? एम एक पछी एक भेदरूप विचारथी तेओ जैननी पवित्रतापर आवी शके. जगत् रचवानी परमेश्वरने अवश्य शी हती? रच्युं तो सुख दुःख मूकवानुं कारण शुं हतुं ? रचीने मोत शा माटे मूक्युं ? ए लीला बतावनी कोने हती ! रच्युं तो कयां कर्मथी रच्युं ? ते पहेलां रचवानी इच्छा कां न होती ! इश्वर कोण ? जगतना पदार्थ कोण ? अने इच्छा कोण ? रच्युं तो जगत्मां एकज धर्मनुं प्रवर्त्तन राखवुं हतुं; आम भ्रमणामां नाखवानी अवश्य शी हती ? कदापि ए बधुं मानो के ए बिचारानी भूल थइ ! हशे ! क्षमा करीए पण एवुं दोढ डहापण क्यांथी सूझ्युं के एनेज मूळथी उखेडनार एवा महावीर जेवा पुरुषोने जन्म आपे ? एनां कहेलां दर्शनने जगत्मां विद्यमानता आपे ? पोताना पगपर हाथे करीने कुहाडो मारवानी एने शुं अवश्य हती ? एक तो जाणे ए प्रकारे विचार, अने बाकी बीजा प्रकारे ए विचार के जैनदर्शन प्रणितकोने एनाथी कंइ द्वेष हतो ? ए जगत्कर्त्ता होत तो एम कहेवाथी एओना लाभने कंइ

हानि पहोंचती हती ? जगत्कर्त्ता नथी. जगत् अनादि अनंत छे; एम कहेवामां एमने कंइ महत्ता मळी जती हती? आवा अनेक विचारो विचारतां जणाइ आवशे के जेम जगतनुं स्वरुप हतुं तेमज ते पवित्र पुरुषोए कह्युंछे. एमां भिन्नभाव कहेवा एमने प्रयोजन नहोतुं. सूक्ष्ममांसूक्ष्म जंतुनी रक्षा जेणे प्रणित करीछे; एक रजकणथी करींने आखा जगत्ना विचारो जेणे सर्व भेदे कह्याछे तेवा पुरुषोनां पवित्र दर्शनने नास्तिक कहेनारा कयि गतिने पामशे ए विचारतां दया आवे छे!

शिक्षापाठ ९८ तत्वावबोध भाग १७

जे न्यायथी जय मेळवी शकतो नथी; ते पछी गाळो भांडे छे; तेम पवित्र जैनना अखंड तत्वसिद्धांतो शंकराचार्य, दयानंद सन्यासी वगेरे ज्यारे तोडी न शक्या त्यारे पछी जैन नास्तिक है, सो चार्वाकमेंसे उत्पन्न हुआ है. पण ए स्थळे कोइ प्रश्न करे के महाराज! ए विवेचन तमे पछी करो. एवा शब्दो कहेवामां कंइ वखत विवेक के ज्ञान जोतुं नथी; पण आनो उत्तर आपो के जैन वेदथी कयिं वस्तुमां उतरतो छे; एनुं ज्ञान, एनो बोध; एनुं रहस्य; अने एनुं सत्शील केवुं छे ते एकवार कहो? आपना वेद विचारो कयी बाबतमां जैनथी चढे छे? आम ज्यारे मर्मस्थानपर आवे त्यारे मौनता शीवाय तेओ पासे बीजुं कंइ साधन रहे नहीं. जे सत्पुरुषोना वचनामृत

अने योगबळथी आ सृष्टिमां सत्यदया, तत्वज्ञान अने महशील उदय पामेछे; ते पुरुषो करतां जे पुरुषो शृंगारमां राच्या पड्या छे. सामान्य तत्वज्ञानने पण नथी जाणता; जेनो आचार पण पूर्ण नथी तेने चढता कहेवा—परमेश्वरने नामे स्थापवा अने सत्यस्वरूपनी अवर्ण भाषा बोलवी परमात्म स्वरूप पामेला ने नास्तिक कहेवा ए एमनी केटली बधी कर्मनी बहोलतानुं सूचवन करे छे! परंतु जगत् मोहांध छे; मतभेद छे त्यां अंधारुं छे. ममत्व के रागछे त्यां सत्य तत्व नथी. ए वात आपणे शा माटे न विचारवी!

हुं एक मुख्य वात तमने कहुं छउं के जे ममत्वरहितनी अने न्यायनी छे. ते ए छे के गमे ते दर्शनने तमे मानो; गमे तो पछी तमारी दृष्टिमां आवे तेम जैनने कहो, सर्व दर्शनना शास्त्रतत्वने जुओ तेम जैनतत्वने पण जुओ. स्वतंत्र आत्मिकशक्तिए जे योग्य लागे ते अंगिकार करो. मारुं के बीजा गमे तेनुं भले एकदम तमे मान्य न करो पण तत्वने विचारो!

शिक्षापाठ ९९ समाजनी अगत्य.

आंग्लभौमियो संसारसंबंधी अनेक कळा कौशल्यमां शाथी विजय पाम्या छे? ए विचार करतां आपणने तत्काल जणाशे के तेओनो बहु उत्साह अने ए उत्साहमां अनेकनुं मळवुं. कळाकौशल्यना ए उत्साही काममां ए अनेक पुरुषोनी उभी थएली सभा के समाजे परिणा-

म शुं मेळव्युं ? तो उत्तरमां एम आवशे के लक्ष्मी कीर्ति अने अधिकार. ए एमना उदाहरण उपरथी ए जातिनां कळाकौशल्यो शोधवानो हुं अहीं बोध करतो नथी; परंतु सर्वज्ञ भगवाननुं कहेलुं गुप्त तत्व प्रमाद स्थितिमां आवी पड्युं छे, तेने प्रकाशित करवा तथा पूर्वाचार्योनां गुंथेलां महान शास्त्रो एकत्र करवा, पडेला गच्छना मतमतांतरने टाळवा तेमज धर्मविद्याने प्रफुल्लित करवा एक महान् समाज सदाचरणी श्रीमंत अने धीमंत बन्नेए मळीने स्थापन करवानी अवश्य छे एम दर्शावुं छउं. पवित्र स्याद्वादमतनुं ढंकायलुं तत्व प्रसिद्धिमां आणवा ज्यां सुधी प्रयोजन नथी; त्यां सुधी शासननी उन्नति पण नथी. लक्ष्मी कीर्त्ति अने अधिकार संसारी कळाकौशल्यथी मळे छे, परंतु आ धर्मकळाकौशल्यथी तो सर्व सिद्धि सांपडशे. महान् समाजना अंतर्गत उपसमाज स्थापवा. मतमतांतर तजी, वाडामां बेसी रहेवा करतां एम करवुं उचित छे. हुं इच्छुं छउं के ते कृतनी सिद्धि थइ जैनांतर्गच्छ मतभेद टळो; सत्य वस्तु उपर मनुष्यमंडळनुं लक्ष आवो; अने ममत्व जाओ !

शिक्षापाठ १०० मनोनिग्रहनां विघ्न.

वारंवार जे बोध करवामां आव्योछे तेमांथी मुख्य तात्पर्य नीकळे छे ते ए छे के आत्माने तारो अने तारवा माटे तत्वज्ञाननो प्रकाश करो; तथा सत्शीलने सेवो. ए प्राप्त करवा जे जे मार्ग दर्शाव्या ते ते मार्ग मनोनिग्रहताने

आधिन छे. मनोनिग्रहता थवा लक्षनी बहोळता करवी यथोचित छे, ए बहोळतामां विघ्नरुप नीचेना दोषछे.

१	आळस	११	तुच्छवस्तुथी आनंद
२	अनियमित उंघ	१२	रसगारवलुब्धता
३	विशेष अहार	१३	अतिभोग
४	उन्माद प्रकृति	१४	पारकुंअनिष्ट इच्छवुं
५	मायाप्रपंच	१५	कारणविनानुं रळवुं
६	अनियामितकाम	१६	झाझानां स्नेह.
७	अकरणियविलास	१७	अयोग्यस्थळे जवुं
८	मान	१८	एके उत्तम नियम साध्य न करवो.
९	मर्यादाउपरांतकाम		
१०	आपवडाइ		

अष्टादश पापस्थानक त्यां सुधी क्षय थवानां नथी के ज्यांसुधी आ अष्टादश विघ्नथी मननो संबंधछे. आ अष्टादश दोष जवाथी मनोनिग्रहता अने धारेली सिद्धि थइ शके छे. ए वस्तु ज्यांसुधी मनथी निकटता धरावेछे त्यां सुधी ते मनुष्य पण आत्मसार्थक करवानो नथी. अति भोगने स्थळे सामान्य भोग नहीं पण केवळभोग त्यागव्रत्त जेणे धर्युंछे तेमज ए एके दोषनुं मूळ जेनां ह्रदयमां नथी ते सत्पुरुष महद्भागी छे.

शिक्षापाठ १०१ स्मृतिमां राखवायोग्य महावाक्यो.

१ एक भेदे नियम एज आ जगत्नो प्रवर्त्तक छे!

२ जे मनुष्य सत्पुरुषोनां चरित्ररहस्यने पामेछे ते मनुष्य परमेश्वर थाय छे!

३ चंचळ चित्त एज सर्व विषम दुःखनुं मुळियुं छे.

४ झाझानो मेळाप अने थोडा साथे अति समागम ए बन्ने समान दुःखदायक छे.

५ समस्वभाविनुं मळवुं एने ज्ञानीओ एकांत कहेछे.

६ इंद्रियो तमने जीते अने सुख मानो ते करतां तेने तमे जीतवामांज सुख, आनंद अने परमपद प्राप्त करशो.

७ रागविना संसार नथी अनेसंसारविना राग नथी!

८ युवावयनो सर्व संग परित्याग परमपदने आपेछे.

९ ते वस्तुना विचारमां पहोंचो के जे वस्तु अतिंद्रिय स्वरूप छे.

१० गुणीना गुणमां अनुरक्त थाओ.

शिक्षापाठ १०२ विविध प्रश्नो भाग. १

आजे तमने हुं केटलांक प्रश्नो निर्ग्रंथप्रवचनानुसार उत्तर आपवा माटे पूछुं छउं. कहो धर्मनी अगत्य शी छे?

उ—अनादि काळथी आत्मानी कर्मजाळ टाळवा माटे.

प्र—जीव पहेलो के कर्म?

उ—बन्ने अनादि छेज. जीव पेहेलो होय तो ए विमळ वस्तुने मळ वळगवानुं कंइ निमित्त जोइए. कर्म पहेलां

कहो तो जीव विना कर्म कर्यां कोणे ? ए न्यायथी बन्ने अनादि छेज.

प्र—जीव रुपी के अरुपी?

उ—रुपी पण खरो; अने अरुपी पण खरो.

प्र—रुपी कया न्यायथी अने अरुपी कया न्यायथी ते कहो ?

उ—देह निमित्ते रुपी अने स्वस्वरुपे अरुपी.

प्र—देह निमित्त शाथी छे ?

उ—स्वकर्मना विपाकथी.

प्र—कर्मनी मुख्य प्रकृतियो केटली छे ?

उ—आठ.

प्र—कयि कायि ?

उ—ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनिय, मोहिनी, नाम, गोत्र, आयुष्य अने अंतराय.

प्र—ए आठे कर्मनी सामान्य समज कहो ?

उ—ज्ञानावरणी, एटले आत्मानी ज्ञान संबंधीनी जे अनंतशक्ति छे तेने आच्छादन थइ जवुं, दर्शनावरणी एटले आत्मानी जे अनंत दर्शनशक्तिछे तेने आच्छादन थइ जवुं. वेदनिय एटले देहनिमित्ते शाता अशाता बे प्रकारनां वेदनिय कर्मथी अव्याबाध सुखरुप आत्मानी शक्ति रोकाइ रही छे. मोहिनिय कर्मथी आत्मचारित्र रुप शक्ति रोकाइ रही छे. नामकर्मथी अमुर्त्तिरुप, दिव्य शक्ति रोकाइ. रही छे. गोत्रकर्मथी अटल अवगाहनारुप आत्मिकशक्ति रोकाइ रही छे. आयुकर्मथी अक्षय स्थिति

गुण रोकाइ रह्यो छे. अंतराय कर्मथी अनंत दान, लाभ वीर्य, भागोपभोग शक्ति रोकाइ रही छे.



शिक्षापाठ १०३ विविधप्रश्नो भाग २.

प्र—ए कर्मो टळवाथी आत्मा क्यां जाय छे?

उ—अनंत अने शाश्वत मोक्षमां.

प्र—आ आत्मानो मोक्ष कोइवार थयो छे?

उ—ना.

प्र—कारण?

उ—मोक्ष थयेलो आत्मा कर्ममल रहित छे. एथी पुनर्जन्म एने नथी.

प्र—केवलीनां लक्षण शुं?

उ—चार घनघाती कर्मनो क्षय अने चार कर्मने पातळां पाडी जे पुरुष त्रयोदश गुणस्थानकवर्त्ति विहार करेछे.

प्र—गुणस्थानक केटलां?

उ—चौद.

प्र—तेनां नाम कहो?

उ—१ मिथ्यात्वगुणस्थानक. २ सास्वादनगुणस्थानक. ३ मिश्रगुणस्थानक. ४ अविरतिसम्यकदृष्टि गुणस्थानक. ५ देशविरतिगुणस्थानक. ६ प्रमत्तसंयत्तगुणस्थानक. ७ अप्रमत्तसंयतगुणस्थानक. ८ अपूर्वकरण गुणस्थानक. ९ अनिवृत्तिबादरगुणस्थानक. १० सूक्ष्मसंपरायगुणस्थानक. ११ उपशांतमोहगुणस्थान-

क. १२ क्षीणमोहगुणस्थानक. १३ सयोगीकेवळी गुणस्थानक १४ अयोगी केवलगुणस्थानक.

शिक्षापाठ १०४ विविध प्रश्नो भाग ३.

प्र—केवली अने तिर्थंकर ए बन्नेमां फेर शो?

उ—केवली अने तिर्थंकर शक्तिमां समान छे; परंतु तिर्थंकरे पूर्वे तिर्थंकर नामकर्म उपार्ज्युं छे; तेथी विशेषमां बार गुण अने अनेक अतिशय प्राप्त करेछे.

प्र—तिर्थंकर पर्यटन करीने शा माटे उपदेश आपेछे? ए तो निरागी छे?

उ—तिर्थंकरनामकर्म जे पूर्वे बांध्युं छे ते वेदवा माटे तेओने अवश्य तेम करवुं पडेछे.

प्र—हमणां प्रवर्त्ते छे ते शासन कोनुं छे?

उ—श्रमण भगवन् महावीरनुं.

प्र—महावीर पहेलां जैनदर्शन हतुं?

उ—हा.

प्र—ते कोणे उत्पन्न कर्युं हतुं?

उ—ते पहेलानां तिर्थंकरोए.

प्र—तेओना अने महावीरना उपदेशमां कंइ भिन्नता खरी के?

उ—तत्वस्वरूपे एकज. पात्रने लइने उपदेश होवाथी अने कंइक काळभेद होवाथी सामान्य मनुष्यने भिन्नता लागे खरी; परंतु न्यायथी जोतां ए भिन्नता नथी.

प्र—एओनो मुख्य उपदेश शुं छे?

उ—आत्माने तारो; आत्मानी अनंतशक्तियोनो प्रकाश करो. एने कर्मरूप अनंत दुःखथी मुक्त करो.

प्र—ए माटे तेओए कयां साधनो दर्शाव्यां छे?

उ—व्यवहारनयथी सत्देव, सत्धर्म अने सत्गुरुनुं स्वरूप जाणवुं; सत्देवना गुणग्राम करवा. त्रिविधे धर्म आचरवो अने निर्ग्रंथ गुरुथी धर्मनी गम्यता पामवी.

प्र—त्रिविध धर्म कयो?

उ—सम्यक्ज्ञानरूप, सम्यकदर्शनरूप अने सम्यक चारित्ररूप.

शिक्षापाठ १०५ विविध प्रश्नो भाग ४.

प्र—आवुं जैनदर्शन ज्यारे सर्वोत्तम छे; त्यारे सर्व आत्माओ एना बोधने कां मानता नथी?

उ—कर्मनी बाहुल्यताथी, मिथ्यात्वनां जामेलां दळियांथी, अने सत्समागमना अभावथी.

प्र—जैनना मुनियोना मुख्य आचाररूप शुं छे?

उ—पांच महाव्रत, दशविधि यतिधर्म, सप्तादशविधि संयम, दशविधि वैयावृत्य, नवविधि ब्रह्मचर्य, द्वादश प्रकारनो तप, क्रोधादिक चार प्रकारनो निग्रह विशेषमां ज्ञान, दर्शन चारित्र त्रणप्रकारना इत्यादिक अनेकभेदछे.

प्र—जैनमुनियोना जेवांज सन्यासियोनां पंचयामछे; अने बौधधर्मनां पांच महाशील छे. एटले ए आचारमां

तो जैनमुनियो अने सन्यासियो तेमज बौद्धमुनियो स-रखा खरा के?

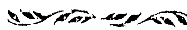
उ—नहीं.

प्र—केम नहीं?

उ—एओनां पंचयाम अने पंचमहाशील अपूर्ण छे. महाव्रतना प्रतिभेद जैनमां अति सूक्ष्मछे पेला बेना स्थूळछे.

प्र—सूक्ष्मताने माटे द्रष्टांत आपो जोइए?

उ—द्रष्टांत देखीतुंज छे. पंचयामियो कंदमूळादिक अभक्ष्य खायछे; सुखशय्यामां पोढेछे; विविध जातनां वाहनो अने पुष्पनो उपभोग लेछे; केवळ शीतळ जळथी व्यवहार छे. रात्रिये भोजन लेछे. एमां थतो असंख्याता जंतुनो विनाश, ब्रह्मचर्यनो भंग एनी सूक्ष्मता तेओना जाणवामां नथी. तेमज मांसादिक अभक्ष्य अने सुखशीलियां साधनोथी बौधमुनियो युक्तछे. जैन मुनियो तो केवळ एथी विरक्तजछे.



शिक्षापाठ १०६ विविध प्रश्नो भाग ५.

प्र—वेद अने जैन दर्शनने प्रतिपक्षता खरी के?

उ—जैनने कंइ असमजस भावे प्रतिपक्षता नथी; परंतु सत्यथी असत्य प्रतिपक्षी गणायछे; तेम जैनदर्शनथी वेदनो संबंध छे.

प्र—ए बेमां सत्यरुप तमे कोने कहोछो?

उ—पवित्र जैनदर्शनने.

प्र—वेददर्शनियो वेदने कहेछे तेनुं केम?

उ—एतो मतभेद अने जैनना तिरस्कार माटेछे; परंतु न्यायपूर्वक बन्नेनां मूळतत्वो आप जोइ जजो.

प्र—आटलुं तो मने लागेछे के महावीरादिक जिनेश्वरनुं कथन न्यायना कांटापर छे; परंतु जगतकर्त्तानी तेओ ना कहेछे; अने जगत् अनादि अनंतछे एम कहेछे ते विषे कंइ कंइ शंका थायछे के आ असंख्यात द्वीपसमुद्रयुक्त जगत् वगर बन्ये क्यांथी होय?

उ—आपने ज्यां सुधी आत्मानी अनंत शक्तिनी लेश पण दिव्य प्रसादी मळी नथी त्यांसुधी एम लागे छे; परंतु तत्वज्ञाने एम नहीं लागे. सम्मतितर्कग्रंथनो आप अनुभव करशो एटले ए शंका नीकळी जशे.

प्र—परंतु समर्थ विद्वानो पोतानी मृषा वातने पण दृष्टांतादिकथी सिद्धांतिक करी दे छे; एथी ए त्रुटी शके नहीं. पण सत्य केम कहेवाय?

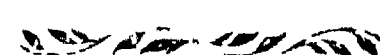
उ—पण आने कंइ मृषा कथवानुं प्रयोजन नहोतुं, अने पळभर एम मानो के एम आपणने शंका थइ के ए कथन मृषा हशे! तो पछी जगत्कर्त्ताए एवा पुरुषने जन्मपण कां आप्यो? नामबोळक पुत्रने जन्म आपवा शुं प्रयोजन हतुं! तेम वळी ए सत्पुरुषो सर्वज्ञ हता; जगत्कर्त्ता सिद्ध होत तो एम कहेवाथी तेओने कंइ हानि नहोती.



शिक्षापाठ १०७ जिनेश्वरनी वाणी.

मनहर छंद.

अनंत अनंत भाव भेदथी भरेली भली,
अनंत अनंत नय निक्षेपे व्याख्यानी छे,
सकळ जगत हितकारिणी हारिणी मोह,
तारिणी भवाब्धि मोक्षचारिणी प्रमाणी छे;
उपमा आप्यानी जेने, तमा राखवी ते व्यर्थ,
आपवाथी निज मति मपाइ में मानी छे,
अहो ! राज्यचंद्र बाल, ख्याल नथी पामता ए,
जिनेश्वर तणी वाणी, जाणी तेणे जाणी छे. १.

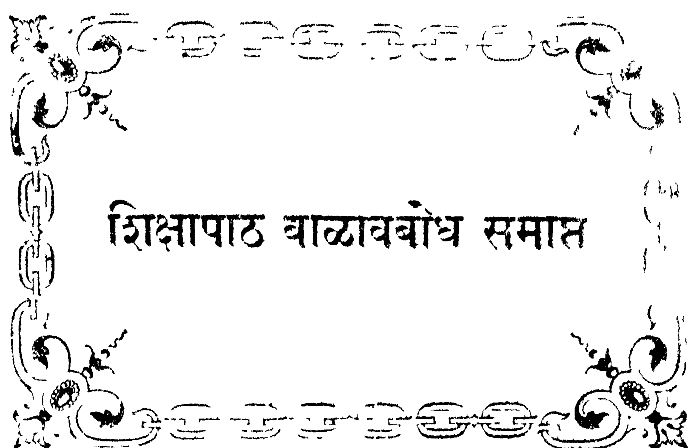


शिक्षापाठ १०८ पूर्णमालिका मंगल.

उपजाति.

तप्पोपध्याने रविरूप थाय,
ए साधिने सोम रही सुहाय;
महान ते मंगळ पंक्ति पामे;
आवे पछी ते बुधनां प्रणामे. १
निग्रंथ ज्ञाता गुरु सिद्ध दाता,
कां तो स्वयं शुक्र प्रपूर्ण ख्याता;
त्रियोग सां केवळ मंद पामे;
स्वरूप सिद्धे विचरी विरामे. २





शिक्षापाठ बाळावबोध समाप्त